श्रीहंसविजयजी जैन फ्री लायब्रेरी ग्रंथमाला नं. १८

रचयिता

श्री ललितप्रभसूरीश्वर.

पाटण चैत्य-परिपाटी.

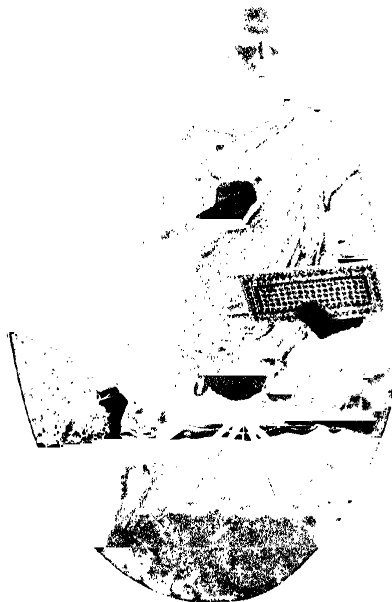
प्रकाशक

श्रीहंसविजयजी की लायब्रेरी सेक्रेटरी

अमदावाद.

मूल्य छ आना

શાંતમૂર્ત્તિ મુનિરાજ શ્રી હંસવિજયજી મહારાજ.



જન્મ:—વડોદરા.   મુનિપદ:—અંબાલા-(પંજાબ)

સં. ૧૯૧૪ અશાડ વદી ૩૦   સં. ૧૯૩૫ માહ વદી ૧૧.

ॐ

श्रीहंसविजयजी जैन फ्री लायब्रेरी ग्रंथमाला नं. २८

पाटण चैत्य-परिपाटी.

संपादक-

मुनिराज श्रीकल्याणविजयजी.

प्रकाशक-

सेक्रेटरी जेशंगभाइ छोटालाल सुतरीआ.

श्रीहंसविजयजी जैन फ्री लायब्रेरी

लुणसावाडा मोटी पोळ-अमदावाद

आवृत्ति पहेली] वी. सं. २४५२ [आ. सं. ३०

प्रत २००० वि. सं. १९८२ मूल्य छ आना



श्री सूर्यप्रकाश प्रीन्टींग प्रेस टंकशाळ-अमदावाद
पटेल मुळचंदभाई त्रीकमलाले छापी.



नंबर.	पुस्तकनुं नाम.	कींमत.
१	नीतिदर्पण	०—४-०
२,४,७,२६	प्राणीपोकार	भेट
३,५	हंसविनोद	०-१२-०
६	स्नात्रपूजा	०—०-६
८	नवतत्त्व संक्षिप्तसार	०—२-०
९	नर्मदासुंदरी कथा	भेट
१०	शीलवती कथा	,,
११,१७,२५.	तिथि तप माणिक्यमाळा	०—१-०
१२,१३	गहुंली संग्रह	०—३-०
१४,२१	श्रीनेमिनाथनी १०८ प्रकारीपूजा	०—२-०
१५.	विविधपूजा संग्रह	१—०-०
१६	गिरनार गल्प	भेट
१८	हीरप्रश्न	१—०-०
१९	अष्टापद पूजा	भेट
२०	शुकराज कथा (सं.)	,,
२२	धर्मदत्त कथा ,,	,,
२३	धर्मविधि ,,	,,
२४	सिंदूरप्रकर ,,	,,
२७	चैत्य परिपाटी यात्रा	०—१-०
२८	पाटण चैत्य परिपाटी	० – ६-०
	हीरप्रश्नावली	०—४-०
	देशाटन	०—४-०
	प्रश्नोत्तर पुष्पमाळा	०-१४-०

प्राप्तिस्थान-

श्रीहंसविजयजी जैन फ्री लायब्रेरी,

लुणसावाडा मोटी पोळ-अमदावाद.

किंचिद् वक्तव्य.

सुज्ञ वाचक बंधुओ !

प्राचीन गूजराती भाषानुं परिशीलन करनार साहित्य-प्रेमी इतिहासगवेषी सज्जनोने परम आनंद थशे के २७ नक्षत्रोनी मालासमान अथवा साधुओना २७ गुणो जेवी २७ ग्रंथ-पुष्पोनी माला[१] समर्पण कर्या पछी आजे अम्हे 'पाटण चैत्य-परिपाटी' नामनुं २८ मुं ग्रंथपुष्प आपना कर-कमलमां सादर मूकवा शक्तिमान् थया छीए.

गूजरातनी प्राचीन राजधानी अणहिल्लवाड पाटणमां रहेलां विक्रमना १७-१८मा सैकानां जिनचैत्यो-मंदिरोनी परिस्थितिनो परिचय करावनार आ 'पाटण चैत्य परिपाटि'ने अम्हे तेनी प्राचीन भाषामां विकृति कर्या विना प्रकाशित करवा बनतुं लक्ष्य आप्युं छे. छतां आ पुस्तकमां आपेली बे परिपाटियो-मांथी वि.सं. १६४८मां पूर्णिमागच्छीय ललितप्रभसूरिए रचेली परिपाटिनी प्राचीनप्रति जेवी परिशिष्टमां मूकेली (वि.

---

१ ग्रंथोनुं लिस्ट प्रथम पेजमां आप्युं छे; लायब्रेरीना परिचय माटे सं. १९६६ थी सं. १९७५ सुधीनो रिपोर्ट वांचो.

सं. १७२९मां तपागच्छीय हर्षविजयजी रचित) परिपाटिनी प्राचीन शुद्धप्रति न मळवाथी ते अंशमां तेम बनी शक्युं नथी एम अम्हारे आ स्थळे खिन्न अंतःकरणे जणाववुं जोइए. वि. सं. १९५९मां प्रवर्तकजी श्री कांतिविजयजी महाराजनी प्रेरणाथी पं. हीरालाले रचेली पाटणनां वर्तमान जिनालयोने सूचवती सं. जिनालयस्तुतिने परिशिष्टमां मूकी वर्तमान जिन-मन्दिरोनुं सूचन करवा अम्हे बनतो प्रयास कर्यो छे.

साक्षररत्न मुनिराज श्रीकल्याणविजयजी महाराजे अतिपरिश्रम लइ विचक्षणताथी गवेषणापूर्वक लखेल प्रस्तावना अने परिपाटिसारथी आ ग्रंथ विशेष विभूषित—अधिक उपयोगी थइ शक्यो छे, ए वाचको स्वयं समजी शके तेम छे. अत एव अम्हारे ए संबंधमां विशेष वक्तव्य प्रकट करवानुं अवशिष्ट रहेतुं नथी, किंतु अम्हारी कृतज्ञता दर्शाववा तेओश्रीनो अंतःकरणपूर्वक आभार मानवानुं अम्हे समुचित समजीए छीए.

आ ग्रंथना संशोधनकार्यमां पूज्य मुनिराज श्रीहंसविजयजी महाराजश्री तथा पंन्यासजी संपद्‌विजयजी महाराजश्रीनी प्रेरणाथी मुनिराज श्रीपुण्यविजयजी महाराजे तथा मुनिराज श्रीशंभुविजयजी महाराजे तथा पं. लालचन्द्र भगवान्‌दास गांधीए करेली सहायताथी अम्हे

अम्हारा कार्यमां सफल थया छीए-उपकृत थया छीए; ए प्रकट करवानी अम्हारी फरज विचारीए छीए.

अम्हारा आ ग्रंथप्रकाशन कार्यमां पाटणना झवेरी मणीलाल छगनलालनी धर्म पत्नि केसरबाइ, सुरतना शा. अनोपचंद नगीनदास स्वनाम धन्य स्वर्गवासी लाला ठाकुरदासजो स्वानगाम डोगरां (पंजाब) वाले के सुपुत्र श्रीमान् लाला प्रभदयालजी दुगड लाहोर (पंजाब) वालेने पोतानी लक्ष्मीनो सद्व्यय करी अम्हने प्रोत्साहित करवा साथे अन्य धनाढ्योने अनुकरणीय कर्तव्यमार्ग दर्शाव्यो छे, तेमनो उपकार मानवानुं अम्हे आ स्थळे भूली शकता नथी.

आ ग्रंथमां मतिमंदताथी, प्रमादथी या दृष्टिदोषथी रही गयेली स्खलनाओ सज्जनो सुधारी वांचशे अने अम्हने सूचववा तस्दी लेशे तो पुनरावृत्ति-प्रसंगे साभार सुधारवा प्रयत्न थशे.

शासनदेवनी कृपाथी विशेष प्रगति करी साहित्यसेवा-पूर्वक अधिक शासनसेवा बजाववा अम्हे भाग्यशाली थइए एवी हार्दिक भव्य भावना प्रकट करी अत्र विरमीशुं.

वीरसं. २४५२
पार्श्वप्रभु-जन्मतिथि.

प्रकाशक-
आॅ. से. 'श्रीहंसविजयजी जैन फ्री लायब्रेरी-अमदावाद.

प्रस्तावना.

स्वभावथी ज भारतवर्षना प्राचीन विद्वानोए इतिहास लखवा तरफ थोडुं लक्ष्य आपेलुं छे. अने जे कंइ लखायुं हतुं तेनो पण घणो खरो भाग राज्यविप्लवोना दुःसमयमां नाश पामी गयो छे, मात्र व्याख्यानिक साहित्यमां उपयोगी थतो केटलोक जैन ऐतिहासिक साहित्यनो अंश व्याख्यानरसिक जैन साधुओना प्रतापे बचवा पाम्यो छे; पण तेमां इतिहास करतां उपदेशतत्त्वने मुख्य स्थान आपेलुं होवाथी तेवा चरित्र प्रबन्धादि ग्रन्थो पैकीनो घणो भाग औपदेशिक साहित्य ज गणी शकाय, मात्र केटलाक रासाओ अने प्रबन्धो उपरांत शिलालेखो प्रशस्तिओ चैत्यपरिवाडीओ तथा तीर्थमालाओ ज आधुनिक दृष्टिए प्राचीन ऐतिहासिक साहित्यमां गणवा योग्य छे.

ऐतिहासिक साहित्यमां चैत्यपरिवाडीओनुं स्थान.

जो के चैत्यपरिवाडी वा तीर्थमालाओ तरफ घणा थोडा विद्वानोनुं लक्ष्य गयुं छे अने ऐतिहासिक दृष्टिए तेनी खरी कीमत आंकनारा साक्षरो तो तेथी ये थोडी संख्यामां नीकळशे; एटलुं छतां पण इतिहासनी दृष्टिए चैत्यपरिवाडी ए घणुं कीमती साहित्य छे, एना उंडाणमां रहेला तात्कालिक धार्मिक इतिहासनो प्रकाश, धर्मनी रुचि तथा प्रवृत्तिनुं दर्शन अने गृहस्थोनी समृद्ध दशानुं चित्र इत्यादि अनेक

इतिहासना कीमती अंशो चैत्यपरिपाटिओना गर्भमांथी जन्मे छे के जेनी कींमत थाय तेम नथी.

चैत्यपरिवाडीओनो उत्पत्तिकाल.

चैत्यपरिवाडीओ क्यारथी रचावा मांडी तेनो निश्चित निर्णय आपी शकाय तेम नथी. चैत्यपरिवाडीओ, तीर्थमालाओ अथवा एवाज अर्थने जणावनारा रासाओ घणा जुना वखतथी लखाता आव्या छे एमां शक नथी. पण एवा भाषासाहित्यनी उत्पत्तिना प्रारंभकालनो निर्णय हजी अंधारामां छे, कारण के आ विषयमां आज पर्यन्त कोइ पण विद्वाने ऊहापोह तक कर्यो नथी, छतां जैन साहित्यना अवलोकनथी एटलुं तो निश्चित कही शकाय के जैनोमां चैत्य वा तीर्थयात्राओ करवानो अने तेनां वर्णनो लखवानो रीवाज घणो ज प्राचीन छे. तीर्थयात्राओ करवानो रिवाज विक्रमनी पूर्वे चोथी सदीमां प्रचलित हतो एम इतिहास जणावे छे, ज्यारे तेनां वर्णनो लखवानी शरुआत पण विक्रमनी पहेली वा बीजी सदी पछीनी तो न ज होइ शके; ए विषयनो विशेष खुलासो नीचेना विवेचनथी थइ शकशे—

जैन साहित्यमां सर्वथी प्राचीन सूत्र आचारांगनी निर्युक्तिमां तात्कालिक केटलांक जैन तीर्थोनो नोंध अने तेने नमस्कार करवामां आव्यो छे.[1] निशीथचूर्णिमां धर्मचक्र,

---

१ "अट्ठावय उज्जिंते गयग्गपए य धम्मचक्के य ।
पासरहावत्तनगं चमरुप्पायं च वन्दामि ॥"

—" गजाग्रपदे-दशार्णकूटवर्त्तिनि । तथा तक्षशिलायां धर्मचक्रे तथा

देवनिर्मित स्तूप, जीवितस्वामि प्रतिमा, कल्याणभूमि आदि तीर्थोनी नोंध करवामां आवी छे.[1]

छेदसूत्रोना भाष्य अने टीकाकारो लखे छे के अष्टमी चतुर्दशी आदि पर्व दिवसोमां सर्व जैन देहरासरोनी वंदना करवी जोइये, भले ते चैत्य संघनुं होय के अमुक गच्छनी मालिकीनुं होय तो पण तेनी यात्रा करवी, वखत पहोंचतो होय तो सर्व ठेकाणे संपूर्ण चैत्यवंदन-विधि करवी जोइये अने वखत न पहोंचतो होय तो अेक अेक स्तुति वा नमस्कार ज करवो पण भावना सर्व चैत्योनी यात्रानुं करवी.[2]

व्यवहार सूत्रना भाष्य अने चूर्णिमां लख्युं छे के[3]

अहिच्छत्रायां पार्श्वनाथस्य धरणेन्द्रमहिमास्थाने ।"

—आचारांगनिर्युक्ति पत्र ४१८ ।

१ "उत्तरावहे धम्मचक्कं, मथुराए देवणिम्मिओ थूभो, कोसलाए जियंतसामिपडिमा, तित्थंकराण वा जम्मभूमिओ ।

—निशीथचूर्णि पत्र २४३—२ ।

२ निस्सकडमनिस्सकडे चेइए सव्वहिं थुई तिन्नि ।
वेलं व चेइआणि व नाउं इक्किक्किआ वा वि ॥

—भाष्य

३ अट्ठमी-चउद्दसीसुं चेइय सव्वाणि साहुणो सव्वे ।
वन्देयव्वा नियमा अवसेस-तिहीसु जहसत्ति ॥
एएसु चेव अट्ठमीमादीसु चेइयाइं साहुणो वा जं अण्णाए वसहीए ठिआ ते न वंदंति मासलहु ।

—व्यवहारभाष्य अने चूर्णि.

आठम चौदश आदि पर्व-तिथिदिनोमां गामनां सर्व देह-राओमां रहेली जिनप्रतिमाओ अने पोताना तथा बीजा उपाश्रयोमां रहेला सर्व साधुओने पर्यायलघु साधुओओ वंदन करवुं जोइये, जो न करे तो ते साधु प्रायश्चित्तनो भागी थाय.

महानिशीथ सूत्रमांथी पण चैत्य तीर्थ अने तीर्थोमां भराता मेळाओनी सूचना मळे छे.[1] आ सर्व जोतां अेटलुं तो निश्चित छे के जैनोमां तीर्थयात्रा अने प्रतिमापूजानो रिवाज घणो ज जूनो पुराणो छे, तीर्थ तरीके प्रसिद्ध थयेल स्थानोमां भाविक जैनो घणा दूर दूरना देशो थकी संघो लेइ जता अने तीर्थाटन करी पोतानी धार्मिक श्रद्धाने सफळ करता, पोताना गाम नगरोनां चैत्योने ते हमेशां भेटता, चैत्यो अधिक वा समय आछो मळतां नगरनां सर्व चैत्योनी यात्रा नित्य न थती तो छेवटे आठम चउदश जेवा खास धार्मिक दिवसोमां तो पूर्वोक्त यात्रा अवश्य करता ज, कालान्तरे आ प्रवृत्तिमां पण मंदता न पेसी जाय अेटला माटे श्रुतधर पूज्य आचार्योअे नियम घड्यो के आठम चउदशे तो सर्व चैत्योनी वंदना करवी ज, अने जो साधु के व्रती गृहस्थ आ नियम प्रमाणे न

१ अहन्नया गोयमा ते साहुणो तं आयरियं भणंति जहा णं जइ भयवं तुमं आणावेहि ता णं अम्हेहि तित्थयत्तं करि(र)या चंदप्पहसामियं वंदि(द)या धम्मचक्कं गंतुणमागच्छामो ।

—महानिशीथ ५-४३५ ।

वर्तशे ता ते दंडनो भागी थशे. आ प्रमाणे नगर वा गामनां सर्व चैत्योनी यात्रा ते 'चेइअपरिवाडीजत्ता' (चैत्यपरिपाटियात्रा) कहेवाती. अने ओ प्रवृति विशेष प्रचलित थतां उतावळने लीधे 'यात्रा' शब्द निकळी जइने 'चैत्यपरिपाटि' शब्द ज प्राथमिक मूळ अर्थने जणाववामां रूढ थइ गयो. वखत जतां चैत्यपरिपाटी—चैत्यपरिवाडी—चैत्यप्रवाडी – चैत्रप्रवाडी इत्यादि अनेक प्रकारना 'चेइअपरिवाडीजत्ता' ना स्थाने संस्कृत, प्राकृत अने अपभ्रंश शब्दो रूढ थया जे आज पर्यन्त ते अर्थने जणावी रह्या छे.

उपरना विवेचनथी ओ वात स्पष्ट थइ के 'चैत्यपरिवाडी' ओ नाम ओक प्रकारनी यात्रानुं छे अने उपचारथी तेवी यात्रानु वर्णन के विवेचन करनार प्रबन्ध वा स्तवनो पण 'चैत्यपरिवाडी' ना नामथी ओळखावा लाग्यां के जे बनाव साहित्यमार्गमां एक स्वाभाविक घटना छे

तीर्थमाला अने चैत्यपरिवाडियोनो वास्तविक भेद.

यद्यपि तीर्थमाळा वा तीर्थमालास्तवनो अने चैत्यपरिवाडी वा चैत्यपरिवाडी स्तवनोमां सामान्य रीते भेद नथी गणवामां आवतो तथापि तेनां नाम अने लक्षणो तपासतां ते बन्ने प्रकारनी कृतिनो वास्तविक भेद खुल्लो जणाइ आवे छे.

तीर्थमाला स्तवनोनुं लक्षण ए होय छे के पोते भेटेलां वा सांभळेलां के शास्त्रोमां वर्णवेलां नामी नामी तीर्थोनां चैत्य वा प्रतिमाओनुं वर्णन, तेनो साचो वा कल्पित इतिहास तेनो महिमा अने ते संबंधी बीजी बाबतोनुं वर्णन

करवा पूर्वक तेनी स्तुति या प्रशंसा करवी. आचारांगनिर्युक्ति अने निशीथचूर्णिमां थयेली तीर्थोनी नोंध ते आजकालनी तीर्थमालाओ अने तीर्थकल्पोनुं मूल बीजक समजवुं जोइये. सिद्धसेनसूरिनुं सकलतीर्थ स्तोत्र[1], महेन्द्रसूरिनुं तीर्थमालास्तवन,[2] जिनप्रभसूरिनी शाश्वताशाश्वतचैत्यमाला,[3] विविधतीर्थकल्प[4] विगेरे संस्कृत प्राकृत अप-

१ आ संस्कृत स्तोत्र पाटणमां संघवीना शेरीना ताडपत्रोना पुस्तक भंडारमां छे. एना कर्त्ता सिद्धसेन सूरि क्यारे थया तेनो निश्चय नथी, छतां संभव प्रमाणे तेरमी सदीना पूर्वार्धमां थइ गयेला सिद्धसेन ज एना कर्त्ता होवा जोइये.

२ आ प्राकृत स्तवन पण तेरमी सदीमां ज बनेलुं संभवे छे. महेन्द्रसूरि नामना बे आचार्य थया छे–१ ला पूर्णतल्लगच्छीय प्रसिद्ध आचार्य हेमचंद्रजीना शिष्य जे १२१४ मां विद्यमान हता. २ जा नाणकीयगच्छीय जे सं. १२२२ मां विद्यमान हता, आ स्तवनना कर्त्ता आ बेमांथी कया तेनो निश्चय थतो नथी.

३ आ चैत्यमाला अपभ्रंश भाषामां छे, एना कर्त्ता जिनप्रभसूरि जे १४ मी सदीमां थइ गया छे, जेमणे अनेक चरित्रो अने रासो अपभ्रंशमां लखेला छे, जेटली अपभ्रंशनी कविता पाटणना भंडारोमां एमनी मळे छे, तेटली बीजा कोइ पण कविनी नथी मळती.

४ संस्कृत अने प्राकृतमां बनेला आ तीर्थकल्पो प्रसिद्ध छे. एना कर्त्ता जिनप्रभसूरि खरतरगच्छनी लघुशाखामां थइ गया छे. तेमणे आ तीर्थकल्पसंग्रह विक्रमनी १४ मी सदीना उत्तरार्धमां बनाव्यो छे.

ग्रंथ अने लोकभाषामां लखायेला उपर्युक्त लक्षणवाला स्तवनोनी कोटिना अनेक प्रबन्धो आजे दृष्टिगोचर थाय छे.

चैत्यपरिपाटी स्तवनोनुं लक्षण ए थया करे छे के कोइ पण गाम के नगरनां यात्राना समयमां क्रमवार आवतां देहरासरोनां नाम, ते ते वासोनां नाम, तेमां रहेली जिनप्रतिमाओनी संख्या विगेरे जणाववा पूर्वक महिमानुं वर्णन करवुं अने तेनी स्तुति करवी. विजयसेनसूरिनो रेवंतगिरिरासो[1], हेमहंसगणिनी गिरिनारचैत्यपरिवाडी,[2] सिद्धपुरचैत्यपरिवाडी,[3] मगागणिनी जालोरचैत्यपरिवाडी[4] विगेरे संख्याबन्ध चैत्यपरिवाडिओ उपर जणावेल लक्षणवाली आजे विद्यमानता धरावे

१ आ रासो प्राचीन गूजराती भाषामां लखायेलो छे, एना कर्त्ता विजयसेनसूरि नागेन्द्रगच्छमां प्रसिद्ध मंत्री वस्तुपालना समयमां अर्थात् विक्रमनी तेरमी सदीना उत्तरार्धमां थइ गया छे. वस्तुपालना संघ साथे गिरनारनी यात्रार्थे गया ते समये तेमणे आ रास बनाव्यो हतो.

२ हेमहंसगणि प्रसिद्ध आचार्य मुनिसुंदरसूरिना शिष्य हता, तेओ सोळमी सदीना प्रथम चरणमां विद्यमान हता, आरंभसिध्धिवार्तिक, न्यायमञ्जूषा विगेरे अनेक विद्वत्तापूर्ण ग्रन्थो एमणे बनाव्या छे. आ चैत्यपरिवाडी तेमणे क्यारे बनावी ते जणाव्युं नथी. पण सोळमी सदीनी शरुआतमां ज बनावी होवानो संभव छे.

३ आ चैत्यपरिवाडीना कर्त्ता के समयनो पत्तो लाग्यो नथी, परिवाडी जूनी होवानो संभव छे.

४ आ चैत्यपरिवाडी सं. १६५१ ना भाद्रवा वदि ३ ने

छे[1] प्रस्तुत 'पाटणचैत्यपरिपाटी' पण ए ज बीजी कोटिनो निबन्ध छे.

आटला विवेचन उपरथी समजायुं हशे के तीर्थचैत्ययात्राओ अने नगर चैत्ययात्राओ करवानो रिवाज जैनोमां घणाज प्राचीन कालथी चाल्यो आवे छे. आ रिवाजोनी प्राचीनता ओच्छामां ओच्छी बे हजार वर्षनी होवी जोइये एम पूर्वे सूचवेल शास्त्रवाक्योथी सिद्ध थाय छे, अने ए उपरथी तीर्थमालास्तवना अने चैत्यपरिपाटीस्तवनो लखवानी रूढि पण घणी प्राचीन होवी जोइये ए वात सहेजे समजी शकाय तेवी छे; छतां पण एटलुं तो सखेद जणाववुं पडे छे के आ प्रवृत्तिनी प्राचीनताना प्रमाणमां तेना वर्णनग्रन्थो, तीर्थमालास्तवनो अने चैत्यपरिपाटी-स्तवनो तेटलां प्राचीन आजे मलतां नथी.



दिने जालोरमां बनी हती, एना कर्त्ता नगा वा नगर्षिगणि आचार्य श्रीहीरविजयसूरिना शिष्य कुशलवर्धनगणिना शिष्य हता.

1 स्व० आचार्य श्रीविजयधर्मसूरिजीए संपादन करीने भावनगरनी श्रीयशोविजय जैन ग्रन्थमाला द्वारा 'प्राचीन तीर्थमाला संग्रह' नो प्रथम भाग बहार पाड्यो छे. जेमां जुदा जुदा कविओनी करेली चैत्यपरिवाडिओ, तीर्थमालाओ अने तीर्थस्तवनो मळीने २५ प्रबन्धो छे. ए सिवाय पण संख्याबंध तीर्थमालाओ अने चैत्यपरिवाडीओ जैन भंडारोमां अस्तित्व धरावे छे.

पाटण.



प्रस्तुत परिवाडी जेना नाम साथे बंधायेली छे, ते पाटण नगरनो आ स्थले संक्षेपमां परिचय आपवो उपयोगी गणाशे.

'पाटण' ए गुजरातदेशनी राजधानी-हिन्दुस्थानना प्राचीन अने प्रसिद्ध शहेरोमांनुं एक छे, एनुं वास्तुस्थापन जैन मंत्रोथी थयुं हतुं, एनो वसावनार 'वनराज' नामनो चावडावंशनो एक बाहोश शूरवीर राजपुत्र हतो, ते नागेन्द्रगच्छना जैन आचार्य शीलगुणसूरिनो परम भक्त जैन उपासक हतो[1].

वनराज पोते, तेना राजकारभारियोनुं मंडल अने तेनी प्रजानो अधिक भाग जैनधर्मी होइ पाटण शहेर ए ते वखतमां गुजरातना जैनोना धार्मिक साम्राज्यनी राजधानी बनी

---

१ वनराजने बाल्यकालमां ज उक्त शीलगुणसूरिए आसरो दीधो हतो, तेथी कृतज्ञ प्रकृतिना वनराजे पाछळथी पोते राजा थतां जैनधर्मनी कीमती सेवा बजावी हती, एटलुं ज नाहे बल्के पाटणमां नामी जैन मंदिर बनावरावी पोतानी कीर्त्तिने विशेष अमर करी हती. वनराजनुं बनावेलुं आ 'वनराजविहार' नामनुं चैत्य सं. १३०१ मां विद्यमान हतुं ए वात नीचेना शिलालेख उपरथी जणाशे:—

"संवत् १३०१ वर्षे वैशाख शुदि ९ शुक्रे पूर्वमण्डलिवास्तव्य मोढज्ञातीय नागेन्द्रा........सुत श्रे० जाल्हणपुत्रेण श्रे० राजकुक्षि-

गयुं हतुं. जैनोमां चालता ते समयना सर्वे गच्छ अने मतोनुं अस्तित्व पाटणमां जणाइ आवतुं हतुं.धर्मवीर अने युद्धवीर जैनोनी व्यवस्था अने आबादीथी पाटण एक वखत पूरी जाहोजलाली भोगवतुं थयुं हतुं. विक्रम संवत् ८०२ ना वर्षमां पहेल प्रथम 'अणहिलवाड' वा 'अणहिलपाटण' ए नामथी पाटण वस्युं,अने दिवसे दिवसे उन्नति करतुं चावडावंशना राजाओनी राजधानी तरीके प्रसिद्ध थयुं.

चावडा वंशना कुल ७ सात राजाओए [1] राज्य कर्या बाद पाटणनी राज्य लगाम चौलुक्य वंशना राजाओना हाथमां गई, आ वखते पण पाटण पूरी जाहोजलालीमां हतुं,

---

समुद्रवेन ठ० आसाकेन संसारार..........योपार्जितवित्तेन अस्मिन् महाराजश्रीवनराजाविहारे निजकीर्तिवल्लीविस्तार.........विस्तारितः। तथा च ठ० आसाकस्य मूर्त्तिरियं सुतठ० आरिसिंहेन कारिता प्रतिष्ठिता.........सम्बन्ध गच्छे पंचासरातीर्थे श्रीशीलगुणसूरिसंताने शिष्य श्री......देवचन्द्रसूरिभिः ॥ मंगलं महाश्रीः ॥

(पाटणमां पंचासरापार्श्वनाथना मंदिरमां रहेली 'वनराज'नी मूर्त्ति पासेनी ठ० आसाकनो मूर्त्तिनो शिलालेख)

१ पाटणनी राजगादी उपर नीचेना आठ चावडावंशी राजाओ थया छेः—

१ वनराज २ योगराज ३ रत्नादित्य ४ वैरिसिंह ५ क्षेमराज ६ चामुंडराज ७ राहड ८ सामंतसिंह ।

पटलुंज नहि पण पाटणना चौलुक्य राजाओए आसपासना देशो जीती पोतानी राजसत्तानो विशेष वधारो करवा मांड्यो जे कुमारपाल सुधी चालु रह्यो,कुमारपाल जे चुस्त जैनधर्मी हतो, तेणे पोते पण अनेक लडाइओ करी उत्तर मारवाड, कोंकण विगेरे अनेक देशोना राजाओने जीतीने गुजरातना महाराजाधिराज तरीके पोतानी सत्ता सर्वोत्कृष्ट बनावी हती, परंतु गुजरातनी उन्नतिनी आ छेल्ली हद हती, ए पछीना गुजरातना राजाओए पोतानी सत्ता वधारी होय एम इतिहास जणावतो नथी. आ तो राज्यसत्तानी वात थइ पण गुजरातमां अने खास करीने पाटणमां जैनधर्मनी प्रबलता पण ओछी न हती, चावडावंशना तमाम राजाओ जैनधर्मना पालनारा नहि तो उपासक तो अवश्य हता, मंत्रिमंडल अने बीजा राजकर्मचारियो पण प्रायः जैनो होइ प्रजानो अन्यधर्मी वर्ग पण जैनधर्मने पूज्य दृष्टिथी जोतो, आ स्थिति चौलुक्य पहेला भीम सुधी चालती रही, भीमना वखतमां तेना वीर दंडनायक विमल अने राजा वच्चे वैमनस्य उत्पन्न थतां पाटणनी जैन प्रजाने कंइक धक्को पहोंच्यो होय तो बनवा जोग छे. एम कहेवाय छे के दंडनायक विमलने विषे राजा भीमना मनमां कंइक विपरीत भाव उत्पन्न थयो, चतुर अने मानी विमलने राजाना मननी स्थितिनुं ज्ञान थतां दिलगीरी अने दयानुं पात्र न बनतां ते गुप्तपणे पाटणनो त्याग करी चाली निकल्यो, अने तेणे आबुना दक्षिण कटिभागमां वसेली चंद्रावती नगरीमां आवीने निवास कर्यो, चंद्रावतीनो

प्रथमनो राजा [१] विमलना आगमनथी डरी जइ भागी जतां विमल त्यांनो राजा थइने रह्यो. [२]

राजानी [३]नाराजगीथी जैन समाजनो मान्य पुरुष विमल पाटण छोडीने चाल्यो गयो, ए वात जाहेर थतां पाटणनो

---

१ आ राजानुं नाम क्यांइ जणाव्युं नथी, कोइ परमार वंशीय राजा हतो, धारनो धंधुक तो न होय ?

२ विमल चन्द्रावतीनो राजा थयानी हकीकत विमल प्रबन्धमां जणावेली छे.

३ कुमारपालना समकालीन हरिभद्रसूरि मन्त्रीश्वर पृथ्वीपालनी प्रार्थनाथी रचेल चन्द्रप्रभस्वामिचरित(प्रा.) नी प्रशस्तिमां जणावे छे के विमल दण्डनायक भीमदेव राजाना वचनथी सकल शत्रुना वैभवने ग्रहण करी प्रभुप्रसादथी प्राप्त थयेल वड्डावली (चन्द्रावती) विषयने भोगवतो हतो. जुओ ते उल्लेखः—

" सिरिभीमएवरज्जे नेढो त्ति महामई पढमो ॥
बीओ उ सरयससहरनिम्मलगुणरयणमंदिरमुदारं ।
निययप्पहापआरियतरणी विमलो त्ति दंडवई ॥
अह भीमएवनरवइवयणेण गहीयसयलरिउविहवो ।
वड्डावल्लीविसयं स पहुवलद्धं ति भुंजंतो ॥ "

—(वि. सं. १२२३ मां लखायेली पाटणना संघवीना पाडाना जैनभंडारनी ताडपत्र प्रति). आ अभिप्रायने अनुसरता मलाधरी

जैन संघ राजा उपर भारे गुस्से थयो, एटलुं ज नहिं, पण सेंकडो जैन कुटुंबो विमलनुं अनुसरण करी पाटण छोडी चंद्रावतीमां जइने वस्यां. जो उपरनी हकीकत साचा इतिहासमां खपती होय तो कहेवुं जोइये के पहेला भीमदेवना वखतमां पाटणनी जैन वसतिमां कंइक भंगाण पड्युं हशे ज, परंतु आ बनाव साचो होय तो पण तेनी विशेष स्थायी असर थइ जणाती नथी, कारण के ते पछीना चौलुक्य राजा कर्णदेव, सिद्धराज, कुमारपाळ विगेरेना राज्यकालमां पण लगभग तमाम राज्य-कारभार जैन मंत्रिओना हाथमां ज हतो, एटलुं ज नहिं पण सिद्धराज के जे शैवधर्मी हतो छतां जैनधर्म अने जैनधर्मीओने घणुं ज मान देनारो अने जैन विद्वानोने पूजनारो हतो ए उपरथी समजाय छे के पाटणमां जैनधर्मनी प्रबलता घणा लांबा काल सुधी टकी रही हती. कहेवाय छे के एक समये प्रसिद्ध आचार्य श्रीहेमचन्द्रसूरिनुं पाटणमां आगमन थयुं त्यारे १८०० अढारसो कोटिध्वज शेठिआओ

राजशेखरसूरि वि. सं. १४०५मां रचेला प्रबन्धकोषमां—वस्तुपालप्रबन्धमां—'प्राग्वाटवंशे श्रीविमलो दण्डनायकोऽभवत् । स चिरमर्बुदाधिपत्यमभुनक् गूर्जरेश्वरप्रसत्तेः' अर्थात् 'गूर्जरेश्वर (भीमदेव) नी प्रसन्नताथी विमले लांबा समय सूधी आबू उपर आधिपत्य भोगव्युं हतुं.' एम जणावे छे.

आ उल्लेख जोतां विमलने भीमदेव साथे वैमनस्य थवाना वृतान्त माटे सन्देह राखवो पडे छे. —ला. भ. गांधी]

तेमना नगरप्रवेश महोत्सवमां एकठा थया हता.[1] आ एकज दाखला उपरथी पाटणना जैनोनी संख्यानो अने तेमनी समृद्धिनो ख्याल आवी जशे. कुमारपाल पछी पाटणनी राज्यगादीए आवेला अजयपालना वखतथी पाटणना जैनोनी अने साथे ज राज्यनी अवनतिनो पायो नंखाणो. अजयपाले घणा खरा जुना जैन मंत्रिओने पदभ्रष्ट कर्या अने केटलाकोने भयंकर शिक्षाओ करी. खास करीने कुमारपालना मरजीदान मनुष्योने अजयपाले भारे त्रास आप्यो,[2] कुमारपालनां पुण्यकार्योनो तेणे बन्युं तेटलो नाश कर्यो, पण आवां अधम कामो घणा काल सुधी करवाने ते जन्म्यो न हतो, राज्याभिषेकने त्रीजे ज वर्षे अजयपालनुं तेना एक नोकरना हाथे खून थयुं अने त्यार पछी धार्मिक विप्लव बंध थयो, राज्यकारभार पण पाछो नियमित थइ गयो पण सिद्धराज अने कुमारपाले जे गुजरातना राज्यनी हद वधारी चौलुक्य राजाओनी सार्वभौम सत्ता स्थापन करी हती, ते लांबो काल टकी शकी नहिं. जे क्रमथी पाटण अने तेना राजाओनी सत्ता दिवसे दिवसे वधी हती ते ज क्रमथी घटवा लागी, अजयपालना वखतथी

---

१ आ हकीकत हिन्दी कुमारपाल चरितनी प्रस्तावनामां जोवी.

२ हेमचन्द्रसूरिना शिष्य रामचन्द्र, मंत्री कपर्दी आदि हेमचन्द्र अने कुमारपालना मानीता पुरुषोने अजयपाले केवी भयंकर शिक्षाओ करी हती ते प्रबन्ध चिन्तामणिमां चौलुक्य राजाओनो इतिहास जोवाथी जणाशे.

पाटणना राज्यकारभारमांथी जैन गृहस्थोनो हाथ निकळवा लाग्यो हतो, प्रसिद्ध पोरवाल वीर जैन मंत्री वस्तुपाल अने तेजपालना समयमां थोडाक वखतने माटे गुजरातनी झांखी पडेली कीर्ति पाछी उज्ज्वल बनी हती. जो के अजयपालना वखतथी गुजरातनी राज्यसत्ता मंद थवा मांडी हती तो पण वाघेला चौलुक्य सारंगदेव पर्यन्त गुजरात देश अने तेना राजाओए पोतानुं महत्त्व ठीक ठीक टकावी राख्युं हतुं, पण छेल्ला राजा करणवाघेलाना समयमां पाटण अने गुजरातना उपर हमेशाने माटे पराधीनतानो दंड पड्यो. [१]

वनराजथी उगेल, सिद्धराज अने कुमारपालथी उन्नतिनी छेल्ली हदे पहोंचेल पाटणनी कीर्तिवल्ली करण वाघेलाना वखतमां सदाकालने माटे करमाई गई.

आ प्रमाणे वनराज, भीमदेव, सिद्धराज, कुमारपाल जेवा युद्धवीरोना पराक्रमोथी, जांबक, चंपक, विमल, शांतु,

---

१ पाटणनी राजगादी उपर चौलुक्य अने गुजर वंशनी वाघेला शाखाना राजाओ नीचेना क्रम प्रमाणे थया छेः—चौलुक्य राजाओः—१ मूलराज (१) २ चामुंडराज ३ वल्लभराज ४ दुर्लभराज ५ भीमदेव (१) ६ कर्णदेव (१) ७ जयसिंहदेव (सिद्धराज) ८ कुमारपाल ९ अजयपाल १० मूलराज (२) ११ भीमदेव (२) १२ त्रिभुवनपाल ।

वाघेला राजाओ—१ धवल २ अर्णोराज ३ लवणप्रसाद ४ वीरधवल ५ वीसलदेव ६ अर्जुनदेव ७ सारंगदेव ८ कर्णदेव ।

उदयन, बाहड, संपत्कर, वस्तुपाल, तेजपाल जेवा
मुत्सद्दीओनी कार्यकुशलताथी उन्नतिना शिखरे चढेलुं
-गुजरातनुं राज्य कर्णवाघेलानी लंपटता अने माध
केशव जेवा झेरीली प्रकृतिना नागर कारभारियोना
एकवेळा स्वर्गीय नगर बनेलुं पाटण संवत् १३५६ ना
अलाउद्दीनना सेनापति मलिक काफुरना हाथे जमी
थयुं, एक वेळा जे स्थले हजारो कोटिध्वज श्रेष्ठियोनी हवे
शोभी रही हती, ते प्राचीन पाटणना स्थानमां आ
बे कुआ वावडी के बे च्यार प्राचीन मकानोना खंड
सिवाय जंगली झाड अने घास उगेलां नजरे पडे
स्थान लाखो मनुष्योनी वसतिथी रळीयामणुं हतुं ते
सियाळ अने वरु जेवां जंगली जानवरोनी लीलाभूमि
रह्युं छे !



नवुं पाटण.



मुसलमानोना हाथे नष्ट भ्रष्ट थयेलुं पाटण
क्यारे आबाद थयुं तेनो चोक्कस समय क्यांइ मळतो

१ प्राचीन पाटणना अवशेषो तरीके आजे 'राणकी
अने 'दामोदर कुओ' ए बे मुख्य गणाय छे, एना संबंधमां
मां कहेवत छे के—'राणकी वाव ने दामोदर कुओ,
नाहि ते जीवतो मूओ.' ए सिवाय एक मोटुं मकाननुं

छतां केटलाक बनावो उपरथी एम कही शकाय के वर्तमान पाटण विक्रम संवत् १३६० अने १३७९नी वच्चे वसेलुं होवुं जोइये. पाटणनी 'जैन मंदिरावली'नी प्रस्तावनामां तेना लेखके जणावेलुं छे के—"अल्लाउद्दीनना वखतमां प्राचीन पाटणनो नाश थतां सं० १४२५ ना वर्षमां आ वर्तमान पाटण फरिथी वस्युं छे."

पण आमां जणावेली साल खरी होवामां शंका छे. संवत् १३५६ मां नाश पामेलुं नगर बे पांच वर्षमां पाछुं न वसतां लगभग अर्धसदीथी पण अधिक समय पछी वसे ए वात साची मानवामां जरा संदेह रहे छे. जो प्राचीन नगर सर्वथा नाश पामी गयुं होय अने नवेसर वसवा जेवी स्थिति उभी थइ होय त्यारे तो ते तरत ज वसवुं जोइये, अने जो मुसलमानोना हाथे पटलुं बधुं नुकशान न थयुं होय के जेथी फरिने शहेर नवुं वसाववुं पडे तो त्यार बाद साठ सित्तेर वर्षमां ज एवुं शुं कारण आवी पड्युं हशे के मुसलमानोना हाथे जोखमायेल पाटणमां ६० वर्ष पर्यन्त रहीने फरिथी नगरिकोने नवुं पाटण वसाववुं पड्युं होय?

अमारा अनुमान प्रमाणे तो आधुनिक पाटण सं० १४२५ मां नहिं पण १३७० नी आसपासमां वसेल होवुं जोइये,[1] कारण के पाटण भंगना वखतथी पाटणमां बनतां जैनमंदिरो

ऊंची चट्टान पर आवेलुं छे, लोको तेने 'राजमहेल' कहे छे. बीजी पण प्रचुरण निशानीओ त्यां सेंकडो मळे छे.

१ वि. सं. १३७१मां शत्रुंजयतीर्थना उद्धारक संघपति दसल अने समरा साह पाटणमां वसता हता, एटले ते समये पाटण हयात ज हतुं. —ला. भ. गांधी.

अने प्रतिमानी प्रतिष्ठाओ एकदम बंध पडे छे अने ते सं० १३७९ ना वर्षमां पाछी शरु थती देखा दे छे अने ते पछीना वखतमां ते प्रवृत्ति दिवसे दिवसे वधती जती जणाय छे, संवत् १३७९ अने १३८१ नी सालमां खरतरगच्छ संबन्धी शान्तिनाथ विधिचैत्यमां जिनकुशलसूरिना हाथे अनेक जिनबिम्बो अने आचार्यमूर्त्तिनी प्रतिष्ठाओ थाय छे, आ शांतिनाथ विधिचैत्य आजे पण खराखोटडीना पाडामां सुधरेल दशामां विद्यमान छे. संवत् १४१७, १४२० अने १४२२ ना वर्षमां पण पाटणमां प्रतिष्ठाओ थयाना लेखो त्यांनी मूर्त्तिओ उपरथी मळी आवे छे, तेथी आ वात निश्चित थाय छे के प्राचीन पाटणना भंग पछी संवत् १३७९ ना वर्ष पहेलाना कोइ पण वर्षमां आधुनिक पाटण वसी गयुं होवुं जोइये.

उपर प्रमाणे चौदमी सदीना छेल्ला चरणमां फरिथी वसेल नूतन पाटणे पण दिवसे दिवसे उन्नति करवा मांडी अने वखत जतां ते पोतानी प्राचीन कीर्तिने जाळवी राखवाने योग्य थइ गयुं, अल्लाउद्दीनना जुलमथी त्रास पामेला, मुसलमानोना नामथी पण भडकता हिन्दुओनां हृदयो तुगलक फिरोजशाहनी सरदारीना वखतमां कंइक शांत पड्यां, मुसलमानोना भयनी शंकाथी नवीन देहरासरो बनाववामां संकोचाता हिन्दुओ फिरोजशाहना वखतमां निर्भय थया अने फरिथी नवीन चैत्यो बनाववामां प्रवृत्त थया, आपणा आ पाटणमां पण आ वखतथी मांडीनेज नवां देहरां अने नवी प्रतिमाओ विशेष प्रमाणमां बनवा लागी. जे प्रवृत्ति

लगभग सत्तरमी सदीना छेडा पर्यन्त चालु रही, आ लगभग त्रणसो वर्ष जेटला लांबा गाळामां प्रस्तुत नवीन पाटणमां सेंकडो देहरां अने हजारो प्रतिमाओ बनी चुकी हती, लीलुं झाड प्रचण्ड पवनना झपाटाथी पडी जतां तेना ज मूळमांथी फूटेला फणगा कालान्तरे मूलवृक्षनुं रूप धारण करे छे, ते ज रीते प्राचीन पाटण अलाउद्दीनना अन्यायनो भोग थइ पडतां तेना ज सीमाप्रदेशमां नवुं वसेलुं पाटण कालान्तरे एक समृद्ध नगर बनी पोतानी पूर्व ख्यातिने ताजी राखवा समर्थ थयुं. प्रस्तुत चैत्यपरिवाडी ते आ बीजा पाटणनी समृद्ध दशाना समयमां बनेली तात्कालिक जैनमंदिरोनी नोंध वा 'डीरेक्टरी' समान छे.

कर्ता अने समय–निर्देश.

आ चैत्यपरिवाडीना कर्ता कोण छे अने तेमणे आ परिवाडी क्यारे बनावी इत्यादि हकीकत तेमणे पोते ज समाप्तिलेखमां जणावी दीधी छे, जेनो सार आ प्रमाणे छे–

'पूनमिया गच्छनी चन्द्र(प्रधान)शाखामां भुवनप्रभसूरि थया, तेमनी पाटे कमलप्रभसूरि अने कमलप्रभनी पाटे आचार्य श्रीपुण्यप्रभसूरि थया, पुण्यप्रभना पट्टधर विद्याप्रभसूरि थया, विद्याप्रभसूरिना[1] पट्टधर शिष्य श्रीललितप्रभसूरि थया, ते ललितप्रभसूरिए विक्रम संवत् १६४८ ना आसोज वदि ४ अने रविवारने दिवसे अणहिल पाटणमां आ पाटणनी चैत्यपरिवाडी बनावी.'

---

१ सं. १६१७ ना कार्तिक सुदि ७ ने शुक्रवारने दिवसे पाटणमां उपाध्याय श्रीधर्मसागरजीने संघबहार करनार जुदा जुदा गच्छोना १२ आचार्योमां आ विद्याप्रभसूरि पण सामेल हता।

उपरनी नोंध सिवाय परिवाडीकार ललितप्रभसूरिना संबन्धमां विशेष हकीकत जाणवामां आवी नथी.[1] तेमनी कृति उपरथी तेओ सारा विद्वान् होवानो दावो करी शकता नथी, परंतु आ प्रस्तुत कृति तेमनी संग्रहशीलतानो सारो परिचय आपे छे, ग्रंथकार पोते पूनमगच्छना आचार्य होइ ढंढेरवाडामां रहेता हता,[2] अने तेथी ज प्रस्तुत परिवाडीनो शरुआत तेमणे ढंढेरवाडाना चैत्योथी ज करेली जणाय छे, तेमना पछी लगभग ८० वर्ष बनेली बीजी पाटण-चैत्यपरिवाडीनो शरुआत पंचासराना चैत्योथी थाय छे, कारणके तेना कर्ता हर्षविजय तपागच्छीय यति हता अने तपागच्छना यतियोनुं मुख्य आश्रयस्थान पंचासरामां हतुं. आ प्रमाणे जुदा जुदा कर्ताओनी परिवाडीओ जुदा जुदा स्थानोथी शरु थतां वाचोना अनुक्रममां घणो घोटालो थइ जाय छे, अने तेम थतां एकनी साथे बीजी चैत्यपरिवाडीनुं मेलान करवामां केटली मुश्केलीओ नडे छे, तेनो ठीक ठीक अनुभव आ प्रस्तावनाना लेखकने थयो छे.

---

१ प्रस्तुत ललितप्रभसूरिए वि. सं. १६५४ मां प्रतिष्ठित पंचतीर्थी (सम्भवनाथ बिम्बनी मुख्यतावाली) धातुप्रतिमा चाणसमा गाममां जिनमन्दिरमां विद्यमान छे. (जूओ जैनधातुप्रतिमालेख-संग्रह भा० १, १०१)

ललितप्रभसूरिए वि. सं. १६५५ मां अणहिलपाटणमां ढंढेरवाडाना उपाश्रयमांज श्रीचंदकेवलिचरित(रास) पण रच्यो छे.

—ला. भ. गांधी.

२ आजे पण ढंढेरवाडामां पूनमगच्छनो उपाश्रय मौजुद छे.

परिवाडीनो परिचय.

प्रस्तुत चैत्यपरिवाडी कविता-साहित्यनी दृष्टिए विशेष उपयोगी न होवा छतां पुरातत्त्वनी दृष्टिए घणी उपयोगी छे, परिवाडीकारे ते समयनां पाटणनां तमाम जैनमंदिरोनां नाम, तेमां रहेली प्रतिमाओनी संख्या, तेना बनावनारानां नाम, जे जे वासोमां जे जे चैत्यो आवेलां छे ते ते वासोनो नामनिर्देश इत्यादि हकीकतो जणाववानो जे महान् परिश्रम उठाव्यो छे ते आपणे माटे घणो उपयोगी निवड्यो छे, आजथी सवा त्रणसो वर्ष उपर पाटणमां केटलां देहरां हतां, ते सर्वमां केटली प्रतिमाओ हती, देहरां बनावनारा शेठिआओनां शां शां नामो हतां, ते वेळाना पाटणना भाविक जैन गृहस्थोमां धर्मश्रद्धा केवी होवी जोइये, साथे ज तेमनी पासे द्रव्यबल पण केटलुं होवुं जोइये इत्यादि अनेक वातोनां साचां अनुमानो करवानुं आ चैत्यपरिवाडी उपरथी बनी शके तेम छे.

चैत्यपरिवाडी-यात्रानो साचे साचो ढंग लेखके आ परिवाडीमां गोठव्यो छे, जाणे के पोते संघनी साथे नगरनी चैत्ययात्रा करवा निकल्या छे अने क्रमवार वच्चे आवतां तमाम देहरांओने वांदता जाय छे. संघ जे वासमां जाय छे ते वासनुं नाम पोते प्रथम सूचवे छे, पछी तेमां केटलां देहरां छे तेनी संख्या जणावे छे, पछी मूलनायकोनां नाम अने छेल्ले तेमांनी प्रतिमाओनी संख्या, आ ढंग लेखके लगभग आखी परिवाडीमां जाळवी राख्यो छे, पण

प्रतिमाओनी संख्या जणाववामां जरा गोटाळो करी दीधो छे, ते एवी रीते के केटलेक ठेकाणे तो पोते मूलनायकनुं नाम लखी " अवर प्रतिमा " " अवर जिनवर" इत्यादि उल्लेखोनी साथे बिंबोनी संख्या जणावे छे के जेनो अर्थ मूलनायक सिवायनी प्रतिमाओनी संख्या जणावनारो थाय छे, ज्यारे घणे ठेकाणे "अवर" के "अन्य" कंइ पण शब्द-प्रयोग कर्या वगर प्रतिमासंख्या लखी दीधे छे तेथी तेवा स्थळोमां ए शंका रही जाय छे के आ संख्या मूलनायक सहितनी जाणवी के मूलनायक सिवायनी प्रतिमाओनी ? आनो खुलासो मूलनायक सहित गणतां थतो नथी, तेम मूलनायक सिवायनी प्रतिमाओनी संख्या गणतां पण थतो नथी, कारण के बेमांथी कोइ पण रीते गणतां आखेरी बिम्ब-संख्यानो सरवाळो मळतो नथी. एथी ए वात सहेजे जणाइ आवे छे के ग्रन्थकारे जणावेली ते ते चैत्योनी प्रतिमा-संख्या केटलेक ठेकाणे तो मूलनायक सहितनी छे अने केटलेक स्थले ते सिवायनी छे, पण सहितनी क्यां अने रहितनी क्यां तेनो खुलासो थवो अशक्य छे.

ग्रन्थकारे जेम प्रत्येक वासनां देहराओनी संख्या अने तेनी प्रतिमासंख्या जणावी छे, तेम आखा नगरनां सर्व देहराओनो आंकडो अने सर्व प्रतिमाओनी संख्यानो आं-कडो पण तेमणे जणावी दीधा छे.

परिपाटीकार प्रतिमासंख्या जणावतां पहेलां देहरा-ओने बे विभागमां वहेंची दिये छे, म्होटां जिनमंदिरोने

पोते 'चैत्य' अने 'देहरां' कहे छे अने तेनी संख्या १०१ एकसो ने एक जणावे छे, छोटां वा घरमंदिरोने 'देहरासर' नामथी उल्लेखे छे.[1] अने तेनी संख्या ९९ नवाणुं होवानुं कहे छे, पहेला वर्गानां चैत्योनी प्रतिमासंख्या ५४९७ पांच हजार चारसो ने सत्ताणुंनी जणावे छे, बीजा प्रकारनां जिनमंदिरो-घरमंदिरोनी कुल प्रतिमासंख्या २८६८ बे हजार आठसो ने अडसठ एटली जणावे छे.

एज प्रसंगे प्रतिमाओनी नोंध करतां परिवाडीकार लखे छे के पाटणमां १प्रतिमा विद्रुम-प्रवालानी छे, २ सोपनी अने ३८ अडत्रीश रत्ननी प्रतिमाओ छे, ४ च्यार गौतम स्वामीनां बिंब छे अने ४च्यार चतुर्विंशतिपट्टको छे.

आटलुं विवेचन कर्या बाद परिवाडीकार बन्ने प्रकारनां चैत्योनी प्रतिमाओनी कुलसंख्यानो ८३९४ ए आंकडो जणावे छे,पण पूर्वे जणाव्या प्रमाणे अत्र पण संख्यानो सरवालो मलतो नथी, बन्ने प्रकारनां चैत्योनी प्रतिमाओनो

---

१ बीजा चैत्यपरिवाडीकारोए पण म्होटां मंदिर वा जिनप्रासादोने माटे देहरुं' अने छोटां घरमंदिरोने माटे 'देरासर' शब्द वापर्यो छे जुओ-"देहरासर तिहां देहरा सरखुं" (हर्षविजयकृत पाटण चैत्यपरिवाडी) " जिनजी पंचाणुने मानने श्रीजिनवरप्रासाद हो ××× देहरासर श्रवणे सुण्या पंच सया सुखकार हो " (हर्षवि०पा०चै०परि०) '' सूरतमाहे त्रण भूयरां देहरां दश श्रीकार दोय सय पणतीस छे देहरासर मनोहार ॥"(लाधाशाहकृत सूरतचैत्यपरिवाडी-प्राचीन तीर्थमालासंग्रह भा०१पृ०६७)

सरवालो ५४९७+२८६८=८३६५ आठ हजार त्रणसो ने पांसठनो थाय छे, अने जो रत्नाबिनी प्रतिमाओ जुदी गणीने तेमां ४१ ए संख्या आमां उमेरीए तो सरवालो ८४०६ ए आवे छे, पण परिवाडीकारे आपेल टोटल मळतुं नथी, परंतु कारण तेमनी गफलत नहि, पण तेमनी मानसिक अपेक्षा छे. एटले के आपेली छेल्ली संख्या पूर्वोक्त बे संख्याओनो मात्र सरवालो ज नहिं पण ते संख्यामां केटलीक परचुरण संख्या वधारीने जणावेली संख्या छे, पण आ अपेक्षा निबन्धकारे शब्दद्वारा व्यक्त करी नथी.'

पाटण शहेरनी चैत्यपरिवाडी पूरी करीने तेने लगती ज पाटणनी आसपासनां न्हानां म्होटां लगभग १२ गामडाओनी चैत्यपरिवाडी पण आ साथे जोडी दीधी छे.

आ १२ बार गामोना चैत्योनी संख्या २५ अने प्रतिमासंख्या १२०७ जेटली थाय छे, आ संख्या पूर्वोक्त पाटणनी प्रतिमासंख्यामां जोडीने परिवाडीकारे आ प्रमाणे संख्या जणावेली छे–९५९८नव हजार पांचसो ने अठाणुं. आ संख्यामां पण ३ ना फरक आवे छे.

परिवाडीकारनी जणावेली पाटणनी बिंबसंख्याना ८३९४ ए आंकडो अने बहारगामनां चैत्योना बिंबोनी संख्यानो आंक जे १२०७ नो थाय छे; ए बेने भेगा करतां ८३९४+१२०७=९६०१ नव हजार छ सो ने एक थाय छे, ज्यारे परिवाडीकारे आपेली संख्या ९५९८ छे.

ए आ रीते आपणे प्रत्येक महोल्लाना चैत्योनी प्रतिमा-

आनी संख्या तारवीने तेनी जोड देतां जे संख्या आवे छे, तेनो साथे परिवाडीकारे जणावेली पाटणनी प्रतिमासंख्या मलती नथी. तेनुं कारण पण लेखकनी संख्याप्रतिपादक पद्धतिनुं अनिश्चितपणुं ज होइ शके,वलो बे चैत्योनी प्रतिमा संख्या परिवाडीकारे मुद्दल जणावी नथी, तेथी पण तेमनी संख्या आपणी तारवेली संख्या साथे नहि मलती होय तो बनवा जोग छे.

परिवाडीना परिशिष्टरूपे जणावेली १२ गामोनी चैत्यपरिवाडीमां रूपपुरनी चैत्यसंख्या ध्यान खेंचनारी छे, तेमां कुले १० जिनमंदिर अने ३६७ जेटली प्रतिमा जणावी छे. रूपपुर पूर्वे केवडुं म्होटुं होवुं जोइये ते वात आ वर्णन उपरथी जणाइ आवे छे. जे वेला रूपपुरनी ए दशा हती, ते वखते चाणसमामां मात्र एक मंदिर अने ३४ प्रतिमाओ हती. आजे रूपपुरमां मात्र एक मंदिर २९ प्रतिमा छे अने श्रावकोनां ३-४ त्रणच्यार घर छे, ज्यारे चाणसमामां ८-१० मंदिर जेवडुं विशाल चैत्य छे, अने अनेक प्रतिमाओ छे, जैनवसति पण घणी छे. एम लागे छे के रूपपुरनी वसति तूटवाथी ज चाणसमानी विशेष आबादी थइ हशे कालान्तरे शहेरनां गाम अने गामनां शहेर केवी रीते बने छे, तेनो आ प्रत्यक्ष पूरावो छे.

परिवाडीकारे कोइ ठेकाणे ए वातनो खुलासो नथी कर्यो के पोते जे प्रतिमासंख्या जणावे छे ते केवल पाषाणमय प्रतिमाओनी छे के धातु, पाषाण अने रत्न विगेरे

सर्व प्रकारनी प्रतिमाओनी ?, परंतु परिवाडीकारना आ मौननो खुलासो परिवाडीना परिशिष्टना एक उल्लेख उपरथी स्वयं थइ जाय छे—'कुमरगिर' ना बीजा चैत्यनी संख्या जणावीने ते " पीतल पडिमा चारसे वली, छन्नुं उपरि मनहरु।" आवो एक नवो उल्लेख करे छे,यद्यपि ए उल्लेखनो अर्थ एवो पण लेइ शकाय के 'चैत्यनी प्रतिमा-संख्या गणाव्या बाद आ पीतलमय प्रतिमाओनी संख्या गणाववाथी बीजे सर्व स्थले बतावेली सामान्य प्रतिमासंख्या पाषाणनी प्रतिमाओनी ज होवी जोइए,' परंतु ग्रन्थकारना अभिप्रायनो विचार करतां आ कल्पना टकी शकती नथी,ए वात खरी छे के ग्रन्थकारे कोइ ठेकाणे पीतलनो के धातुनी प्रतिमाओनो जुदो उल्लेख कर्यो नथी, मात्र आ एक ज स्थले कर्यो छे अने ते पण जुदो, छतां ते संख्या तेमणे प्रतिमाओनी कुल संख्यामां सामेल करी छे, जो पाटणनां २०० बसो देहराओनी धातुमय प्रतिमाओने गणनामां न लीधी होय तो कुमरगिरना एक ज देहरानी पीतलनी प्रतिमाओने भेळी गणवानुं कांइ कारण न हतुं. ए उपरथी खुल्लुं समजाय छे के परिवाडीकारे दरेक चैत्यनी जे प्रतिमा संख्या बतावी छे, तेमां धातुनी प्रतिमाओ पण सामेल समजवानी छे, दरेक ठेकाणे तेनो जुदो उल्लेख न करवानुं कारण विस्तार थइ जवानो भय हतो, अने कुमरगिरमां जुदो उल्लेख करवानुं कारण धातुप्रतिमाओनी बहुलता बताववी एज होइ शके.

किया वासमां केटलां देहरां अने केटली प्रतिमाओ छे, ते प्रत्येकनी तेम ज सर्वनी संख्या परिवाडीना सारमां ते ते स्थले जणावी दीधी छे. एटलुं छतां पण वासोना नामनी साथे चैत्य अने प्रतिमासंख्यानुं कोष्टक आ नीचे आपवामां आवे छे. एनी नीचे सं. १७२९ ना वर्षमां बनेली चैत्यपरिवाडीमां जणावेल वास, चैत्य अने बिंबनी संख्यानुं कोष्टक अने ते पछी वर्तमान समयना पाटणना वास अने चैत्यसंख्या जणावनारुं कोष्टक आपवामां आवशे, जे उपरथी सं. १६४८ मां पाटणनी शी दशा हती, १७२९ मां तेमां केटलो फेर पड्यो अने वर्तमानमां पाटणना चैत्योनी केटली संख्या छे-ए सर्व जाणवानुं घणुं सुगम थई पडशे.



सं. १६४८ मां बनेली प्रस्तुत चैत्यपरिवाडीने अनुसारे

श्रीपाटण-चैत्य-प्रतिमा-कोष्ठक १

नं०	वासनाम	चै०	प्र०	नं०	वासनाम	चै०	प्र०
१	ढंढेरवाडो	११	५५६	७	नागमढ	१	९
२	कोकानो पाडो	३	२६६	८	पंचासर	५	९७
३	खेतरपालनो पाडो	१	१६७	९	उंची शेरी	१	२३
४	जगुपारेखनो पाडो	२	१५	१०	ओशवाल महोल्लो	३	३१
५	पहेली खारी वाव	१	४	११	पीपलानो पाडो	१	५
६	बीजी खारी वाव	१	१३	१२	चिंतामणिनो पाडो	३	९५

नं०	वासनाम	चै०	प्र०
१३	खराकोटडी[1]	८	३८४
१४	आंगडीआपाडो	१	३७५
१५	मणिहट्टिपाडो[2]	२	१८
१६	मांका महेतानो पाडो	१	२१
१७	कुभारीयापाडो	२	४१
१८	तंबालीवाडो	६	३५२
१९	खेजडानो पाडो	१	९
२०	अंबडावाडो	१	९०
२१	वडी पोसालनो [3]पाडो	५	७५
२२	साहनो पाडो	२	१५७
२३	कंसारवाडो	५	७६
२४	भलावैद्यनो पाडो	१	३
२५	भंसातवाडो	१	३६
२६	सहावाडो	२	६९७

नं०	वासनाम	चै०	प्र०
२७	सगरकुई	३	८३
२८	हेबतपुर	१	१०५
२९	मोढेरनो पाडो	१	४
३०	नारंगपाडो	२	२७४
३१	सोनारवाडो	२	१५
३२	फोफलीआवाडो	११	२९५
३३	जोगीवाडो	३	६४
३४	मफलीपुर	१	१२
३५	मालीवाडो	१	२४
३६	मांडणनो पाडो	३	८९
३७	गदा वह्रानो पाडो	३	९०
३८	मल्लिनाथनो पाडो	१	१७६
३९	भाणानो पाडो	१	९८
४०	समुद्रफडीआ	१	१९
४१	चोखावटीनो पाडो	२	१८
४२	बलीयानो पाडो	१	११

१ 'खराकोटडी' नो अर्थ 'खरतरगच्छवालाओनी बेठक' एवो संभव छे, कारण के त्यां खरतरगच्छवालाओनो जथ्थो हतो, आजे पण त्यांना रहेवासीओमांना केटलाक पोताने खरतरगच्छीय तरीके ओळखावे छे.

२ आजे आ वास 'मणियातो पाडो' कहेवाय छे.

३ हालनो 'झवेरीवाडो' ए ज वडीपोसालनो पाडो छे.

नं.	वासनाम	चै०	प्र०	नं.	वा०	चै०	प्र०
४३	अबजी महेतानो पाडो[1]	२	७	५८	दोशीवाडो[4]	१	—
४४	कुसुंभीया पाडो	४	६८	५९	शांतिनाथनो पाडो	५	१२८
४५	नाकर मोदीनो पाडो	४	१९३	६०	कटकीआ वाडो	२	६९
४६	मालु संघवीनुं स्थान	३	३३	६१	आनावाडो	१	३४
४७	लटकणनो पाडो	१	११	६२	सालवीवाडो-त्रसेरीओ	२	१६२
४८	भंडारीनो पाडो	१	५	६३	कुरसीवाडो	१	७४
४९	भाभानो पाडो	४	१५७	६४	कइआवाडो	२	१९
५०	लींबडीनो पाडो	३	४२	६५	कल्हारवाडो	१	५५
५१	करणशाहनो पाडो[2]	९	२८०	६६	वणायगवाडो	१	७०
५२	बांमणवाडो	८	८३	६७	धांधुली पाडो	१	७१
५३	खेतलवसही[3]	१	२४७	६८	ऊंचो पाडो	१	३
५४	लटकणनो पाडो	५	२००	६९	नागवाडो	१	९
५५	कुंपादोशीनो पाडो	२	३०	७०	पुन्नागवाडो	१	१०
५६	वीसावाडो	५	१०१	७१	गोल्हवाड	३	१२५
५७	सरहीआवाडो	१	२३	७२	धोळी परब	४	१२२
				७३	गोदडनो पाडो	४	२३९
				७४	नाथाशाहनो पाडो	६	३६९
				७५	महेतानो पाडो	२	२३

१ आ वासना बे चैत्योमांना एकनी प्रतिमा संख्या जणावी नथी.

२ हालमां ए वास 'कनाशानो पाडो' कहेवाय छे.

३ आज काल ए स्थान 'खेतरवसही' ए नामथी प्रसिद्ध छे.

४ अहिंना शांतिनाथना देहरामां केटली प्रतिमा हती ते जणाव्युं नथी.

परिशिष्ट.

नं०	गा०	दे०	प्र०	नं०	गा०	दे०	प्र०
१	वाडीपुर[१]	१	२	७	नवो नगीनो[१]	२	१२०
२	दोलतपुर[१]	१	१	८	कतपुरा[४]	२	८
३	कुमरगिर[१]	२	५८५	९	रूपपुर[५]	१०	३६७
४	वावडी[२]	१	१८	१०	चाणसमा[५]	१	३४
५	वडली[३]	२	४१	११	कंबोइ[६]	१	२१
६	नगीनो[१]	१	७	१२	मुंजपुर	१	३

१ नंबर १, २, ३, ६, ७ ए गामोनो हाल पाटणनी नजीकमां पत्तो नथी.

२ पाटणथी दक्षिणमां ३ गाउने छेटे वावडी छे, हालमां त्यां देहरुं नथी.

३ पाटणथी पश्चिमे त्रण कोशने छेटे वडली गाम छे.

४ पाटणथी दक्षिणमां २ कोश छेटे रूपपुर पासे कतपुरा आवेल छे.

५ रूपपुर अने चाणसमा पाटणथी दक्षिण पूर्वे ६, ७ कोश उपर छे.

६ कंबोई २ बे छे, १ ली सोलंकीनी कंबोइ पूर्व दक्षिणमां २ जी काकरेचीनी कंबोइ पश्चिम दक्षिणना खूणा तरफ ६ गाउ उपर छे.

संवत् १७२९ ना वर्षमां रचायेली चैत्यपरिवाडीना अनुसारे श्रीपाटण–चैत्यप्रतिमा–कोष्ठक २.

नं०	वा०	चै०	प्र०	नं०	वा०	चै०	प्र०
१	पंचासर	५	१८०	१९	सगर कूई	१	३५
२	उंची शेरी	१	५१	२०	वलियारवाडो	१	७
३	पीपलानो पाडो	२	११४	२१	जोगीवाडो	१	९५
४	चिंतामणिपाडो	२	२९२	२२	मल्लिनाथनो पाडो	२	३१८
५	मणालकोटडी	१	३	२३	लखीयारवाडो	३	४४७
६	खराखोटडी	५	३०८	२४	न्यायशेठनो पाडो	१	६८
७	सांगडीआवाडो	१	४०४	२५	चोखावटीनोपाडो	१	४७
८	कंसारवाडो	२	१०१	२६	वलीया पाडो	१	१५१
९	साहनो पाडो	१	२८२	२७	अबजी महेतानो पाडो	२	४९
१०	वडोपोसालनो पाडो	३	६३८	२८	कसुंबियावाडो	२	८४
११	अभेडावाडो	१	५७१	२९	वायुदेवनो पाडो	१	१०१
१२	तंबोलीवाडो	१	१३०	३०	वाचरीयो	१	३०९
१३	कुंभारीयावाडो	१	८२	३१	पद्मापारेखनी पोल	१	३२
१४	मांका महेतानो पाडो	१	१६	३२	सोनारवाडो	१	४७
१५	मणीयाहो	१	४१	३३	खेजडानो पाडो	१	१३८
१६	पखाली (वाडो ?)	१	३१	३४	फोफलीयावाडो	३	४६८
१७	सावाडो	२	६०४	३५	खजुरीनो पाडो	१	१५८
१८	भेंसातवाडो	१	६७	३६	भाभानो पाडो	१	४०१

नं०	वा०	चै०	प्र०	नं०	वा०	चै०	प्र०
३७	लींबडीनो पाडो	१	३०७	५०	जगुपारेखनो पाडो	१	३४
३८	करणसाहनो पाडो	३	९५३	५१	कियावहोरानो पाडो	१	३६
३९	संघवीपोल	१	१३३	५२	क्षेत्रपालनो पाडो	१	३९१
४०	खेतलवसही	२	३७९	५३	कोकानो पाडो	२	३९५
४१	अजुवसापाडो	१	७७	५४	ढंढेरवाडो	३	२७३
४२	कुंपाशेठीनो पाडो	१	१६	५५	महेतानो पाडो	२	३६५
४३	वसावाडो	१	२२८	५६	वखारनो पाडो	२	—
४४	दोसीवाडो	१	९१	५७	गोदडनो पाडो	१	९६
४५	आंबादोसीनो पाडो	१	१६	५८	अलेरीओ	२	५१९
४६	पंचोटडी	१	१२०	५९	कलारवाडो	१	५३
४७	घीयापाडो	२	१३६	६०	दणायगवाडो	१	१५४
४८	कटकीओ	१	१०७	६१	घोघोल	२	२६४
४९	घोलीपरब	१	४६	६२	खारी वाव	१	१३

आ बीजी चैत्यपरिवाडीना लेखक हर्षविजये पाटणनां कुल छोटां महोटां चैत्यो अने तेमांनी प्रतिमाओनी संख्या नीचे प्रमाणे जणावी छे—

"जिनजी पंचासुनइ माझने श्रीजिनवर प्रासाद हो ।
जिनजी भाव धरी मस्तके वंदीए मुकी मन विखवाद हो ॥जि०॥
जिनजी जिनबिंबनी संख्या सुणो माझने तेर हजार हो ।
जिनजी पांचसे बहोतर वंदीए सुख संपत्ति दातार हो ॥
जिनजी देहरासर श्रवणे सुण्या पंचसया सुखकार हो ।
जिनजी तिहां प्रतिमा रलीयामणी माझने तेर हजार हो॥ "

उपर जणावेलां ९५ जिनप्रासाद नाम ठामनी साथे परिवाडीमां जणावी दीधां छे, बीजां घरमंदिरो जेने घणा खरा परिवाडीकारो 'देहरासर' ए नामथी ओळखावे छे तेनी संख्या ५०० पांचसोनी जणावी ने तेमां १३००० तेर हजार प्रतिमाओ होवानुं जणावे छे. प्रथम १३५७३ ए संख्या पण जणावेली छे. परिवाडीकारना कहेवानो आशय एवो होय के 'पाटणमां ९५ म्होटां अने ५०० न्हानां जिनमंदिरो हतां अने तेमां अनुक्रमे १३५७३ अने १३००० प्रतिमाओ हती.' परंतु आवो अर्थ करवा जतां विचार ए आवे छे के सं. १६४८ मां पाटणमां न्हानां म्होटां २०० मंदिरो अने ८३६५ प्रतिमाओ हती तेना स्थानमां सं. १५२९ मां ५९५ मंदिरो अने २६५७३ प्रतिमाओनुं होवुं मन कबूल करतु नथी, ८० वर्षमां उपर प्रमाणे वधारो थवो शक्य होय तेम लागतुं नथी, कदाच एम होइ शके के प्रथमनी ज १३५७३ ए संख्या बीजी वेळा सामान्यपणे तेर हजार तरीके लखी होय अने देहरासरानी ५०० ए संख्या पूर्वे जणावेल ९५ चैत्यो अने घरमंदिरो सर्व भेळां गणीने जणावी होय तो बनवा जोग छे, अने तेम ज होवुं जोइये, कारणके परिवाडी-कारे पोते पण सर्व घरमंदिरो गण्यां नथी पण तेमणे 'श्रवणे सुण्यां' छे, मतलब के घरमंदिरोनी संख्या चोकस नथी, छतां एटलुं तो नक्की छे के १६४८ पछी पाटणमां घर-मंदिरो अने प्रतिमाओनो सारो भलो वधारो थयो हतो.

सं. १५२९ थी मांडीने सं. १९६७ ना वर्षपर्यन्त पाटण-

३

नी स्थिति केटली हदे नबली पडी अने देहरांनी खास करीने घरदेहरासरोनी संख्या केटली बधी ओछी थइ गइ तेनो ख्याल आ नीचेना कोष्टक उपरथी आवी जशे.

सं. १९६७ मां प्रगट थयेली पाटणनां जिनमंदिरोनी मंदिरावली[1] प्रमाणे पाटण-चैत्यसंख्या कोष्टक ३.

नं०	वा०	प्र०	नं०	वा०	प्र०
१	पंचासर	१३	१५	तरसेरीआनो पाडो	४
२	कोटावालानी धर्मशाला	१	१६	कटकीयावाडो	१
३	कोकानो पाडो	२	१७	घीयानो पाडो	२
४	खेतरपालनो पाडो	१	१८	वागोलनो पाडो	१
५	पडीगुंदीनो पाडो	१	१९	पंचोटीनो पाडो	१
६	ढंढेरवाडो	३	२०	वसावाडो	२
७	मारफतिया महेतानो पाडो	२	२१	अबुवसानो पाडो	१
			२२	खेतरवसीनो पाडो	७
८	वखारनो पाडो	२	२३	ब्राह्मणवाडो	१
९	गोदडनो पाडो	४	२४	कनासानो पाडो	४
१०	महालक्ष्मीनो पाडो	२	२५	लींबडीनो पाडो	१
११	गोलवाडनी शेरी	२	२६	भाभानो पाडो	१
१२	नारणजीनो पाडो	१	२७	खजुरीनो पाडो	१
१३	धांधल	१	२८	वासुपूज्यनी खडकी	१
१४	कलारवाडो	१	२९	संघवीनो पाडो	२

१ आ 'मंदिरावली' श्री पाटण जैनश्वेताम्बर संघालुनी मरमत करनारी कमीटी तरफथी बहार पाडवामां आवी छे.

नं०	वा०	प्र०
३०	कसुंबीयावाडो	१
३१	अबजी महेतानो पाडो	१
३२	वलीया पाडो	१
३३	चोखावटीआनो पाडो	३
३४	केशुशेटनो पाडो	१
३५	निशालनो पाडो	१
३६	लखीयारवाडो	२
३७	मल्यातनो पाडो	२
३८	जोगीवाडो	१
३९	फोफलीआवाडो	६
४०	सोनीवाडो	१
४१	मणीआतीं पाडो	३
४२	डंक महेतानो पाडो	२
४३	कुंभारीयापाडो	२
४४	तंबोलीवाडो	२
४५	कपुरमहेतानो पाडो	२
४६	खेजडानो पाडो	१
४७	तरभेडावाडो	१
४८	भैंसातवाडो	३
४९	शाहवाडो	२
५०	सानो पाडो	२
५१	वडीपोसालनो पाडो	६
५२	टांगडीआवाडो	१०
५३	खराखोटडीनो पाडो	३
५४	अष्टापदजीनी खडकी	४

उपरना कोष्टक उपरथी जणाशे के वर्तमान समयमां पाटणना ५४ चोपन वासोमां कुल १२९ नी संख्यामां जैनमंदिरो विद्यमान छे. जेमां मुख्य मंदिरो या देहगाओनी संख्या ८५ पंचाशीनी छे अने बाकीनां ४४ आश्रित चैत्यो वा देहरासरो छे के जेमां घणे भागे घरमंदिरोनो पण समावेश थइ जाय छे, आ उपरथी घरदेहरासरो केटलां बधां उठी गयां छे तेनो ख्याल आवी जशे.

आ घटाडानां त्रण कारणो मानी शकाय. १ जैनसमाजमां धर्मश्रद्धा अने देवपूजा-भक्तिनुं कमी थवुं, २-श्रावकोनी

वसतिनो घटाडो, ३-श्रावकोनुं विशेषे करीने परदेशोमां रहेवुं.

उपर जणावेलां सं. १६४८, सं. १८२९ अने सं. १९६७नी सालमां विद्यमान चैत्योनी संख्यानां त्रणे कोष्टको उपरथी पाटणनी चडती पडतीनां अनुमानो थइ शकशे.

यद्यपि आजे पण पाटण एक भव्य शहेर गणाय छे, हजारोनी संख्यामां अस्तित्व धरावता प्राचीन ग्रन्थोना संग्रहो-भंडारोना दर्शन निमित्ते अनेक भारतीय अने यूरोपीय विद्वानोनुं ध्यान पाटण पोतानी तरफ खेंची रह्युं छे, श्रीमंत अने धर्मनिष्ठ जैनधर्मी मनुष्योनी लगभग ५-६ हजार जेवडी म्होटी संख्याथी पाटण हजी पण पोतानुं "जैनधर्मनी राजधानी" ए प्राचीन मानदंतु नाम केटलेक अंशे निभावी रह्युं छे, एटलुं छतां पण पाटणनी ते प्राचीन श्रेष्ठता, प्राचीन भव्यता, प्राचीन समृद्धि आजना पाटणमां रही नथी,ते श्रेष्ठताओ आजे तेनी प्राचीन स्मृतिमां ज नजरे पडे छे; कृतिमां नहि.

उपरना संक्षिप्त विवेचनथी प्रस्तुत परिपाडीनी ऐतिहासिक उपयोगिता वांचकगणना ध्यानमां आव्या वगर रहेशे नहि.

आ प्रस्तुत परिपाडीनो शब्दानुवाद न करतां तेनो सारांशमात्र तारवीने शरुआतमां आपी दीधो छे के जे उपरथी परिपाडीनी सर्व ज्ञातव्य बातो जाणी शकाशे, अने आशा छे के एक वार ए 'सार' वांच्या पछी परिपाडी वांचनारने तेमां न समजाय तेवी कंइ पण बाबत जणाशे नहि.

आ प्रस्तुत चैत्यपरिवाडी तेना लेखके कुल २३ ढालो, एक चोपाई अने २०४ गाथाओमां पूरी करी छे.

जे प्रति उपरथी एनी प्रेस-कॉपी करवामां आवी छे, ते मूल प्रति सं. १६४८ ना पोष वदि १ ना दिवसे लखेल छे. एटले के रचाया बाद मात्र त्रण महिनानी अंदर ज लखेल होइ परिवाडी पोताना मूळ रूपमां जळवाइ रही छे. प्राचीन गूर्जर साहित्यना समालोचकोने तेनुं खरुं स्वरूप जणाइ आवे एटला माटे तेमां कंइ पण भाषाफेर न करतां तेने पोताना मूल स्वरूपमां ज कायम राखी प्रकट करवा उचित थार्युं छे.

कदरदान वाचकगण पठन-पाठन द्वारा आ चैत्यपरिवाडीथी लाभ हांसिल करी लेखक अने प्रकाशकना उद्देशने सफल करो एवी शुभाकांक्षा साथे विरमीए छीए.

—मुनि कल्याणविजय.



प्रस्तुत पाटण चैत्यपरिपाटीनो सार.

(चोपाई)

१ ढंढेरवाडो—[1]

ते समयमां ढंढेरवाडामां त्रण म्होटां अने आठ घर देरासर मळी कुल ११ अग्यार देहरां हतां, म्होटां ३ देहराओमां १ सामला पार्श्वनाथनुं, २ महावीरनुं अने ३ पार्श्वनाथनुं. आठ घरमंदिरोमां—१ गोवाळ झवेरीनुं, २ पन्नादोसीनुं, ३ रायमलनुं, ४ शा. धनाजीनुं, ५ मेला वीसानुं, ६ वीसा-भीमानुं, ७ राजु दोसीनुं अने ८ रतन संघवीनुं.[2]

ढंढेरवाडानां आ सर्व देहरांनी सर्व मळी ५५६ पांच सो छप्पन्न जिनप्रतिमाओ हती.

ढंढेरवाडाथी आपणो आ संघ कोकाना पाडा भणी जाय छे.

---

१ पाटण चैत्यपरिवाडीना कर्ता आचार्य श्रीललित-प्रभसूरि पूनमियागच्छना होइ पोताना उपाश्रयवाळा वास—ढंढेरवाडाथी चैत्यपरिवाडी यात्रा शरु करे छे.

२ आ घरमंदिरो मूलनायकना नामथी न जणावतां तेना करावनार गृहस्थना नामथी ज जणाव्यां छे, आगे पण केटलेक ठेकाणे आ प्रमाणे ज समजवानुं छे.

(ढाल १ ली)

२ कोकानो पाडो—[1]

त्यां प्रथम कोका पारेखने देहरे ऋषभदेव विगेरेने वांदीने कोकापार्श्वनाथने भेटे छे, अने त्यार पछी श्रीवंत दोसीने घरे वासुपूज्य स्वामीने वांदे छे, कोकाना पाडानां उपर्युक्त ३ देहरासरोमां ५+१३९+६२=२६६ बसो छासठ प्रतिमाओ जुहारी संघ खेतरपालने पाडे गयो.

३ खेतरपालनो पाडो—

आ पाडामां एकज देहरुं हतुं जेमां भगवान् शीतलनाथनी प्रतिमा १६७ एकसोने सडसठ जिनबिंबनी माथे विराजमान हती; तेने वांदीने संघ जगुपारेखने पाडे गयो.

४ जगुपारेखनो पाडो—

आ वासमां भगवान् नेमिनाथनुं अने शांतिनाथनुं एम बे देहरां हतां, प्रथममां नेमिनाथजी विगेरे ३ प्रतिमाओ हती; ज्यारे बीजामां—के जे जयवंत शेठना देहरा तरीके प्रसिद्ध हतुं तेमां—शांतिनाथ अने बीजी अग्यार मळी कुल १२ प्रति-

---

१ परिवाडीना कर्ताए पाडानुं नाम लख्युं नथी, छतां 'कोकापार्श्वनाथ' उपरथी अमोए आ वासने 'कोकानो पाडो' कहीने ओळखाव्यो छे. —लेखक.

माओ हती, ते वांदीने संघ खारीवाव उपर गयो.

५ पहेली खारी वाव—

पहेली खारीवावे ऋषभदेवने देहरे ४ प्रतिमाओनां दर्शन करी संघ बीजी खारीवावे गयो.

६ बीजी खारीवाव—

त्यां जइ महावीर प्रभुने भेटया, अहीं १३ तेर जिनप्रतिमा अने बे गौतम स्वामिनां बिंब हतां, ए सर्वने वांदी संघ नागमढे आव्यो.

(ढाल २ जो)

७ नागमढ—

ज्यां भगवान् नेमिनाथनुं देहरुं अने ९ नव जिनप्रतिमाओ हती तेने वंदन कर्युं अने त्यारबाद संघ पंचासराना पाडामां गयो

८ पचासरानो पाडो--

पंचासराना पाडामां आ वखते कुल ५ पांच जिनमंदिर हतां. १ महावीरनुं २ वासुपूज्यनुं ३ पंचासरा पार्श्वनाथनुं ४ ऋषभदेवनुं अने ५ नवघरानुं पार्श्वनाथनुं. आ पांचे देहरासरोमां सर्व मली ९+२७+८+१०(?) ४३=९७ सत्ताणुं वा तेथी पण अधिक प्रतिमाओ हती. पंचासरथी संघ उंची शेरीं भणी गयो.

९ उंची शेरी—

उंची शेरीमां शां[illegible]नुं देहरुं हतुं जे 'भणशालीनुं देहरुं' ए नामथी प्रसिद्ध हतुं, त्यां कुल २३ जिनप्रतिमाओ हती. अहींथी आगे संघ ओशवालना महोल्लामां गयो.

१० ओशवाल महोल्लो—

ओशवालोना महोल्लामां ३ त्रण देहरां हतां, १ शांतिनाथनुं, २ भोलडीया चन्द्रप्रभनुं अने ३ श्रावका पार्श्वनाथनुं. आ त्रणे जिनमंदिरोमां सर्व मली प्रतिमाओ ७+१+२३=३१ एकत्रीश हती. ए पछी संघ पीपलाने पाडे गयो.

(ढाळ ३ जी)

११ पीपलानो पाडो—

अहिं शांतिनाथनुं देहरुं हतुं अने शांतिनाथ उपरांत बीजी च्यार प्रतिमाओ हती, तेने वांदी संघ चिंतामणिने पाडे गयो.

१२ चिंतामणिनो पाडो—

अत्र शा. वछुने देहरे अजितनाथ विगेरे सात जिनप्रतिमाओने वांदी संघ शांतिनाथने देहरे थइ चिंतामणि पार्श्वनाथने देहरे गयो, चिन्तामणिना पाडामां कुल ३

देहरां अने ७+२१+६७=९५ पंचाणु प्रतिमाओ हती, अहींथी संघ खराखोटडीमां आव्यो.

१३ खराखोटडी—

अत्रे अनेक जिनमंदिरो अने प्रतिमाओ हती. १ आसधीर ठाकरने देहरे चन्द्रप्रभ अने बीजी बे प्रतिमा. २ सदय वच्छ ठाकरने देहरे पार्श्वनाथ अने बीजी बे प्रतिमा. ३ अष्टापदावतार नामनुं देहरुं (आमांनी बिंबसंख्या जणावी नथी, प्राय २४ बिंब हशे) अने ४ चन्द्रप्रभनुं देहरुं-ज्यां ओगणसाठ जिनप्रतिमाओ हती, जेमां एक रत्नमयी हती. ५ खरतरगच्छनी निश्रावालुं शांतिनाथनुं बावन जिनालयवालुं (विधिचैत्य) अने ६ ऋषभदेवनुं देहरुं. आ बन्ने देहरांनी मली २७२ बसो बहोंतेर प्रतिमाओ हती, अने तीर्थंकरोनां माता-पितानी मूर्तिओ पण अत्र हती. ७ सोनी तेजपालनुं पार्श्वनाथवालुं घरमंदिर अने ८ ठाकर सोनीनुं सुमतिनाथनुं घरमंदिर आ बेमां अनुक्रमे २९+४ प्रतिमाओ हती. आ प्रमाणे खराखोटडीमां कुल ८ मंदिर अने ३+३+२४+५९+२७२+२९+४=३८४ त्रणसो चोराशी प्रतिमाओ हती. ए सर्वने जुहारी आपणा यात्रिको त्रांगडी-आपाडे आव्या.

(ढाल ४ थी)

१४ त्रांगडीआपाडो—

आ पाडामां ऋषभदेवनुं एक म्होटुं देहरुं हतुं, जेमां ३७५ त्रणसो पंचोत्तेर प्रतिमाओ विराजमान हती. अहींथी संघ मणिहट्टि पाडे आव्यो.

१५ मणिहट्टि पाडो—

आ पाडामां बे जिनमंदिरो हतां १ महावीरनुं अने २ देवदत्तनुं. आ बन्नेमां प्रतिमाओ अनुक्रमे ५+१३ हती. मणियाती पाडामांथी संघ मांका महेताने पाडे गयो.

१६ मांका महेतानो पाडो—

ज्यां भगवान् शांतिनाथनुं एक देहरुं हतुं, अने मूलनायक सिवाय वीस प्रतिमाओ त्यां विराजमान हती, अहीं वंदन करी संघ कुंभारोये पाडे पहोच्यो.

१७ कुंभारीया पाडो—

अत्र २ बे देहरां हतां, १ अमीचंद सोनीनुं अने २ वछ जवेरीनुं. पहेलामां मूलनायक शांतिनाथ उपरांत १७ सत्तर जिनप्रतिमाओ हती, बीजामां चोवीस तीर्थंकरोनी प्रतिमाओ हती तेने वांदीने आपणो यात्रालु संघ तंबोलीवाडे गयो.

(ढाल ५ मी)

१८ तंबोली वाडो—

अहिं कुल ६ देहरां हतां. जेमां १ सुपार्श्वनाथनुं हतुं ज्यां ७३ जिनबिंब हतां, २ बीजा मंदिरमां ७ बिंब हतां, ३ रूपा वहोरानुं आदिनाथनुं, ४ मेघा पारेखनुं चन्द्रप्रभनुं, ५ घूसीनुं, ६ शा. सीराजनुं संभवनाथनुं. छेल्लां ४ देहराओमां जिनबिंब अनुक्रमे १०+५+२+२५५ हतां. सर्व मंदिरोनी प्रतिमासंख्या ७३+७+१०+५+२+२५५=त्रणसो बावन हती. तंबोली वाडाथी संघ खेजडाने पाडे गयो.

१९ खेजडानो पाडो—

ज्यां ' सारंगनुं देहरुं ' करीने एक जिनमंदिर हतुं, तेमां नव प्रतिमाओ हती तेने जुहारी संघ त्रंबडावाडे गयो.

२० त्रंबडा वाडो—

त्रंबडा (तरभेडा) वाडामां जइ शांतिनाथने वांद्या, अत्रेनुं देहरुं घणुं रमणीय होइ ९९ नवाणु जिनबिंबोथी अलंकृत हतुं, त्यांथी दर्शन करी संघ वडी पोसालना पाडामां आव्यो.

२१ वडीपोसालनो पाडो—

आ पाडामां कुल ५ मंदिरो अने ३४+८+६+१४+१३

=७५ प्रतिमाओ हती. देहराओमां १ सोमा शेठनुं ऋषभदेवनुं, २ भुजबल शेठनुं श्रीश्रेयांसनाथनुं, ३ वाडीपुरमंडन पार्श्वनाथनुं, ४ सहसा पारेखनुं श्रीपार्श्वनाथनुं अने ऋषभदेवनुं. आ पांचे देहरां जुहारी संघ शाहने पाडे गयो.

(ढाल ६ ठी)

२२ शाहनो पाडो--

शाहना पाडामां २ देहरां हतां. १ आदीश्वरनुं अने २ रायसिंघने घरे शांतिनाथनुं. प्रथममां ८७ सत्याशी प्रतिमाओ हती, ज्यारे बीजामां ७० हती. ए पछी संघ कंसार वाडे गयो.

२३ कंसारवाडो--

अत्र १ देहरुं शीतलनाथनुं आव्युं, ज्यां १२ जिनप्रतिमाओ हती. २ शांतिनाथना देहरामां २२ प्रतिमाओ वांदी ३ शा. चांपाने देहरे जइ १६ सोल प्रतिमाओ वांदी त्यांथी ४ चोथा शाहने घरे बे रत्नमयी प्रतिमाओनां दर्शन करी ५ पार्श्वनाथने देहरे चोवीस जिनप्रतिमाओने नमन कर्युं. आ रीते कंसारवाडामां कुल ५ मंदिर अने १२+२२+१६+२+२४=७६ जिनप्रतिमाओ वांदी संघ भलावैद्यने पाडे गयो.

२४ भलावैद्यनो पाडो—

ज्यां चन्द्रप्रभनुं देहरुं अने बे त्रण प्रतिमा हती. वैद्यना पाडाथी यात्रालु संघ भेंसातवाडे पहोंच्यो.

२५ भेंसातवाडो—

(अत्र शांतिनाथ आदि ३६ छत्रीस जिनमूर्तिओ हती,) एक गौतमगणधरनी प्रतिमा पण विराजमान हती. भेंसातवाडाथी संघ सहावाडे आव्यो.

(ढाळ ७ मी)

२६ सहावाडो—

ज्यां सुपार्श्वनाथ अने पार्श्वनाथनां बे देहरां जुहार्यां, अहीं ८५+६१२=६९७ छसो सत्ताणुं प्रतिमाओ हती. हवे संघ सगरकुई आव्यो.

२७ सगरकुई—

अत्रे त्रण देहरां हतां-१ पार्श्वनाथनुं २ पुंजाशेठने घरे ऋषभदेवनुं अने ३ जयचंद शेठवालुं शांतिनाथनुं, आ मंदिरोमां २०+३०+३३=८३ प्रतिमाओ हती तेने वांदी संघ हेबतपुरे गयो.

२८ हेबतपुर—

ज्यां १०५ एकसो पांच जिनबिंब वांदी संघ मोढेरना पाडा भणी गयो.

२९ मोढेरना पाडो--

मोढेरना पाडामां ४ च्यार प्रतिमाओ वांदी आपणो आ भाविक संघ नारंगे पाडे आव्यो.

(ढाल ८ मी)

३० नारंगापाडो--

आ पाडामां नारंगा पार्श्वनाथनुं अने 'शोभीनुं' एम बे मंदिरो हतां, बंनेनी मळी ४२+२३०=२७२ प्रतिमाओ हती, तेने वांदी संघ सोनारवाडे थइ फोफलीआवाडे गयो.

३१ सोनारवाडो—

सोनारवाडामां बे देहरां हतां–१ शांतिनाथनुं अने २ महावीरनुं. बन्नेमां प्रतिमा १४+१=१५ हती.

३२ फोफलीआवाडो—

फोफलीआवाडो आजनी माफक पूर्वे पण घणो विशाल हतो, त्यां वासमंदिर अने घरमंदिर मली कुल ११ अग्यार जिन-मंदिरो हतां; जे नीचे प्रमाणेना नामोथी ओलखातां १ ऋषभ-देवनुं, २ शांतिनाथनुं, ३ राजाशेठनुं-संभवनाथनुं, ४ काछ-कानुं-मुनिसुव्रतनुं, ५ वीरजी शेठनुं-पार्श्वनाथनुं ६ थावर-पारेखनुं,७ महुलाशेठनुं-मुनिसुव्रतनुं, ८ कंकुशेठनुं-पार्श्वनाथनुं, ९ राजाशेठनुं-नेमिनाथनुं, १० बछा दोसीनुं-पार्श्वनाथनुं

अने ११ पार्श्वनाथनुं. आ सर्व देहराओमां प्रतिमा नीचे प्रमाणे हती–७८+२५+२०+१२+४+४६+१५+३४+३६+१५+१०=२९५. फोफलीआ वाडाथी संघ जोगीवाडे गयो.

(ढाल ९ मी)

३३ जोगीवाडो—

आ महोल्लामां ३ त्रण जिनमंदिर हतां. १ पार्श्वनाथनुं, २ विद्याधर शेठनुं अने ३ भोजादोशीनुं–पार्श्वनाथनुं. आ त्रणे मंदिरोमां प्रतिमा २०+३४+१०=६४ चोसठ हती, अहींथी संघ मफलीपुरे गयो.

३४ मफलीपुर--

ज्यां पार्श्वनाथना मंदिरमां १२ बार जिनबिंब वांद्यां, त्यांथी संघ मालीवाडे गयो.

३५ मालीवाडो--

ज्यां श्रीजीरावला पार्श्वनाथ अने २४ चोवीस जिन-प्रतिमा वांदी संघ मांडणने पाडे आव्यो.

३६ मांडणनो पाडो—

मांडणने पाडे त्रण जिनमंदिरो हतां–१ संभवनाथनुं, २ धनराजनुं–पार्श्वनाथनुं, अने ३ शेठ कमलशीनुं शांतिनाथनुं. आ देहराओमां सर्व मली ९+४४+३६=८९ नव्याशी जिन-प्रतिमाओ हती, जे वांदी संघ गदावदाने पाडे गयो.

(ढाल १० मी)

३७ गदावदानो पाडो—

आ पाडामां १ शांतिनाथनुं, २ गला जिनदासनुं—शांतिनाथनुं अने ३ धूपाधूलानुं; एम त्रण देहरां हतां जेमां प्रतिमा ५८+२५+७=९० नेवु हती. अत्रथी संघ मल्लिनाथना पाडामां गयो.

३८ मल्लिनाथनो पाडो—

मल्लिनाथना पाडामां मल्लिनाथ विगेरे १७६ एकसो छहोंतेर जिनप्रतिमा वांदी संघ भाणाने पाडे गयो.

३९ भाणानो पाडो—

भाणाना पाडामां पार्श्वनाथनुं एक देहरुं हतुं, जेमां ९८ अठाणु जिनबिंब विराजमान हतां,ते वांदी संघे समुद्रफडीआ तरफ प्रयाण कर्युं.

४० समुद्रफडीओ—

समुद्रफडीआमां शांतिनाथनुं एक देहरुं अने कुले १९ प्रतिमाओ हती. त्यांथी संघ चोखावटीने पाडे आव्यो.

४१ चोखावटीनो पाडो—

अहीं शांतिनाथ आदि दश जिनप्रतिमा जुहारी साणेसरा ऋषभदेवजीने देहरे जइ आठ जिनप्रतिमाओ वांदी संघसमुदाय बलीयाने पाडे गयो.

४२ बलीयानो पाडो—

बलीयाना पाडामां भगवान ऋषभदेव विगेरे अग्यार जिनबिंबोनी यात्रा करी संघ अबजी महेताने पाडे आव्यो.

४३ अबजी महेतानो पाडो—

आ पाडामां बे देहरां हतां, १ शीतलनाथनुं अने २ शांतिनाथनुं. पहेला देहरामां ७ जिनप्रतिमाओ हती; ज्यारे बीजा देहरानी प्रतिमासंख्या परिपाटीकारे जणावी नथी. हवे संघ कुसुंभीआ पाडामां आव्यो.

(ढाल ११ मी)

४४ कुसुंभीआ पाडो—

ज्यां कुल ४ देहरां हतां–१ शीतलनाथनुं, २ पार्श्वनाथनुं, ३ जगपालनुं, ४ वाछा दोसीने त्यां मोहनपार्श्वनाथनुं. आ ४ देहराओमां सर्व प्रतिमा १९+१२+२०+१७=६८ हती, ते वांदी संघ नाकर मोदीने पाडे गयो.

૪૫ નાકરમોદીનો પાડો—

આ પાડામાં પણ ૪ દેહરાં હતાં જેનાં નામ—૧ પાર્શ્વનાથનું ૨ નાનજી પારેખને ઘરે વાસુપૂજ્યનું ૩ ધરમસીને ઘરે શાંતિનાથનું ૪ સાંડા પારેખનું શ્રીપાર્શ્વનાથનું. આ સર્વમાં પ્રતિમાઓ ૧૧૨+૧૭+૩૧+૩૬=૧૯૬ હતી. જેમાં એક પ્રતિમા રત્નની અને એક સીપની હતી. હવે સંઘ માલૂ સંઘવીને પાડે આવ્યો.

(ઢાલ ૧૨ મી)

૪૬ માલૂ સંઘવીનો પાડો—

અત્ર આવી ૧ મનમોહન પાર્શ્વનાથ જુહાર્યા, એ ઉપરાંત ૨ હેમરાજને દેહરે સુમતિનાથ અને ૩ રાજધર સંઘવીને દેહરે વિમલનાથને વાંદ્યા. આ ત્રણે દેહરામાં પ્રતિમા ૨૬+૨+૫=૩૩ હતી, તે વાંદી સંઘ લટકણને પાડે આવ્યો અને ત્યાંથી ભંડારીને પાંડે થઇ સંઘ ભાભાને પાડે ગયો.

૪૭ લટકણનો પાડો—

લટકણને પાડે શાંતિનાથનું દેહરું અને ૧૨ પ્રતિમાઓ હતી.

૪૮ ભંડારીનો પાડો—

ભંડારીના પાડામાં પાર્શ્વનાથનું દેહરું અને કુલ ૫ પ્રતિમાઓ હતી.

४९ भाभानो पाडो—

भाभाने पाडे १ श्रीपार्श्वनाथनुं, २ तेजपाल शेठनुं-धर्मनाथनुं, ३ सहसकिरणने घरे सुमतिनाथनुं, ४ [illegible]ने घरे शांतिनाथनुं, एम कुले ४ देहरां हतां. जेमां प्रतिमा ५१+१७+२५+६४=१५७ हती. हवे संघ लींबडीने पाडे आव्यो.

५० लींबडीनो पाडो--

आ पाडामां ३ त्रण देहरां हतां–१ सारंगदोसीने घरे सातफणा पार्श्वनाथनुं, २ रायचंद दोसीने घरे शांतिनाथनुं, अने शांतिनाथनुं नवुं देहरुं. आ त्रणेमां प्रतिमा १२+१६+१४=४२ हती, तेने वांदी संघ करणासाहने पाडे गयो.

(ढाल १३ मी)

५१ करणासाहनो पाडो—

करणासाहनो पाडो जे आजे 'कनासानो पाडो' ए नामथी ओलखाय छे, ते घणो महोटो होइ ९ देहराओथी सुशोभित हतो. देहराओनो अनुक्रम नीचे प्रमाणे हतो—१ शीतलनाथनुं, २ वीरा दोसीनुं-श्रेयांसनाथनुं, ३ वीरपाल दोसीनुं-ऋषभदेवनुं, ४ समरथ महेताने घरे पार्श्वनाथनुं, ५ हरिचंदने घरे कुंथुनाथनुं, ६ धरमसीनुं–चन्द्रप्रभनुं, ७ सवजी

संघवीनुं—नेमिनाथनुं, ८ सारंगपारेखनुं - शांतिनाथनुं, ९ कमा शाहने घरे शांतिनाथनुं. आ सर्व देहराओमां ३७+१४+१८ +१८+७+४७+१४+४८+४७=२८० बसो अेंशी प्रतिमाओ हती. जेमां ८ रत्ननी अने १ रूपानी हती, ए सिवाय २ बे पट्टक हता.

करणासाहना पाडाथी संघे बांभणवाडा भणी प्रयाण कर्युं.

(ढाल १४ मी)

५२ बांभणवाडो—

बांभणवाडा—वा ब्राह्मणवाडामां लगभग ८ जिनमंदिरो नीचे जणावेलां हतां—१ वहोरा वीरदासने घरे वासुपूज्यनुं, २ हीरा वीसाने घरे शांतिनाथनुं, ३ सहेसु संघवीने घरे शांतिनाथनुं, ४ महावीरनुं, ५ हीरजीने घरे शांतिनाथनुं, ६ शांतिनाथनुं, ७ विमलसी शेठनुं, ८ पुंआ पारेखने घरे ऋषभदेवनुं. आ सर्व मंदिरोमां प्रतिमा २४+११+७+५+१०+७+ ८+११=८३ हती, जेमां ६ प्रतिमा रत्नमयी हती.

ब्राह्मणवाडानी यात्रा करी संघ खेतलवसही गयो.

५३ खेतलवसही—

ज्यां पार्श्वनाथनुं एक देहरुं हतुं अने तेमां २४७ जिन-

प्रतिमाओ हती, अहीं वंदन करी आपणा यात्रालुओ लटकणने पाडे गया.

(ढाल १५ मी)

५४ लटकणनो पाडो—

आ पाडामां १ गपूदोसीने घरे अजितनाथनुं, २ शा वाह्लाने घरे चन्द्रप्रभनुं, ३ लालजीने घरे संभवनाथनुं, ४ शांतिनाथनुं अने ५ वीरजीने घरे शांतिनाथनु एम कुल ५ देहरां हतां. जेमां प्रतिमा १२+५१+९३+२२+२२=२०० बसो हती, तेमां ६ बिंब रत्नमय हतां, अहींथी संघ कुंरा दोसीने पाडे गयो.

५५ कुंपादोसीनो पाडो—

कुंपादोसीना पाडामां २ देहरां हतां-१ ऋषभदेवनुं, २ मणीआदोसीने घरे पार्श्वनाथनुं. बन्नेमां प्रतिमा ८+२२=३० हती, अहींथी संघ वीसावाडे गयो.

(ढाल १६ मी)

५६ वीसावाडो—

वीसावाडामां १ पुंजा शेठने घरे पार्श्वनाथनुं, २ अमरदत्त सोनीने घरे धर्मनाथनुं, ३ वीसाविमूनुं-पार्श्वनाथनुं, ४ अमरपालनुं-अजितनाथनुं, ५ अने शांतिनाथनुं, एम पांच देहरां हतां.

जेमां प्रतिमा १७+११+१९+४+५०=१०१ हती, तेमां २ प्रतिमा रत्नमयी हती. ए पछी संघ सरहीआवाडे आव्यो.

५७ सरहीआवाडो—

ज्यां ऋषभदेव आदि त्रेवीश जिनप्रतिमा वांदी संघ त्यांथी दोसीवाडे गयो.

५८ दोसीवाडो—

दोसीवाडे हट्टूना घर देहरासरमां भगवान् शांतिनाथने भेटी संघ शांतिनाथने पाडे गयो.

५९ शांतिनाथनो पाडो—

आ पाडामां १ लक्ष्मीदासना देहरासरमां शांतिनाथ विगेरे अने २ संघराजना देहरामां पार्श्वनाथ प्रमुखने वांदी संघ ३ हेमा सरहीआने घरे आव्यो, त्यां पार्श्वनाथ अने बीजी छेंतालीश प्रतिमाओ वांदी ४ शांतिनाथने देहरे गयो, ज्यां ४७ प्रतिमाओ वांदी त्यांथी ५ कबोइया पार्श्वनाथने देहरे जइ पार्श्वनाथ आदि सात जिनप्रतिमाओनां दर्शन कर्यां, आ प्रमाणे शांतिनाथने पाडे ५ देहरे १२+१५+४७+४७+७=१२८ प्रतिमाओ हती. त्यांथी यात्रालुसंघ कटकीआवाडा भणी चाल्यो.

६० कटकीआवाडो—

आ महोल्लामां १ ऋषभदेवनुं अने २ शेठ विमलदासने घरे अजितनाथनुं एम बे देहरां हतां, बन्नेमां प्रतिमा ५५+१४=६९ ओगणसित्तेर हती. ते वांदी संघ आनावाडे गयो.

६१ आनावाडो—

ज्यां नेमिनाथनुं देहरुं अने ३४ प्रतिमाओ हती ते जुहारी संघ सालवीवाडे गयो.

(ढाल १७ मी)

६२ सालवीवाडो—

सालवीवाडाना त्रसेरीआमां १ भगवान् नेमिनाथ अने २ मल्लिनाथनां देहराओमां ८७+७५=१६२ जिनबिंब वांदी संघ कुरसीवाडे शांतिनाथने देहरे आव्यो.

६३ कुरसीवाडो—

ज्यां शांतिनाथ विगेरे ७४ प्रतिमाओ हती तेने वांदीने संघ कइआवाडे आव्यो.

६४ कइआवाडो—

कइआवाडामां १ महावीरने देहरे अने २ रायचंद संघवीने

त्यां वासुपूज्यने देहरे अनुक्रमे ५+१४=१९ जिन वांद्या अने त्यांथी संघ कल्हारवाडे गयो.

६५ कल्हारवाडो—

कल्हारवाडामां शांतिनाथ आदि ५५ पंचावन जिनबिंब जुहारीने संघ दणायगवाडे गयो.

६६ दणायगवाडो—

दणायगवाडे ऋषभदेव आदि ७० जिनबिंब वांदी संघ धांधुलीपाडे गयो.

६७ धांधुलीपाडो—

धांधुलीपाडे सुविधिनाथ आदि ७१ जिन प्रतिमाओने वंदन कर्युं अने त्यांथी उंचे पाडे गयो.

६८ उंचो पाडो—

उंचे पाडे पार्श्वनाथ आदि त्रण प्रतिमा जुहारीने संघ सत्रागवाडा तरफ चाल्यो.

६९ सत्रागवाडो—

सत्रागवाडे पार्श्वनाथ आदि दश जिनबिंबनां दर्शन करी संघे गुंजाणवाडे प्रयाण कर्युं.

७० पुन्नागवाडो—

पुन्नागवाडे पार्श्वनाथ आदि १० जिनबिंब वांदी संघ गोल्हवाडे गयो.

७१ गोल्हवाड—

गोल्हवाडमां ३ देहरां हतां–१ पार्श्वनाथनुं, २ पार्श्वनाथनुं, ३ ठाकर शाहने घरे रत्नप्रतिमावाळुं पार्श्वनाथनुं त्रणेमां प्रतिमा ५+११९+१=१२५ हती ते वांदीने संघ धोलीपरवे गयो.

(ढाल १८ मी)

७२ धोली परव—

धोली परवे ४ देहरां हतां–१ मुनिसुव्रतनुं, २ दूदा पारेखने घरे शांतिनाथनुं, ३ देवदत्त दोसोने घरे चंद्रप्रभस्वामीनुं, ४ रामा सोनीने घरे पार्श्वनाथनुं, एम धोली परवे ४ देहरां अने ५२+५+४७+१८=१२२ एकसो बावीस प्रतिमाओ हती जेमां एक रत्नमयी प्रतिमा हती, ते उपरांत बे पट्ट हता. अहींथी संघ गोदडने पाडे गयो.

७३ गोदडनो पाडो—

अहीं ४ देहरां हतां–१ ऋषभदेवनुं, २ वीसा थावरने

घरे ऋषभदेवनुं, ३ हीरजी दोसीने त्यां पार्श्वनाथनुं अने ४ उदयकरणने घरे ऋषभदेवनुं, एमां अनुक्रमे १७२+१४+१+ +५२=२३९ प्रतिमाओ हती, ते वांदी संघ नाथाशाहने पाडे गयो.

(ढाल १९ मी)

७४ नाथाशाहनो पाडो—

त्यां ६ छ देहरां हतां-१ शांतिनाथनुं, २ वाछा दोसीने घरे चंद्रप्रभनुं, ३ पचु शेठने घरे चंद्रप्रभनुं, ४ सूरजो शेठनुं, ५ रामा दोसीनुं अने ६ रहीआ दोसीनुं, आ देहराओमां प्रतिमा १९०+७०+१६+१५+४९+२९=३६९ हती, जेमां एक प्रतिमा सीपनी हती. ए वांदी संघ महेताने पाडे आव्यो.

७५ महेतानो पाडो—

त्यां मुनिसुव्रत अने वाछा शाहने घरे पार्श्वनाथनुं एम बे देहरां हतां अने तेमां २०+३=२३ प्रतिमाओ हती जे आपणा आ संघे हर्षभेर भेटी.

(ढाल २० मी)

आ प्रमाणे पाटणमां १०१ एकसोने एक जिनचैत्य ए-

टले म्होटा जिनप्रासादो हता अने नवाणु देहरासर अर्थात् छोटां जिनमंदिरो हतां.

उपर जणावेल १०१ महोटां देहरांओमां ५४९७ पांच हजार च्यारसोने सत्ताणुं जिनप्रतिमाओ हती, ज्यारे छोटां ९९ देहरासरोमां २८६८ बे हजार आठसोने अडसठ जिनप्रतिमाओ हतो. ए सर्वमां एक विद्रुम(प्रवालरत्न) नी, बे सीपनी अने आडत्रीश रत्ननी हती.

उपर जणावेल बंने प्रकारनां देहराओनी अने बीजी कुले मळी ८३९४ आठ हजार त्रणसो अने चोराणुं प्रतिमा हती, ते उपरांत ४ च्यार मूर्त्तिओ गौतमस्वामीनी अने च्यार पट्टको हता.

पाटणना सर्व महोल्लाओनां नाम ग्रहणपूर्वक सर्व देहरां अने बिंब संख्या जणावी हवे चैत्यपरिवाडीकार आचार्य ललितप्रभसूरि पाटण शहेरनी पासेनां केटलांक गाम नगरना चैत्योनी परिपाटी पण आ परिवाडीना पेटामां ज लखी जणावे छे.

परिशिष्ट.

(ढाल २१ मी)

१ वाडीपुर—

के जे पाटणनी नजीकमां एक गाम हतुं ज्यां अमीझरा पार्श्वनाथनुं देहरुं हतुं जेमां १ पार्श्वनाथनी अने एक बीजी एम बे प्रतिमाओ हती.

२ दोलतपुर—एमां एक जिनप्रतिमा हती.

३ कुमरगिरि—

कुमरगिरिमां २ जिनमंदिरो शांतिनाथनां हतां—१ खरतरगच्छनुं जेना गंभारामां बे प्रतिमाओ हती अने भमतीमां ५० पचास जिनबिंब हतां. २ जुं चैत्य त्यांनी पोसालमां हतुं जेना गंभारामां शांतिनाथ अने बीजी छत्रीस प्रतिमाओ मळी कुले ३७ प्रतिमाओ हती अने तेज चैत्यमां ४९६ च्यारसो छन्नुं पीतलनां जिनबिंबो हतां.

४ वावडो—

एमां शांतिनाथनुं देहरुं अने १८ अढार प्रतिमाओ हती.

५ वडली—

अहिं खरतरनुं शांतिनाथनुं देहरु अने ४० च्यालीस

प्रतिमाओ हती, एक मूर्त्ति जिनदत्तसूरिनी पण त्यां हती, त्यांज बीजुं देहरुं महावीरनुं हतुं जेमां घणीज सुंदर प्रतिमा विराजमान हती.

६ नगीनो—

एमां पार्श्वनाथनुं देहरुं हतुं जेमां ७ सात प्रतिमाओ हती.

७ नवो नगीनो—

एमां पण श्री शांतिनाथनुं देहरुं अने पिस्तालीश प्रतिमाओ हती, बीजुं बहोत्तेर जिनालय जिनमंदिर नवा नगीनामां हतुं जेमां कुले ७५ पंचोत्तेर प्रतिमाओ हती.

(ढाल २२ मी)

८ कतपुरा—

कतपुरामां बे मंदिरो हतां—१ शांतिनाथनुं अने २ समवसरणवाळुं ऋषभदेवनुं बन्नेमां प्रतिमा १+७=८ हती.

९ रूपपुर—

आ नगरमां १० दश देहरां हतां-१ पार्श्वनाथनुं, २ ऋषभदेवनुं, ३ डुंगर महेताने त्यां अजितनाथनुं, ४ बोघा शेठने घरे चोवीस तीर्थंकरोनुं, ५ गणराज शेठनुं, ६ वस्ता शेठने घरे शांतिनाथनुं, ७ जगु शेठनुं, ८सांडा वहोरानुं पार्श्वनाथनु, ९ रंगा कोठारीने घरे शांतिनाथनुं अने १० कुंअरजी शेठने त्यां शांतिनाथनुं. आ दशे देहरांओमां प्रतिमा

अनुक्रमे १००+२++६६+२४+६२+११+३४+३९+१४+१४=३६७ त्रणसो सडसठ हती.

१० चाणसमा—

आ गाममां श्रीभट्टेवापार्श्वनाथनुं मंदिर हतुं अने तेमां कुल ३४ चोत्रीश प्रतिमाओ हती.

११ कंबोई—

अत्रे पार्श्वनाथनुं देहरुं हतुं ज्यां गंभारामां ५ अने भमतीमां १६, सर्व मली २१ प्रतिमाओ हती.

१२ मुंजपुर—

अहिं एक देहरुं अने त्रण प्रतिमाओ हती.

आ प्रमाणे परिवाडीकार पाटण अने तेनी नजीकना गामोनां देहराओनी हकीकत लखी छेवटे शंखेश्वर पार्श्वनाथना गुण वर्णवे छे.

(ढाल २३ मी.)

शंखेश्वर तीर्थमां केटली प्रतिमाओ छे. अने तेनी ऐतिहासिक स्थिति केवी छे ते बाबतमां परिवाडीकार कंइ पण जणावता नथी.

शखेश्वरनुं वर्णन करी छेवटे ग्रंथकार नीचे प्रमाणे पोतानी गुरुपरंपरानो उल्लेख करवापूर्वक पोतानी ओलखाण आपी प्रस्तुत चैत्यपरिवाडीनी समाप्ति करे छे.

प्रशस्ति अने उपसंहार.

पूनमिया गच्छनी चंद्रशाखामां श्री भुवनप्रभसूरि नामे गुणी आचार्य थया.

भुवनप्रभसूरिनी पाटे कमलप्रभसूरि अने तेमनी पाटे पुण्य-प्रभसूरि नामे आचार्य थया.

पुण्यप्रभसूरिनी पाटे श्रीविद्याप्रभसूरि थया जे पोताना समयमां एक गुणी पुरुष तरीके प्रसिद्ध हता.

ते विद्याप्रभसूरिना शिष्य ललितप्रभसूरि थया के जेमणे विक्रम संवत् १६४८ ना आसोज वदि ४ चोथ अने रविवारने दिवसे आ 'पाटण-चैत्य-परिवाडी' बनावी छे.

आ परिवाडीमां पाटण अने आसपासना गामडाओनां सर्व मलीने ९५९८ नव हजार पांच सो ने अठाणु जिनबिंबोने परिवाडीकारे नमस्कार कर्यो छे.

अंतमां फरिने ग्रन्थकारे पोताना इष्टदेव शंखेश्वर पार्श्वनाथ अने पोताना गुरुने याद करीने पाटण-चैत्यपरिपाटीने पूर्ण करी छे.

मुनि कल्याणविजय.

श्रीललितप्रभसूरि--विरचित

पाटण चैत्य–परिपाटी.[1]

॥ चउपई ॥

सयल जिणेसर प्रणमी पाय । सरसति सहगुरु हईडइ ध्याइ ।
पाटण–चैत्यपरिवाडी कहुं । जिनबिंब नमतां पुण्य ज लहुं ॥१॥
पहिलुं ढंढेरवाडइ नामि । सामला पास करुं प्रणाम ॥
जिमणइ पासइ कलिकुंड पास । मनवंछित सवि पूरइ आस॥२॥
इकत्रीस प्रतिमा बीजी होइ। बीजइ देहरइ वीरजिन जोइ ।
त्रिसला नंदन भेट्या सही । संघ सहू आव्या गहगही ॥ ३ ॥
डावइ पासइ चंद्रप्रभ स्वामि । जिमणइ पासइ लघु वीर ठाम ।
बिसई सात्रीस करुं जुहार । गौतम बिंब एक छइ सार ॥४॥
गोवाल जवहिरी देहरासरि । सात प्रतिमानइं ऊलट भरि ।
वंदी प्रतिमा रत्नमइ एक। दोसी पन्ना घरि सुविवेक ॥ ५ ॥

---

१ आ 'परिपाटी'नी प्राचीन प्रति ललितप्रभसूरिना कोइ शिष्यनी लखेली जणाय छे, तेणे आदिमां 'ॐ नमः सिद्धं । पूज्य श्री गच्छाधिराज भट्टारक श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री ललितप्रभसूरि सद्गुरुभ्यो नमः जिनाय । ' आवो उल्लेख कर्यो छे.

चौद प्रतिमा तिहां वंदी करी । रायमल देहरासर हइइ धरी ।
ऋषभादिक जिन छत्रीस तिहां। एक रत्नमय वली छइ जिहां६
त्रीजइ देहरइ आव्या जाम । पास जिणेसर भेट्या ताम ।
अंजनगिरि कइ मेरु सुधीर । जाणे उन्नत जलधर खीर॥७॥
सतर भेद पूजा सुविशाल । कीजइ भावइं रंग रशाल ।
ऋषभादिक जिन अइतालीस । भगतइं भावइं नामुं शीस॥८॥
सहा धनजी देहरासर दीठ । नयणे अमीय रसायण पईठ ।
ऋषभादिक प्रतिमा इग्यार । चुवीसवटु छइ एक उदार॥९॥
मेलाचिसा देहरासरि आवि । ऋषभादिक बासठि नमुं भावि।
विसा भीमा देहरासर सार । ऋषभादिकजिन त्रीस विचारि
॥ १० ॥

दोसी राजू देहरासर देषि । अठावीस जिनवर हरषइं पेषि ।
रतन संघवी देहरासरि जिणंद । पंचवीस जिन दीठइ आ-
णंद ॥ ११ ॥

॥ वस्तु छंद ॥ सकल जिनवर २ पाय पणमेवि । सरसति सामिणि मनि धरी । सुगुरुपाय पणमेवि भत्तिइं । चैत्यपरिवाडी पत्तनह करुं कवित नवनवी जुत्तिइं । ढंढेरवाडइ जुहारीआ सकल जिणेसर देव । पंच सया छपन्नया तिहुअण सारइ सेव २ ॥ १२ ॥

॥ वीर–जिणेसरचरज० ए ढाल ॥ १ ॥

कोका पारषि देहरासरि ए । आव्या मनरंगिइं ।
वंदी प्रतिमा पंच तिहां ऋषभादिक चंगइ,
देहरइ कोका पासनाह । भेटया जिन होइ ।
शत ऊपरि सात्रीस तिहां । काउसगीआ दोइ ॥ १३ ॥
दोसी श्रीवंत घरि अछइ ए । वासुपूज्य जिणंद ।
इकसठि जिन बीजा अछइ ए । दीपइ दिणंद ।
पाटक खेत्रपालनइ ए । जिन शीतलनाथ ।
सतसठि शत ऊपरि वली ए । भेटई सनाथ ॥ १४ ॥
पारिषि जगू पाडलइ ए । नेमिप्रतिमा जाणउ ।
त्रे बिंब अवर अछइ ए । भवीआं मनि आणउ ।
जयवंतसेठि–देहरासरि ए । शांति पडिमा जोई ।
प्रणमंतां ते हृदयहेजि । सवहीं सुख होई ॥ १५ ॥
एकादश छइ अवर बिंब । रयणमय इक सार ।
षारी वावइं ऋषभजी ए । जिन पडिमा च्यारि ।
गौतम गणहर दोइ बिंब । बीजी षारीवावि ।
सिद्धत्थनंदन भेटीआ ए । तेर प्रतिमा भावि ॥ १६ ॥

॥ तउ चडीउ घणमाण० ए ढाल ॥ २ ॥

नागमढइं हवि आवीआ ए । दीठा नेमि जिणंद तु ।
प्रतिमा नव तिहां दीपती ए। अभिनव जाणि दिणंद तु॥१७॥

पंचासरइ पाटकि अछइ ए । धुरि वीर जिनवर सार तु ।
नव प्रतिमा वंदी करी ए । वासुपूज्य जुहारि तु ॥ १८ ॥
सतावीस बिंब तिहां नमी ए । पंचासरु प्रभु पास तु ।
अवर सात जिनवर नमुं ए । वंछित पूरइ आस तु ॥१९॥
ऋषभ देहरइ हिवइं जिन नमुं ए । दश वलि भमती होइ तु ।
नवइ घरे छइ पास जिन । त्रिहतालीस बिंब जोइ तु ॥ २० ॥
ऊंची सेरी शांति जिन । भणसालीनइं नामि तु ।
अरिहंत त्रेवीस हुं नमुं ए । उसवालानइ ठामि तु ॥ २१ ॥
सोलम जिन छ बिंबस्युं ए । नमतां हुइ प्रेमि तु ।
चंद्रप्रभ भीलडीतणा ए । इक नमतां हुइ षेम तु ॥ २२ ॥
सावकु पासजिन पूजतां ए । हईडइ हरिष अपार तु ।
अवर बावीसइ जिन नमुं ए । पामइ सुख अपार तु ॥ २३ ॥

॥ ढाल गउडीनउ ॥ ३ ॥

पाटक पींपला नामि । शांति जिणेसर च्यारि प्रतिमा अवर नमुं ए ।
अजितादिक जिन सात । चिंतामणि ए साह वछ देहरासर नमुं ए ॥ २४ ॥
विश्वसेन कुलमांहिं चंद । नंद अनोपम अचिरा राणी तेह तणु ए ।
अवर वीस जिण पूजी । आव्या बोजइ ए पास चिंतामणि ए भणु ए ॥ २५ ॥

सतसठि जिनवर होई। प्रणमी आवीइ षराकोटडी जिहां अछइ ए।

आसधीर ठाकर देहरइ। चंद्रप्रभ जिनवर वि प्रतिमा पूजी अछइ ए ॥ २६ ॥

सद्यवछ ठाकर देहरइ। पास जिणेसर वि प्रतिमास्युं परवर्‌या ए। अष्टापद–अवतार।

देषी हरष्या ए चंद्रप्रभजिन गुणि भर्‌या ए ॥ २७ ॥

ओगणसठि जिनबिंब। थंभ अनोपम बिंब रयणमय इक भणुं ए।

षरतरनउं वली चैत्य। सोलम जिनवर बावनजिणालुं तेह तणुं ए ॥ २८ ॥

जुहारी आव्या बीजउ। प्रथम जिणेसर(अ)दभुत मूरति पेखिला ए।

चैत्य बिंना मेली। विसइ विहुत्तरि मातपिता जिन निरषीला ए ॥ २९ ॥

सोनी तेजपाल घरि। पास जिणेसर उगणत्रीस प्रतिमा जुहारीइ ए।

टोकर सोनीगेहि सुमति जिणंदजी प्रतिमा च्यारि उद्धाराइ ए ॥ ३० ॥

॥ ढाल सामेरी ॥ ४ ॥

आव्या पाटकि आंगडीइ रे। ऋषभनइ देहरइ चडीइ ।
जिहां पाप अढारइ नडीइ रे। पुण्यरयणे तिहां वली जडीइ३१
जिमणइ पद्मप्रभ स्वामी रे । पास पूरइ वंछित कामी ।
त्रणि सइं पंच्योत्तरि प्रतिमा रे । निरुपम जेहनउ महिमा॥३२॥
मणिहट्टीनइ देहरइ रे । वीरजिनमहिमा मेर इ ।
प्रतिमा पंच ते जाणउं रे। देवदत्त चैत्य वखाणउं ॥ ३३ ॥
तेर जिणेसर भावी रे । मांका महितानइ पाटकि आवी ।
मृगलंछन जिन रंगइ रे । अवर वीस जिन चंगइं ॥ ३४ ॥
पाटकि कुंभारीइ पेषी रे । सोनी अमीचंद घरि जिन निरषी।
शांतिजिन हइंइ धरिउ रे । सतर जिनस्युं परिवरीउ ॥३५॥
वछू जवहिरी घरि दीठा रे। चुवीस जिनवर बइठा ।
जिनपूजा भावइं कीजइ रे ।समकित लाहउ लीजइ ॥ ३६ ॥

॥ढाल जलहीनउ ॥५॥ त्रिणि पल्योम भोगवी ए ढाल॥

तंबोलीवाडइ आवीआ भावीआ देव सुपास ।
प्रतिमा दीपइ त्रहुत्तरि पूरइ जन-मन आस ।
बीजइ देहरइजिनवर सात नमउ ते सार ।
वुहरा रूपा मंदिरि आदि जिणंद उदार ॥ ३७ ॥
प्रतिमा दश छइ मनोहर सुर नर सारइ सेव ।

मेघा पारषि घरि अछइ चंद्रप्रभ जिन देव।
पांच ज प्रतिमा प्रणमीअ आव्या घूसीनइ गेह।
दोइ जिणेसर वंदीअ कीधा निरमल देह ॥ ३८ ॥
सहासीराज देहरासरि संभव जिनवर होइ।
प्रतिमा विसई पंचावन भवियणभावई जोइ।
षेजडानइ पाटकि सारंग देहरासर तेह।
नव प्रतिमा नमी करी अंबडावाडउ जेह ॥ ३९ ॥
विश्वसेन-नंदन निरषीआ परषीआ नवाणउं देव।
मंडप रचना चउकीअ हइंडुं हरिष्युं ए हेव।
वडी पोसालनइ पाटकि सेठिं सोमानइ गेह।
ऋषभादिक जिन चउत्रीस दीपइ सुंदर देह ॥ ४० ॥
भुजबल सेठि देहरासरि बिंब श्रेयांसस्वामी।
पंचइ पडिमा रयणमइ त्रणि अवर जिन पामी ॥
वाडीअ पुरवरमंडण नयणे निरख्या आज।
बीजा जिनवर पंच ए सारइ वंछित काज ॥ ४१ ॥
सहसा पारषि घरि नमउं पास जिणेसर भावि।
तेर प्रतिमा अवर अछइ ऋषभनइ देहरइ ए आवि।
तेर जिणंद तिहां निरषीआ हरषीआ मानव मन्न।
भावइं पूजा जे रचइ तेहना जनम ए धन्न॥ ४२ ॥

॥ ढाल ऊलालानउ ॥ ६ ॥

पाटकि सहानइ ए आवी । आदि जिणंद तिहां भावी
सत्यासी पडिमा ए देषी ।
रायसिंघ घरि शांति निरषी ॥ ४३ ॥
सत्तरि कंदी बिंब तिहां वंदी । पाप अढारइ निकंदी ।
कंसार वाडइ ए दीठा । शीतल जिनवर बइठा ॥ ४४ ॥
द्वादश बिंब ए नमीआ । आठ महाभय एं शमीआ ।
बीजइ शांतिजिन पूज्या । बावीस पडिमाए बूझ्या ॥ ४५ ॥
सहा चांपानइ घरि । बिंब सोल देहरासरि ।
रयणमइबिंब बइ ठवीआं । चउथा सहा घरि नमीआं॥४६॥
वंध्या पास जिणंद । चउवीस दीपइ दिणंद ।
भला वैद्यनइ पाटकि । चंद्रप्रभ दीपइ हाटकि ॥ ४७ ॥
प्रतिमा बइ नमी भावि । भइंसातवाडइ ए आवि ।
शांति जिनादिक छत्रीस । गोयमस्वामि मुणी श ॥ ४८ ॥

॥ ढाल फागनउ ॥ ७ ॥

सहावाडइ हिवइं आवीइ भावीइ देव सुपास ।
पंच्यासी पडिमा नमी आवीइ देहरइ पास ।
सप्तफणामणिशोभित ओपित देह उदार ।
छसइ बारोत्तर मेटीइ मेटीइ पाप अढार ॥ ४९ ॥

सगरकूइ हवइं जुहारीइ सारीइ पूजा पास ।
पडिमा बीस वंदी करो सेठि पुंजानइ वासि ।
ऋषभादिक जिन त्रीसइ ए दीसइ महिमानिधान ।
जयचंदसेठिनइं मंदिरि सुंदर शांति प्रधान ॥ ५० ॥
तेत्रीस जिनवर निरषीआ हरषीआ भावअण सार ।
हिबदपुरइ हवइं जाईइ गाईइस्तव उदार ।
ऊपरि पंच सोहइ वली मेलो सयल जिणेश ।
पाटक मोढ २नइ ए सोहइ च्यारि दिणेश ॥ ५१ ॥

॥ कनक कमल पगलां ए ढाल ॥ ८ ॥

पाटक नारंगइ आवीआ ए । भावीआ पास जिणंद ।
नारिंग प्रभु भेटीइ ए । भेटइं मंगल होइ । नारिंग प्रभु भेटी०॥
चंद्रवदन तुह्म देषतां ए । हूउ हृदय उल्हास । नारिंग०॥५३॥
सूरिज कोडि थकी घणउं ए । दीपइ तेज प्रकाश नारिंग०५४॥
पूजइं पदमा पामीइ ए । नामइं आठइ सिद्धि ।नारिंग० ॥५५॥
बइयालीस पडिमा परगडी ए । आव्या शोभी गेहि ।
नारिंग० ॥ ५६ ॥
त्रीस ऊपरि बइ सइंवली ए । जुहारी मननइ भावि ।
नारिंग० ॥ ५७ ॥
सोनारवाडइ शांति नमुं ए । पडिमा चऊद उदार ।
नारिंग० ॥ ५८ ॥

बीजइ देहरइ वीरजिनू ए । पोढी पडिमा एक । नारिंग०॥५९॥
फोफलिआवाडइ पढम जिन अट्ठोत्तर जिनबिंब । ना० ॥६०॥
बीजुं देहरुं शांतिनुं ए । पडिमा पंचवीस होइ । ना० ॥ ६१ ॥
देहरइ राजा सेठिनइ ए । वंदउ संभव देव । ना० ॥६२॥
पडिमा वीस तिहां दीपती ए । काछेलानइ चैत्य । ना०॥६३॥
मुनिसुव्रत जिन पूजीइ ए । पडिमा बार विचारि । ना० ॥६४॥
सेठि वीरजी देहरासरि ए। पूजउ पास जिणंद । ना०॥६५॥
पडिमा च्यारि ज सोहती ए । थावर पारषि गेह । ना०॥६६॥
छयालीस पडिमा दीपती ए । सेठि महुला घरि आवि ।
ना० ॥ ६७ ॥
मुनिसुव्रत जिन वंदीआ ए । प्रतिमा पन्नर सार । ना० ॥६८॥
सेठि ककू देहरासरू ए । चउत्रीस पडिमा पास । ना०॥६९॥
सेठि राजा देहरासरू ए । छत्रीस बिंबज नेमि । ना०॥७०॥
दोसी वछा घरि आवीआ ए। पूजीआ पास जिणंद ।
ना० ॥ ७१ ॥
पन्नर पडिमा वंदीइ ए । पंचमइ देहरइ पास । ना० ॥ ७२ ॥
प्रतिमा दस तिहां दीपतीए । वंदी आणी भाव। ना० ॥७३॥

॥ ढाल ॥ वइरसेनराइं व्रत लीउं ए० ॥ ९ ॥

जोगीवाडइ आवीआ ए । प्रभु पासजिणेसर भावीआ ए ।
पडिमा वीस तिहां वंदीइ ए । सयल पाप निकंदीइ ए॥७४॥

सेठि विद्याधर घरि भणी ए। चउत्रीसइ पडिमा जिनतणीए।
दोसी भोजा घरि भणउं ए। श्रीपास जिणेसर हुं थुणउं ए॥७५॥
दस पडिमा तिहां सोहती ए। रयणमइ एक ज मोहती ए।
मफलीपुरि वामातनू ए। बारइ प्रतिमा धन धनू ए॥७६॥
मालीवाडइ दीठडा ए। पास जीराउल बइठडा ए।
बिंब चउवीसइ जिनतणां ए। पूरइ वंछित कामणा ए॥७७॥
पाटक मांडण महितला ए। संभव जिनवर दीठला ए।
नव पडिमा तिहां गुणि भरी ए। सयल लोकनइ जयकरी ए७८
धनराज देहरासर लही ए। पासप्रतिमा वली तिहां कही ए।
चिउंआलीस पडिमा मिली ए। रयणमइ एक ज तिहां वली
ए॥७९॥

सेठि कमलसी देहरासरू ए। शांति जिनेसर मनहरू ए।
छत्रीस पडिमा सुंदरू ए। भविअण जननइ सुखकरू ए॥८०॥

॥ इंद्राणी जिन पुंषीआ ए ढाल ॥ १० ॥

गदावदा पाटकि आवीआ ए। भेटीआ शांति जिणंद तु।
धनधन जिनवरू ए। पेषतइ परमानंद तु। भविअण जगकरू
ए॥८१॥

अठावन जिनवर वंदीआ ए। गला जिणदत्त गेहि तु।
धन २॥जि०॥८२॥

अचिरानंदन निरषीआ ए। पडिमा पंचवीस जोइ तु।
धन २ ॥ जि० ॥ ८३ ॥

धुपा घला घरि हवइं आवीइ ए। परषीआ सात जिणंद तु।
धन २ ॥ जि० ॥ ८४ ॥

पाटकि मल्लिनाथ वंदीआ ए। एक सउ छिउत्तरि देव तु।
धन २ ॥ जि० ॥ ८५ ॥

पाटक भाणानइ आवीआ ए। सेवीआ पास जिन स्वामि तु।
धन २ ॥ जि० ॥ ८६ ॥

अठाणुं जिनवर सुंदरू ए। समुद्र फडीआनइ ठामि तु।
धन० २ ॥ ८७ ॥

विश्वसेननंदन वंदीआ ए। पडिमा अवर अढार तु।
धन० २ ॥ ८८ ॥

पाटक चोषावटी आवीआ ए। शांति ज जिनवर भावि तु।
धन २ ॥ जि० ॥ ८९ ॥

दसजिनवर पूजीआ ए। साणेसर वंदिवा आवि तु।
धन २ ॥ जि० ॥ ९० ॥

ऋषभादिक आठ जिन पेषीआ ए। पाटकि बलिआनइ
भावि तु। धन २ जि० ॥ ९१ ॥

रिसह जिनवर पूजीआए। इग्यारनइ प्रमाणि तु।
धन २ ॥ जि० ॥ ९२ ॥

महिता अबजी पाटकि जाणीइ ए। शीतल जिनवर देव तु।
धन २ ॥ जि० ॥ ९३ ॥
जिनवर सात तिहां अरचीआ ए। लहु देहरइ जिन शांति तु।
धन २ ॥ जि० ॥ ९४ ॥

॥ ढाल ॥ बाहुबलि राणानी० ॥ ११ ॥

कुसुंभीआ पाटकि हिवइं। दीठला शीतल देव रे।
उगणीस पडिमा तिहां जुहारीइ। वारीइ दुरगति देव रे॥९५॥
पेषउ २ श्रीजिनचंद्रा। पामउ २ सुक्ख उदार रे।
भविअ चकोर जिणइ दीठडइ। उल्हसइ हईइ अपार रे। पेषु २
श्रीजिन० आंचली ॥
बीजइ देहरइ हिवइं वंदीइ। पासजिनप्रतिमा बार रे।
जगपाल देहरासरि नमी। पडिमा वीस ज सार रे॥पेषु०९६॥
वाछा दोसी घरि हिवइ पूजीइ। मोहनपास जिनदेव रे।
सोल ज बिंब अवर नमुं। कीजइ २ भगतइं सेव रे॥पेषु०॥९७॥
नाकरमोदीनइ पाटकइं। पूजउ २ पास जिन स्वामि रे।
प्रतिमा शत वली बार भणुं। पहुचइ २ वंछित काम रे॥पेषु०९८
नानजी पारषि घरि वली। पूजु २ वासुपूज्य जिनदेव रे।
प्रतिम सोल अवर अ छइ। धर्मसी घरि शांति देव रे॥पेषु०९९
एकत्रीस जिनबिंब भाव सोउं। वंदीइ हरषि उल्हासि रे।
सांडा पारषि देहरासरइं। वंदउ२ श्रीजिन पास रे॥पेषु०१००

तेत्रीस प्रतिमा अवर भणी । रत्नमय छइ वली एक रे ।
सोपनुं बिंब वलीजुहारीइ । अरचीइ पुष्फि विवेक रे॥पेषु०॥१॥

॥ तरुतलि नरपति छाहडी ए ढाल ॥ १२ ॥

मोहन पास जुहारीइ जी । गाल्हू संघवी ठामि ।
छवीस पडिमा वंदी करो जी । कीजइ जनम सुकाम ॥ २ ॥
सुगुणनर भेटउ श्री जिनराय । हईडलइ भाव धरी घणउ जी ।
आंचली ॥ [पूजउ त्रिभुवनराय ॥

हेमराज देहरासरि भणुं जी । सुमति जिणेसर देव ।
इक पडिमा वली तिहां अछइ जी । त्रिभुवन सारइ सेव ॥३॥सु०
राजधर संघवी घरि थुणुं जी । विमल जिणेसरस्वामि ।
च्यारि प्रतिमास्युं सोहती जी । जईइ लटकण ठामि ॥४॥सु०
शांति जिणंद तिहां पेषीआ जी । बार प्रतिमा वली होइ ।
भंडारी पाटकि हुं नमुंजी । पास पडिमा तिहां जोइ ॥५॥ सु०
च्यारि प्रतिमा वली तिहां कही जी। पाटक भाभानि पास।
इकावन पडिमा पूजीइ जी । पूरइ वंछित आस ॥ ६ ॥ सु०
तेजपाल सेठि देहरासरि जी। धर्म जिणेसर स्वामि।
सतर पडिमा पूजतां जी। सीझइ वंछित काम ॥ ७ ॥ सु०
स .स।केरण घरि निरषीआ जी । सुमति श्रीजिनराय ।
पंचवीस पडिमा अरचीइ जी । पंचायण घरि आइ॥ ८ ॥सु०

शांतिमूरति निरषी करी जी । जिनवर त्रइसठि जेह ।
लींबडी पाटकि आवीइ जी । सारंगदोसी गेह ॥९ ॥ सु०
सप्तफणामणि पासजो रे । बार जिणेसर देषि ।
रायचंद दोसी घरि वली जी । शांति जिणेसर पेषि॥१०॥सु०
सोल प्रतिमा अवर अछइ जी । रयणमयी पडिमा दोइ ।
शांति देहरइ हिवइ आवीइ जी । सोलम जिणेसरजोइ॥११॥सु०
चौद प्रतिमा तिहां वंदीइ जी । लीजइ पूजी लाह ।
नवउ प्रासाद सोहामणउ जी । दीठउ मननइ उछाह ॥१२॥सु०

॥ वीर जिणेसर दीए देसना ढाल ॥ १३ ॥

करणा साहा पाटकि अछइ ए । शीतल जिनवर देव तु ।
पेषिला ऊलट अति घणइ ए । सतसठि जिनवर सेव तु ॥१३॥
पूजीजइ शीतल सुंदरू ए। सुंदरमुख जीसिउ चंद तु । तेजिं दीपइ
दिनकरू ए ॥ आंकणी ॥
दोसी वीरा देहरासरू ए । श्रेयांस जिनवर सार तु ।
तेर प्रतिमा अवर नमुं ए-भेटूं शेत्रुंज-अवतार तु॥ १४ ॥पू०॥
दोसी वीरपाल घरि भणउं ए । ऋषभदयाल जिनदेव तु ।
बिंब अढार अरचीइ ए । महिता समरथ घरि हेव तु॥१५॥पू०
तिहां नमुं वामानंदनू ए । सतर बिंब वली जुहारि तु ।
हरिचंद घरि कुंथु जिणेसरू ए । सात पडिमा मनोहारि तु ॥
॥ १६ ॥ पू० ॥

सहा धर्मसी देहरासरि थुणुं ए। चंद्रप्रभाजिनवर स्वामि तु।
सतालीस पडिमा वंदीइ ए। शवजी संघवी ठामि तु॥१७॥पू०
शिवादेवी नंदन चरचीइ ए। पडिमा चौद उदार तु।
रयणमय पडिमा च्यारि भणीइ ए। तेजतणउ नही पार तु॥१८पू०
पारषि सारंग शांतिजिनू ए। अठतालीस बिंब ज होइ तु।
सहा कमा घरि आवीइ ए। शांति जिणेसर जोइ तु ॥१९॥पू०
सतालीस पडिमा जुहारीइ ए। पट बि तिहां विचारि तु।
रयणमय पडिमा च्यारि कही ए। रूप्पमय एक ज सार तु॥२०पू०

॥ नाचइ इंद्र आणंदस्युं ढाल ॥ १४ ॥

बंभणवाडइ आवीइ। वुहरा वीरदासनइ गेह रे।
वासुपूज्य जिन पूजीइ। जिन चउवीस सुदेहरे ॥ २१ ॥
गावउ २ जिनवर गुणि भरया। पामउ २ सुक्ख विशाल रे।
मनमोहन जिन दीठडइ। हईडइ हरिष रसाल रे ॥ आंकणी ॥
रयणमय पडिमा इक नमी। हीरा विसा घरि जेह रे।
शांतिजिणेसर दस वली। दीठइ निरमल देह रे ॥२२॥गावु०॥
सहिसू संघवी घरि भणउं। मृगलंछन जिनराय रे।
छ जिनवर अवर नम्या। हस्ती चित्र सुठाय रे ॥२३॥गावु०॥
वीर जिणेसर देहरइ। पूज्या त्रिसला पूत्र रे।
च्यारि पडिमा अवर नमी। हीरजी घरि पहूत रे॥२४गावु०॥

अचिरानंदन जिहां अछइ । दस जिणंद उदार रे ।
शांति देहरइ ते जुहारीइ । सात बिंब छइ सार रे॥२५ गावु०॥
विमलसी सेठिनइं घरि वली । आठ बिंब मन मोहइ रे ।
रयणमय जिनवर बिंब तिहां । तेजइं अतिघणुं सोहइ रे॥२६गा०
पारषि पुंआ घरि भणउं । ऋषभजिनंद दयाल रे ।
रजतमय बिंब ज च्यारि अछइ । इग्यार जिन मयाल रे॥२७गा०
षेतलवसहीपासजिनू । दीपइ पूनिमचंद रे ।
विसय सतालीसबिंब नमुं । पेखिला परमानंद रे ॥२८॥गावु०॥
पूजा कीजइ भावसिउं । जिनवर अंगि सुचंग रे ।
सूरीआभइ जिम पूजीआ । सोहमइ मनरंगि रे॥ २९॥ गावु०॥

॥ धनर साधु जे वनि रहइ ए ढाल ॥ १५ ॥

पाटक लटकण आवीआ । दोसी गपू घरि ।
अजित इग्यार पडिमा वली । अरचु पूजु सुपरि ॥ ३० ॥
सुणि २ भवियण प्राणीआ । लाधउ जिनधर्म ।
पूजा भावना भावीइ । ए कहीउ मर्म ॥ आंकणी ॥
सहा वाछा घरि हुं भणुं । चंद्रप्रभ स्वामी ।
एकावन जिनवर निरषीआ । छ रयणमय पामी ॥३१ सु०॥
लालजी घरि सुंदरू । संभवजिन देव ।
त्राणउं बिंब तिहां दीठलां । कीजइ जिनसेव ॥ ३२ सु० ॥

देहरइ शांतिजिन निरषीआ । बावीसइ पंती ।
वीरजी घरि सोलम जिन् । बावीसइ पंती ॥ ३३ सु० ॥
कुंपा दोसी पाटकि आवीआ । रिसहजिन भावउ ।
आठ प्रतिमा तिहां वंदीइ । भावना भावउ ॥ ३४ ॥ सु० ॥
दोसी गणीआ घरि हवइ । पास पडिमा होइ ।
बा वीस जिनवर परषीआ । पंडित जन जोइ ॥ ३५ सु० ॥
सतर भेद जिन पूजीइ । ज्ञातासूत्रइ भाषी ।
जिनवचन हईडइ धरी । द्रूपदी साषी ॥ ३६ सु० ॥

॥ राग मेवाडु ए ढाल ॥ १६ ॥

विसावाडइ पुंजा सेठि घरइं । पासजिन निरष्या रे आज ।
सोल प्रतिमा रयणमय इक वली । दीठइ सरीआं रे काज ॥ ३७
मूरति निरषु रे जिननी भावसिउं । ते नर नारी धन्न ।
जे निजभावइं पूजा आचरइ । ते नर लहइ बहुपुन्य ॥
॥ आंचली ॥ सोनी अमर दत घरि धर्मजिन । पडिमा इग्यार जेह ।
विसा विमूनइ देहरासरि । जिन त्रेवीसमु वली तेह ॥ ३८ ॥ मू०
अवर अढारइ जिन तिहां वंदीइ । रत्नमय एक ज सार ।
अमरपाल देहरासर भणउं । अजितह रयण उदार ॥ ३९ ॥ मू०
प्रतिमा त्रणि वली जिहां अछइ । देहरइ पुहुता रे जाम ।
सोलम जिनवर निरष्या भावसिउं । पंचास पडिमा रे ठाम ४० मू०

सरहीआ वाडइ ऋषभजिणेसरू । त्रेवीस जिनवर जुहार ।
दोसी वाडइं हट्टनइ घरि । शांतिजिन दीठ रे सार॥४१मू०॥
शांतिनाथनइ पाटकि। लिषमीदास देहरासरि जिनशांति।
प्रतिमा बारइ पूजइ भावस्युं। टालइ भवनी भ्रांति ॥ ४२ मू० ॥
संघराजनइ घरि वामानंदन । पन्नर पडिमा रे तांहि ।
हेमा सरहीआ घरि हिवइ आवीइ। त्रेवीसमउ जिन ध्याइ४३मू०
छयालीसपडिमा अवर जुहारी । लीजइ भवनु रे लाह ।
शांतिमूरति सयालीस वली अछइ । टालइ भवनु रे दाह॥४४मू०
पास कंबोईउ ते वलि जुहारीइ । सात ज पडिमा रे सार ।
कटकीआवाडइ रिसह ज पूजीइ । पंचावन जिन उदार॥४५मू०
सेठि विमलदास घरि अजितजिणेसरू । चौदह जिन धन धन्न।
निरषु जिनजी हईइ हरिषस्युं । तसु वली वाध इ वन्न ॥४६ मू०
आनावाडइ रंगइं आवीइ । दीठला श्रीजिन नेमि ।
प्रतिमा चुत्रीस भावइं पूजीइ । जिम पामउ सवि षेम ॥४७मू०॥

॥ ऋषभ घरि आवइ छइ ए ढाल ॥ १७ ॥

आए सालवीवाडइ आवीइ । त्रसेरीआ वली मांहि ।
नेमि जिन जुहारउ जी । राणीरायमइ वल्लहु ।
जीवदया प्रतिपाल ॥ नेमि० ४८
आंचली॥सत्यासी जिन पूजीइ। देहरइ श्रीजिनमल्लि॥नेमि ०४९

पंच्योत्तरि बिंब निरषोआं । कूरसीवाडइ आवि॥नेमि०५०॥
शांतिजिन तिहां परषीआ। अवर बिंब तिहां तेर ॥ नेमि०५१॥
कईआवाडइ वीरजी । प्रतिमा पंच उदार ॥ नेमि० ॥५२॥
रायचंद संघवी वासुपूज्य । बिंब चौद विचारि॥ नेमि०॥५३॥
कल्हारवाडइ शांतिजी । बिंब पंचावन होइ ॥नेमि०॥५४॥
दणायगवाडइ पढम जिण। सत्तरि जिनवर जोइ॥ नेमि०५५
षांधुलि पाटकि सुविधि जिन । एकोत्तरि जिनसार॥नेमि५६
ऊंचइ पाटकि पासजी । जिन नमुं त्रणइ तांहि॥ नेमि०५७ ॥
सत्रागवाडइ जुहारीइ । बिंब नव तिहां पास॥ नेमि०॥५८॥
पुंनागवाडइ आवीइ । दस बिंब पासस्युं होइ ॥ नेमि०६०॥
गोल्हवाडइ श्री पासजी । पडिमा पंच तिहां दीठ ॥नेमि०६१
बीजइ देहरइ त्रेवीसमु । पडिमा शत उगणीस ॥नेमि०॥६२ ॥
रयणमय पडिमा एक वली । ठाकरसाहनइ गेहि ॥ नेमि०६३
पास जिणंद तिहां दीठडा। पूगी मननी आस ॥ नेमि० ॥६४॥

॥ ढाल माई धन्न सुपन्न० ॥ १८ ॥

पेषउ धउली परवइं । मुनिसुव्रत जिन देव।
बावन जिनपडिमा । सुर नर सारइ सेव ।
दूदा पारषि घरि छइ। शांति जिणेसर राय ।
पंचइ जिन नमतां । सुख संपद सवि थाइ ॥ ६५ ॥

दोसी देवदत्त घरि छइ । चंद्रप्रभ जिन स्वामि ।
सततालीस जिनवर । पूजतां शिव ठाम ।
सोनी रामा घरि छइ । पास जिणंद जुहारउ ।
अढारइ जिनवर पूजी । भवभय वारउ ॥ ६६ ॥
बिंब रयणमइ वंदु । तिहां छइ एक ज सार ।
बइ पट्ट अनोपम । दीठइ सवि सुखकार ।
गोदडनइ पाटकि । पूजउ ऋषभ दयाळ ।
जिन सरिषा वरणइं । पेषउ रंग रसाल ॥ ६७ ॥
एकसउ चिउंऊत्तरि । प्रणमंता हुइ प्रेम ।
षिसा थावर घरि छइ । रिषभ करइ ते षेम ।
चौदह जिण पूज्या । तिहां निज उत्तम भावि ।
दोसी हीरजी देहरासरि । हइडइ हरषइं आवि ॥६८॥
पासह जिण निरष्या । तिहां वली ऊलट आणि ।
उदयकरणनइ घरि । ऋषभ जिन अमृत वाणि ।
बावन छइ जिनवर । पूजउ हरषि अपार ।
जिनवर गुण गातां । सुख पामउ बहु वार ॥ ६९ ॥

॥ कुंकुम तिलक ए ढाल ॥ १९ ॥

पाटकि नाथा सहानइं आवउ । शांति जिणेसर भावउ ।
एकसउ नवाणउं देव । हरषिउं हइडउं हेव ॥ ७० ॥

दोसी वछानइ घरि । चंद्रप्रभ देहरासरि ।
सत्तरि जिनबिंब नमीइ । संसारमांहइं न भमीइ ॥ ७१ ॥
सेठि पचू देहरासरि । चंद्रप्रभ जिन सुखकर ।
सोल बिंब तिहां सोहइ । सीपमइ इक मन मोहइ ॥ ७२ ॥
सूरजी सेठि घरि आव्या । पन्नर जिनबिंब भाव्या ।
दोसी रामानइ घरि । ओगणपंचास जिनवर ॥ ७३ ॥
दोसी रहीआ घरि देव । ओगणत्रीस कीजइ सेव ।
महितापाटकि निरषउ । मुनिसुव्रत जिन परषउ ॥ ७४ ॥
वीस जिणंद तिहां जुहारउ । पूजी समकित धारउ ।
सहा वछा घरि पास । त्रण्णि जिन पूरइ ए आस ॥७५॥
जिन सरिषां बिंब जाणउ । पेषी भाव मनि आणउ ।
नियम व्रत सूधउं ए पालउ । समकित रयण अजूआलउ ॥७६॥

॥ ढाल भमारूली ॥ २० ॥

जिन चैत्य इम जुहारीइ तु रि भमारूली । एक सउ एक वषाणि तु ।
अणहल्ल पाटणि एतला तु रि भमारूली । देहरासर वली जाणि तु ॥ ७७ ॥
नवाणुं ते रूअडा तु रि भमारूली । प्रणमउ भगतइं सोइ तु ।
पाप अढारइ छूटीइ तु रि भमारूली । सुख संपद सवि होइ तु॥७८
विद्रुममय बिंब एक भणउं तु रि भमारूली । सीपमय बिंब बे होइ तु ।

रयणमय जिन पडिमा थुणुं तु रि भमारूली । अडत्रीस
ते वली जोइ तु ॥ ७९ ॥
देहरा बिंब जुहारीइ तु रि भमारूली । सहस पंच विचारि तु।
शत च्यारि ऊपरि वली तु रि भमारूली । सत्ताणउं वली
सार तु ॥ ८० ॥
देहरासर जिन पूजीइ तु रि भमारूली सहस वि जिनस्वामि तु।
शत आठ अधिक भण्या तु रि भमारूली । अठसठि
पूरइ काम तु ॥ ८१ ॥
आठ सहस त्रणि शत वली तु रि भमारूली ॥ चउराणुं
जिन जोइ तु ।
गौतम बिंब च्यारि नमुं तु रि भ० च्यारि ज पट्टज होइ तु ८२

॥ ढाल विर जिणेसर वंदीए ॥ २१ ॥

वाडीपुरवर-मंडणउ ए । प्रणमीय २ अमीझरउ पास तु ।
आस पूरइ सयलतणी ए । पूजीइ २ आणी भाव तु ॥

॥ वाडीपुरवर-मंडणउ ए । त्रूटक ।
वाडी-मंडण वामानंदन । सयलभुवनइ दीप ए ।
नमइ अमर नरिंद आवी । सयल दुरजन जीपए ।
अवर बिंबह एक नमतां । भगतशंकट चूरए ।
कुलतपुरि जिन एक नमतां । सयल वंछित पूरए ॥८३॥

कुमरगिरि जिन शांति नमुं ए ।
महिमा ए२ जिनतणउ होइ तु । वाणीइ अमृत सम भणी ए
षरतर २ चैत्य विशाल तु ।

॥ कुमरगिरि जिन शांति नमुं ए । त्रूटक ।

नमुं शांति नवइ जिनवर । भमतीइं पंचास थुणउं ।
पोसालमांहि चैत्य निरूपम । शांतिजिणवर तिहां भणउं ।
छत्रीस बिंब अवर नमीइ । गभारइ ते सुख करू ।
पीतल-पडिमा च्यारि सइं वली । छत्रं ऊपरि मनहरू ॥८४॥
सोलम जिनवर वंदीइ ए । बावडी २ जिनवर सार तु ।
अढारइ पडिमा सुंदरू ए । वडलीय २ षरतरचैत्य तु ।

॥ सोलम जिनवर वंदीए ए ॥ त्रूटक ॥

वंदीइ ते सोलम जिनवर । च्यालीस पडिमा जाणी ।
श्री जिनदत्तसूरी महिमा पूरइ । जगत्रमांहि वषाणीइ ।
श्री वीरचैत्य वंदउ नित्यइं । मूरति अतिसोहामणी ।
नगीनानइ चैत्य आवी । पार्श्वजिन सात ज भणो ॥ ८५ ॥
नवइ नगीनइ आवीइ ए । पेषीइ २ श्री जिनशांति तु ।
पंचतालीस मूरति पूजीइ ए । पूजतां २ आणंद होइ तु ॥

नवइ नगीनइ आवीइ ए ॥ त्रूटक ॥

नगीनइ ते नवइ आवी । बहुत्तरि जिणालुं निरषीइ ।
त्रण मूरति अवर पेखी । सूधउ समकित परषीइ ।

अवर ठामे जेह देहरा । देहरासर पार ज नही ।
भगतिभावइं ऊलट आणी । आदर करि वंदउ सही॥८६॥

॥ गुरूजी रे वद्धामणडुं ए ढाल ॥ २२ ॥

कतपुरि देहरइ दीठडा तु । शांतिजिणेसर भावइ रे ।
एक जिनवर तिहां वंदीआ तु । समोसरण हिवइ आवि रे ।८७
जिनजी रे तुम्ह गुण घणा तु । गातां नावइ पार रे ।
चंद्र किरण जिम निरमला तु । मुगताफल जिम सार रे ।
१॥आंचली॥ पढम जिणेसर पूजीइ तु । सात जिणेसर चंगइ रे।
रूपपुरि रंगइं आवी तु । पास भेटया मनरंगइं रे ॥८८जिन०
छिउत्तरि जिणंद पूजीआ तु । भमतीइं जिन चउवीस रे ।
बीजइ देहरइ ऋषभजिन तु। वइ पडिमा नामउं शीस रे।८९जिन०
महिता डुंगरि घरि भणुं तु । अजितजिणेसर देव रे ।
छासठि जिणंद अरचीइ तु । सेठि बोघा घरि हेव रे।९०जिन०
चुवीस जिणंद निरषीआ तु । सेठि गणराज घरि आवउ रे ।
त्रइसठि जिनवर तिहां अछइ । सेठि वस्ता घरि भावउ रे ॥ ९१
शांति जिणेसर पूजीइ तु । इग्यार जिनवर सार रे ।
सेठि जगू देहरासरइं तु । चुत्रीस जिन उदार रे॥९२॥जिन०
वुहरा सांडा देहरासरि तु । पास जिणेसर देव रे ।
उगणच्याली सइ जिनवरा तु । गौतम कीजइ सेव रे ॥९३।-१

रंगा कोठारी घरि भणउं तु । सोलम जिणेसर स्वामी रे ।
चौद जिनवर तिहां भावीआ तु । सेठि कुंअरजी घरि
पामी रे ॥ ९३ जिन० ॥२॥
विश्वसेन कुल माहइं दिनकरू तु । चौद पडिमा तिहां भावी रे।
अनंत गुण छइ जिनजीना तु । वयणे अमृत श्रावी रे।९४जिन०
चाणसमइ ते पूजइ तु । भट्टेवु श्री पास रे ।
चउत्रीस प्रतिमा निरषतां तु । पूगी मननी आस रे।९५जिन०
कंबोईइ सिरिपासजी तु । पडिमा पंच विचार रे ।
भमतीइ सोल बिंब अछइ तु । मुंजपुरि त्रणिजिन सार रे ॥
॥ ९६ ॥ जिन० ॥

॥ एहवउ रूअडु रे नारिंगपुर ॥ ए ढाल ॥ २३ ॥
मइं भेटिउ रे संखेसर श्रीपासजी रे । ध्यायउ हइंडा मांहि ।
गुणसागर रे २ भविअण जननइं सुखकरु रे ।
जस नामइं रे नवनिधि घरि सवि संपजइ रे ।
आवइ वरण अढार वंदइ रे २ भावइं धरणिंद पुरंदरूरे ॥९७॥
इम स्वामी रे सविजननइ छइ हितकरु रे ।
जोतां आनंद होइ । मुख सोहइ रे २ निरुपम पूनिम चंद जि-
॥ आंचली ॥ [सउ रे ॥ इम०
जस महिमा रे त्रिभुवनमांहइं व्यापीउ रे । नमइ अमरनरिंद ।
पूजइ रे २ व्यंतर ज्योतिष दिवाकरू रे ।

जिन ध्यातां रे मारगि शंकट सवि टलइ रे ।
दुखडां नासइ दूरि ।पामइ रे २ सुखिपद सवि सुहाकरू रे ॥
॥ १८ ॥ इम० ॥

गछि पूनिम रे शाखा चंद्र वषाणीइ रे। श्री भुवन प्रभ सूरि।
गुण रयणे रे २ जलनिधि जिम हुइ गाजतु रे।
तिम सोहइ रे कमलप्रभसूरी सरू रे।
तसु पाटि पुण्यप्रभ सूरि। दीपइ रे २ तेजइं दिनकरराजतु रे
॥ १९ ॥ इम० ॥

तसु पाटइं रे श्री विद्याप्रभसूरी सरूरे । जेहवउ पूनिम चंद ।
नंदन रे २ गुरी माता तेह तणउ रे ।
जिम गगनइं रे तारागणछेह नही रे । गंगा विलू न पार ।
गुण पूरइं रे २ देहभरिओ श्रीगुरुतणउ रे ॥ २०० इम० ॥
ज्ञानइं रै भरीउ जिम हुइ जलनिधी रे ।
षम दम महवसार । कीरति रे २ भूमंडलमांहि विस्तरी रे ।
तसु शीस ज रे ललित प्रभसूरि इम भणइ रे धन धन चैत्य प्रवाहि ।
पाटणि रे २ मनोहर चैत्य ज चिति धरी रे ॥ १ ॥ इम० ॥
संवत रे सोल वली अठतालडइ रे ।
आसो मासि विचारी । बहुल पखि रे २ चउथि तिथि त्रली जाणीइ रे ।

आदित रे वार अनोपम ते कहिउ रे ।
तिणि दिन आदर आणि । भावइं रे २ जिनना गुण वखाणीइ रे ॥ इम स्वामी० ॥
जिन बिंब ज रे जुहार्यां नव सहस सुंदरू रे ।
शत पांचइ विचारि अठाणउ रे २ ऊपरि ते वली हुं भणउं रे । ए सर्व ज रे ।
ग्राम नगर पुर जे कह्या रे धरीआ संख्या मानि ।
अरचूं रे २ आणंद आणी मनि घणउ रे ॥ २०३ ॥

॥ कलश ॥

इम चैत्य-प्रवाडी मनि रूहाडी रची अति सोहामणी ।
श्रीपास पसाइं चित्ति ध्याइं अणहल्ल पाटण तेहतणी ।
श्री सद्गुरु पामी धरउ धामी स्तवन रूपि सुहाकरो ।
संखेसरु श्रीपास स्वामी सयल भुवनइ जय करो ॥ २०४ ॥

इति श्री भट्टारक श्री श्री ४ श्री ललित प्रभसूरि कृता समस्त चैत्य प्रपाटिका संपूर्णा[१] ॥

---

१ संकुडिअजन्हुकुप्पर-नीचकरचरण बंधणावय वउ ।
अणुहवउ तुम्ह वयरी । जं लेहउ पावए सुक्खं ॥
संवत् १६४८ वर्षे पोष मासे बहुलपक्षे १ सोमे मु० गुणजी लिखितं ॥ (चैत्य परिवाडीनी प्राचीन प्रतिनो अन्त्य लेख.)

परिशिष्ट.

पंडित हर्षविजय कृता.

पाटणचैत्य-परिपाटी.

समरीय सरसती सांमनोए, प्रणमी गुरुपाय ।
पाटणचैत्य प्रवाडी, स्तवन करतां सुख थाय ॥ १ ॥
पाटण पुण्य प्रसिद्ध क्षेत्र, पुण्यनुं अहीठांण ।
जिन प्रासाद जिहां घणा ए, मोटइं मंडांण ॥ २ ॥
मुझ मन अतिउमाहलो ए, जिनवंदन केरो ।
पाटण चैत्य प्रवाडी, करतां हरख्यो मन मेरो ॥ ३ ॥
प्रथम पंचासरे जाइइं ए, तिहां प्रासाद च्यार ।
पंचासर जिनवर तणो ए, देखो दीदार ॥ ४ ॥
चोपन बिंब तिहां अतिभला ए, वली हीरविहार ।
प्रतिमा त्रिण सहगुरु तणीए, मूरति मनोहार ॥ ५ ॥
तिहांथी ऋषभजिणंद नमुं ए । बिंब पन्नर गंभारइ ।
एकसो बिंब अतिभलाए, भमतीए जुहारइ ॥ ६ ॥
वासुपूज्यने देहरे ए, बिंब त्रण वखाणुं ।
महावीर पासे वली ए, बिंब चारज जाणुं ॥ ७ ॥

उंची सेरी शान्तिनाथ, प्रतिमा पंचास ।
एक उपर नमतां थकां, पोहचे मन आस ॥ ८ ॥
पीपले सात्रको पार्श्वनाथ, सडसठ प्रतिमा सोहे ।
सडतालीस बिंब शान्तिनाथ, भवियण मन मोहे ॥ ९ ॥
चिंतामणि पाडा मांही, शान्तिनाथ विराजे ।
पचवीस प्रातमा तिहां भलीए, देखी दुःख प्रभाजइ ॥१०॥
बीजे देहरे चन्द्रप्रभ, तिहां प्रतिमा वंदुं ।
दोसत सडसठ उपरे, प्रणमी पाप निकंदुं ॥ ११ ॥
सुगाल कोटडी प्रासाद एक, थंभणो पार्श्वनाथ ॥
धर्मनाथ नइ शान्तिनाथ, शिवपुरीनो साथ ॥ १२ ॥

———o———

ढाल ॥ १ ॥ देशी वाहाणनी । राग मल्हार ॥
खराकोटडीमांहि प्रसाद मनोहररे । के प्रासाद मनो० ।
पंचमेरु सम पंच के, भवियण भयहररे । के भवि० ॥ १ ॥
अष्टापद प्रासादके—चंद्र प्रभ लहीरे । के चंद्र० ।
नवसत उपर सात कि, प्रतिमा तिहां कहीरे । के प्रति० ॥
चंद्रप्रभ प्रसादके, तेर जिणेसररे । के तेर० ।
पास नगीनो षट जिन । साथे दिणेसररे ॥ साथे० ॥ २ ॥
शान्तिजिणंद प्रसाद । देखी मनहरखीएरे । देखी मन० ॥
चोरासि जिन प्रतिमा। तिहां कणे निरखीएरे। तीहां कणे० ३ ॥

आदिनाथ जगनाथनी । मूरति अतिभलीरे । मूरति० ॥
पंचाणु तिहां प्रतिमा । वंदो मनरुलीरे ॥ वंदो० ॥ ४ ॥
आंगडिया वाडामांही । ऋषभ सोहामणा रे । ऋषभ सो०।
बिंब चारसे चार के । तिहां जिनवर तणारे । तिहां जिन० ५॥
दोय प्रसाद कंसारवाडे हवे वंदीए रे । वाडे ह० ।
शीतल ऋषभ नमी सब। दुःख नीकंदीए रे ॥ के दुःखनी० ६ ॥
प्रतिमा तेर अठासी । बेहु देहरा तणीरे ॥ के बेहु० ॥
जिन नमतां घरे। लखमी होय अति घणीरे॥के लखमी० ७ ॥
साहना पाडामांही। ऋषभ जुहारीएरे ॥ ऋषभ जु० ।
प्रतिमा दोसत बासी। मन संभारीए रे ॥ के मन० ८ ॥
वाडीपासतणो। महिमा छे अति घणोरे ॥ के महिमा० ।
वडी पोसालना पाडा। मांही श्रवणे सुणो रे । मांहि श्र० ९ ॥
एकसो सडतालीस। जिहां प्रतिमाय छे रे। के जिहां प्रति० ।
चोमुख वंदी जिनराज। ऋषभ नमीए पछेरे॥ऋषभ नमी०१०॥
दोसतने पणयालीस। जिन प्रतिमा तिहांरे । के जिन प्रति ॥
पंच बंधवनुं देहरु । लोक कहे तिहांरे । के लोक० ११ ॥

ढाल ॥ २ ॥ देशी हडीयानी ॥

देहरासर तिहां एक, देहरासर सुविशेष ।
शेठ भुजबलतणुं ए, के दिसइ सोहामणुं ए ॥ १ ॥

नारिंगपुर वर पास, जागतो महिमा जास ।
दोसत बिंब भलाए, पणयालीस गुण निलाए ॥ २ ॥
अभेडा वाडामांही, शान्ति नमुं उछांही ।
पंचसत जीनवरुए, एकोत्रेरे उपरे ए ॥ ३ ॥
तंबोली वाडा मझार, सुपास नमुं सुखकार ।
एकसो त्रीस सदाए, प्रणमुं जिन मुदाए ॥ ४ ॥
कुंभारीए आदिनाथ, प्रतिमा एकाशी साथ ।
देहरे कोरणीए, तिहां प्रतिमा घणी ए ॥ ५ ॥
सोल प्रतिमा सुखकंद, शान्तिनाथ जिणंद ।
मांका महिता तणे ए, पाडे सोहामणे ए ॥ ६ ॥
मणीयाटी महावीर, मेरुतणी परे धीर ।
चालीस बिंबसुं ए, प्रणमुं भावसुं ए ॥ ७ ॥
तीर्थ अनोपम एह, मुज मन अधिक सनेह ।
दीठे उपजेए, संपदा संपजे ए ॥ ८ ॥

ढाल ॥ ३ ॥

पखालीए रे सेवो श्री शान्तिनाथरे ।
हुं वंदुं रे प्रतिमा तेत्रीश[1] साथ रे ।

---

१ 'तेवीस' एवो पण पाठान्तर छे.

सावाडे रे सांमल पास सोहामणा
बिंब पांचसे रे पासे श्राजिनवर तणा ॥ १ ॥
जिनवर तणा ते बिंब जाणुं । उपर सत्तावन्न ए ।
त्रेवीसमो जिनराज वंदुं । मोहिओ मुज मन्न रे ।
सातमो जिन प्रासाद बीजे । वंदीए ऊलट धरी ।
चालीस उपरे सात अधिकी सोहे तिहां प्रतिमा भली ॥२॥
सोलसमो रे शांतिजिनेसर जगजयो,
भसातवाडे देखी मुझ मन सुख थयो ।
पांसठ जिन रे तिम वली कलिकुंड पासजो,
जीराउल रे पूरे वंछित आसजो ।
आस पुरे गौतम स्वामी, लब्धिनो भंडार ए
सगरकुइ पांत्रीस जिनवर, पार्श्वनाथ जुहारए ।
हबदपुरमां थूभ वदूं जास महिमा अतिघणो,
एकमना जे सेव सारे पूरे मनोरथ तेह तणो ॥ ३ ॥
वलियारवाडे रे, प्रतिमा सोहे सात रे ।
मूलनायक रे, शांतिजिणंद विख्यात रे ।
जोगीवाडे रे, जागतो जिन त्रेवीसमो ।
अठावन रे, प्रतिमासुं भविअण नमो ॥ ४ ॥
नमो ऋषभ जिणंद विजे, देहरे अति सुंदरु ।

छत्रीस प्रतिमा तिहां वंदो, नमे जास पुरंदर ।
बसे छासठ [1] मल्लिजिनवर, मल्लिनाथपाडे मुदा ।
बावन जिन ने बावन प्रतिमा, वंदीए ते सर्वदा ॥ ५ ॥
लखीयारवाडे रे मोहनपास महिमा घणो
बिंब त्रणसे रे एकोत्तर तिहां कण गणो ।
सीमंधर रे स्वामी प्रासाद बासठ जिना ।
बिंब तेरसुं रे, संभव सेवो एकमना ॥ ६ ॥
एकमना सेवो सुमति जिनवर, साठ प्रतिमा सोहती ।
आठ उपरे न्यायसेठने पाडे, जनमन मोहती ॥ ७ ॥
चोखावटीए शांतिजिनवर, छेंतालीस बिंब अलंकर्या ।
दोढसो जिन सुखलीए पाडे, रिषभजिन जग जय वर्या ॥८॥

—०—

॥ ढाल ॥ ४ ॥

अबजीमहेताने पाडे शीतलनाथ,
प्रतिमा सडतालीस । प्रतिमा दोय शान्तिनाथ ।
कोसंबीयापाडे शीतलबिंब अढार,
श्रीपासजिणेसर बीजे देहरे जुहार ॥

---

१ 'बासठ' एवो पण पाठ छे.

जुहारीए जिनवरनी प्रतिमा छासठ[1] मनने रंगे ।
सो प्रतिमा वायुदेवमा[2] पाडामां, धर्मजिणेसर संगे ।
चाचरीयामां पासजिणेसर, प्रणसे नव तिहां प्रतिमा ।
पारेख पद्मा पोळे बत्रीस जिन, फोफलीया[3] नो महीमा ॥१॥
सोनारवाडे सुखदायक श्रीमहावीर, छेतालीस प्रतिमा
पासे गुणगंभीर ।
खेजडाने पाडे शांतिजिनेसर पासे ।
एकसो ने अडत्रीस प्रतिमा वंदुं उल्लासे ॥ २ ॥
उल्लासे वली[4] फोफलीयामां, पास जिणेसर देखुं ।
एकत्रीस प्रतिमा पासे पेखो, पातिक सयल उवेखुं ॥ ३ ॥
संभवनाथने देहरे, दोयसत त्राणु प्रतिमा सोहे ।
शांति जिणेसर देहरे, एकसो त्रेपन जिन मन मोहे ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥

खजुरी मनमोहनपास, एकसो सत्तावन श्रीजिनपास ।
वांदुं मन उलास तो ॥ जयो० जयो० १ ॥
भाभो भाभापांहि बिराजे, चारसे एक प्रतिमा तिहां छाजे

---

१ 'बासठ' एवो पण पाठ छे. २. 'वासुदेवना' पाठांतर) ३. 'चोवदशमीनो महिमा।' (पाठांतर). ४. 'फरी' एवो पण पाठ छे.

महिमा जगमें गाजतो ॥ जयो० जयो० २ ॥
लींबडीई श्रीशांति जिणंद, त्रणसे सात तिहां श्रीजिनचंद ।
दिठइ अति आणंद तो ॥ जयो० जयो० ३ ॥
करणे शीतलजिन जयकारी, प्रतिमा सत नवसो तिहां सारी ।
जनमन मोहनगारी तो ॥ जयो० जयो० ४ ॥
बिंब सतरसु शांति सोहावे, बीजे देहरे मुज मन भावे ।
दरिसणथी दुख जाय तो ॥ जयो जयो० ५ ॥
देहरासर तिहां देहरा सरखुं, पांत्रीस प्रतिमा तिहां कण निरखुं ।
देखी मुझ मन हरख्युं तो ॥ जयो० जयो० ६ ॥
संघवीपोले पास जगदिस, प्रतिमा एकसो ओगणत्रीस[1] ।
पूरइ मनह जगीस तो ॥ जयो० जयो० ॥ ७ ॥
पीतलमे दोय बिंब विसाल, प्रतिमा तेहनी आतसु [illegible] ।
दीसे झाकझमाल तो ॥ जयो० जयो० ८ ॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥

भवि तुमे वंदो रे शंखेश्वर जिनराया ॥ ए देशी ॥

खेतलवसही दोय प्रासादे, पास जिणेसर भेट्या ।
सांमला पासनी सुंदर मूरति, देखत सब दुःख मेट्या रे॥१॥
भवियां भावे जिनवर वंदो ।

---

१ 'एकत्रीस' एवो पण पाठ छे.

श्रीजिनवरने वंदन करतां, होवे अति आणंदो रे ॥ भ० २॥
त्रणसे अठोत्तर जिनप्रतिमा, सामळपासनी पासे ।
श्रीमहावीर पासे ब्यासी जिनवरसुं, वंदो मन उल्लासे रे ॥भ० ३॥
देहरासर तिहां दोय अनोपम, रूप सोवनमय काम ।
सोवन रूप रयणमे प्रतिमा, दीसे अति अभिराम रे॥भ० ४॥
अजुवसा पाडामां प्रतिमा, सत्तोतर सुखदाइ ।
पीतलमे श्रीविमलजिणेसर, वंदो मन लय लाइ रे ॥भ० ५॥
दोसीकुंपाना पाडामांही, ऋषभ जिणेसर सोहे ।
सुखदायक जिन सोल हे सुगुणनर, देखी जन मोहे रे॥भ०६॥
वसावाडे दोय शत अठावीस, शांतिजिणेसर सामी ।
ओगणीस जिनसुं[1] दोसीवाडे, ऋषभ नमुं सिर नामी रे ॥७॥
आंबादोसीना पाडामांही, मुनिसुव्रत जिन सोल ।
पंचहटीए एकसोने त्रेवीस[2], ऋषभजिणंद रंगरोल रे॥भ०८
चीयापाडामां दोय देहरां, शांतिनाथ पार्श्वनाथ ।
एकसो त्रेवीस तेर प्रतिमा, मुगतिपुरीनो साथ ॥ भ० ९ ॥
एकसो छन्नु रिषभजिणंदसुं, प्रतिमा कटकीये वंदी ।
धोलीपरवमां ऋषभ मुनिसुव्रत छेतालीस चिर नंदी रे॥भ०१०

१ 'नेउ जिनसु' ए पण पाठ छे. २. 'वीस' एवो पण पाठ छे.

॥ ढाल ॥ ७ ॥

अविनाशीनी सेजडीए रंग लाग्यो रे० ए देशी ॥

पारिखजगुना पाडामांहि, टांकलो पास बिराजे जी ।
प्रतिमा चोत्रीस चतुर तुम वंदो, दालिद्र दूखने भाजे जी ।
महिमा जगमांहि गाजे जी ॥१॥
किया वोहराना पाडामां,शीतल प्रतिमा तीमपंचवीस जी ।
क्षेत्रपालना पाडामांही, शीतलनाथ नमुं निसदीस जी ॥२॥
जिहां जिनवर छे बसे एकाणु, तिहांथी कोके जइए जी ।
त्रणसे नेउ प्रतिमासु कोको, पारसनाथ आराधुं जी ॥३॥
अभिनंदन देहरे च्यार प्रतिमा,दोय प्रासाद तिहां वांधा जी ।
ढंढेर सामल कलिकुंड पासजी । नमतां पाप निकंध्या जी॥४॥
एकसो व्यासी प्रतिमा रूडी, व्यासी जिन वर्धमान जी ।
महेताने पाडे मुनिसुव्रत, सित्तेर जिन परधान जी ॥ ५ ॥
बसे चोराणु बिंब सहित, श्रीशांतिनाथ प्रासाद जी ।
वखारतणा पाडामां वंदु, मुकी मन विखवाद जी ॥ ६ ॥
दोसत सित्तरि जिनप्रतिमा, वांदी में अभिराम जी ॥
गोदडपाडे रिषभने देहरे, छन्नु बिंब इणठाम जी ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ ८ ॥

हवे शक्र सुघोषा वजावे ॥ ए देशी ॥

सालिवाडे श्रीसेरीयामांही, नेमि मल्लि ऋषभ नमुं त्यांही ।

नवपल्लव नमुं उछांही, जिणेसर ताहरा गुण गाउं ॥
जिम मनवंछित सुख पाउं ॥ जि० १ ॥
साठ उपर सत तिम चार । बीजे देहरे श्रीशांति जुहार ।
बिंब ओगणसाठ उदार ॥ जि० २ ॥
कलारवाडे देहरां दोय, शांति बिंब एकावन होय ।
बावन जिनालय जोय ॥ जि० ३ ॥
पीतलमय बिंब सोहावे, विमलनाथ भविक मन भावे ।
चउ उत्तर चतुरा जिनगुण गावे ॥ जि० ४ ॥
तिण एकसो चोपन जिनराया, ऋषभदेवना प्रणमुं पाया ।
दणायवाडे शिवसुखदाया ॥ जि० ॥ ५ ॥
धंधोलीए संभवजिन साचो, वंदि त्रेपन जिन मनमांहि माचो ।
तुंही जिन जगमांहि साचो ॥ ६ ॥
गोलवाडे श्रीमहावीर, सोवन वान जास शरीर ।
सात प्रतिमा गुण गंभीर ॥ ७ ॥ जि० ॥
दोय शत दस प्रतिमा पास, श्रीशतफणो जिनपास ।
पूरे मन केरी आश ॥ जि० ८ ॥
खारीवावे श्रीजिनवर्धमान, तेर प्रतिमा गुणह निधान ।
जिननामे कोड कल्याण ॥ जि० ॥ ९ ॥
तिहांथी श्रीपंचासरो पास, वंद्या मन धरी अधिक उल्लास ।

पोहती मन केरी आस ॥ जि० ॥ १० ॥
कीधी चैत्यप्रवाडी में सार, मनमांहि धरी हर्ष अपार ।
जिन नमतां जयजयकार, जि० ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ ९ ॥

जिनजी धन धन दिन मुज आजनो ॥
वांद्या श्रीजिनराज हो जिनजी,
काज सर्यां सवि माहरां, पाम्युं अविचल राज हो ॥जि०१॥
जिनजी पंचाशुनइ माजने, श्रीजिनवर प्रासाद हो ।
जिनजी भाव धरी भवि वंदीए, मुकी मन विखवाद हो॥जि०२॥
जिनजी बिंबतणी संख्या सुणो, माजने तेर हजार हो ।
जिनजी पांचसे त्रहोतर वंदीए, सुखसंपत्ति दातार हो ॥जि०३॥
देहरासर श्रवणे सुण्यां, पंचसयां सुखकार हो ।
जिनजी तिहां प्रतिमा रलीयामणी, माजने तेर हजार हो॥जि०४॥
संवत सतर ओगणत्रीसे, पाटण कीध चोमास हो ।
जिनजी वाचक सौभाग्यविजयगुरु, [1]संघनी पोहती आस हो ॥ जि० ५ ॥
जिनजी साहब सुआ-सुत सुंदरु ।
सा रामजी सुविचार हो । जिनजी सुधो समकित जेहनो ।
विनयवंत दातार हो ॥ जि० ॥ ६ ॥

---

१ 'चक' इति पाठान्तर. २ 'साहाव्ये पाठान्तर

जिनजी धरमधुरंधर व्रतधारी, परगटमल पोरवाड हो ।
जिनजी तेह तणे उद्यमे करी,
कीधी में चत्यप्रवाड हो ॥ जि० ॥ ७ ॥
जिनजी तव तीरथमाल घणी, कीधी में अति चंग हो ।
जिनजी साह रामजीना आग्रहे,
मन धरि अति उछरंग हो ॥ जि० ॥ ८ ॥
जिनजी तवन तीरथमालातणुं, भणे सुणे वली जेह हो ।
जिनजी यात्रातणुं फल ते लहे, वाधे धरमसनेह हो ॥ जि०॥९।
जिनजी श्रीविजयदेवसूरीसना, पाट प्रभाकर सूर हो ।
जिनजो श्रीविजयप्रभसूरि जग जयो ।
दिन दिन चढते नूर हो ॥ जिनजी धन० ॥ १० ॥
जिनजी श्रीविजयदेवसूरींदना, साधुविजय बुध सीस हो
जिनजी सेवक हरषविजयतणी, पूरो मनह जगीस हो ॥११॥

॥ कलश ॥

इम तीरथमाला गुणविसाला, प्रवर पाटण पुर तणी ।
में भगति आणी लाभ जाणी, थुणी यात्राफल तणी ॥
तपगच्छनायक सौख्यदायक, विजयदेवसूरीसरो ।
साधुविजय पंडित चरणसेवक, हर्षविजय मंगल करो ॥१॥

इति पाटणचैत्य-
प्रवाडी संपूर्ण.

पं. हीराकालनिर्मिता

श्रीपत्तनजिनालयस्तुतिः ।

रचना विक्रमसंवत् १९५९

नत्वाऽऽदिदेवं वृषभध्वजं च, कल्याणवल्लीप्रवरांबुवाहम् ।
कुर्वे स्तुतिं सर्वजिनालयानां,मुक्तिप्रदां पट्टनपूःस्थितानाम्॥१॥
पाडे मार्फतियाह्वे मुनिसुव्रतविभुं भूमिनाथैः सुसेव्यं,
वंदे वृंदारकेंद्रैः स्तुतमवनितले मोक्षदानैकदक्षम् ।
वामेयं पार्श्वनाथं शठकमठगजागर्वभेदैकसिंहं,
नाम्ना श्रीभीडभंजं मुनिगणमहितं तीर्थनाथं नमामि ॥ २ ॥
वंदे ढंढेरवाडे जगति जनगणे श्रेयसामर्पणोत्कं,
पार्श्वं श्रीकंकणाह्वं प्रकटमहमथ श्रेयसे ज्ञातपुत्रम् ।
एवं पार्श्वं च नौमि त्रिदशपतिगणैः सेवितं शामलाह्वं,
बिंबं यस्यास्ति तुंगं भविकजनगुणाल्हाददं भावभक्त्या ॥३॥
वयं नमामो पडिगुंदीपाडे, श्रीशीतलं तीर्थकरं सुभक्त्या ।
सुरासुरेंद्रैः परिसेव्यमानं, मोक्षश्रियः केलिविलासगेहम् ॥४॥
संसाराग्निप्रतापप्रमथनसबलं शीतलं शीतलाख्यं,
मोक्षार्थं मोक्षमार्गप्रदमहमधुना तीर्थनाथं नमामि ।
भक्त्या प्रासादसंस्थं सुरवरमहितं क्षेत्रपालाख्यपोले,
भव्यानंदप्रदानप्रवणमथ सदा सर्वलोकैकबंधुम् ॥ ५ ॥
कोकापाडे नमामि श्रुतबलकलितैर्भव्यलोकैः सुसेव्यं,

कोकापार्श्वाभिधानं सकलसुरगणैः सेव्यमानक्रमाब्जम् ।
श्रीढं तीर्थाधिराजं भवजलतरणे यानपात्रं गुणाढ्यं,
भक्त्या वंदेऽभिनंदं जिनपतिमखिलप्राणिसौख्यैकलक्ष्म् ॥६॥
नमामि कोटापुरवासिधर्मशालास्थितं स्थंभनपार्श्वनाथम् ।
श्यामच्छविं मेघमिवात्र भव्यकलापिनां मानसमोददं च ॥७॥
वंदे पंचासरं वै सुमतिजिनपतिं ज्ञातपुत्रं च गोडी-
पार्श्वं चिंतामणिं चाजितजिनपतिमत्राहमौचित्ययुक्तः ।
नौमि श्रीधर्मनाथं वरतरनवलक्षाभिधानं च पार्श्वं,
चातुर्मुख्या स्थितं चामरनरनिकरैः सेव्यमानं जिनेंद्रम् ॥८॥
श्रीहीरसूरेर्जयदेवसूरेः, श्रीसेनसूरेः शीलगुणसूरेः ।
नमामि बिंबानि गतानि तत्र, ससारवारांनिधनौनिभानि ॥९॥
अष्टापदाख्येऽथ जिनालयेऽहं, सुपार्श्वनाथं प्रणमामि भक्त्या ।
चंद्रप्रभं चंद्रनिभं जनानां, मनोगतानंदसुधार्धिवृद्धौ ॥ १० ॥
खडाकोटीपाडे विमलमतितोऽहं जिनपतिं,
स्तुवे शांतिं शांतिप्रदमवनिगानां तनुभृताम् ।
तथैवं वंदेऽहं प्रथमजिननाथं तमभितो,
द्विपंचाशज्जैनालयकलितजैनायतनगम् ॥११॥
नारंगाभिधपार्श्वनाथमवनौ नौमि प्रमोदप्रदं,
झव्हेरीत्यभिधानवाडगमहं श्रीवासुपूज्यं तथा ।
नाभेयं च नमामि सर्वजनतासंसारतापापहं,
शांतिं शांतिकरं तथैव जिनपं, श्रीवाडिपार्श्वाभिधम् ॥ १२॥

शावाडे प्रणमामि भक्तिभरतो रक्तं च मुक्तिस्त्रियां,
श्रीनाभेयममेयकीर्तिकलितं संसारसंतारकम् ।
मारी येन निवारिता जिनपतिं तं नौमि मुक्त्याः पतिं,
श्रीशांतिं जगतां जनोपकरणप्रावीण्यबद्धस्पृहम् ॥ १३ ॥
भक्त्यान्वितासु जनतासु नतासु तासु,
कारुण्यभावकलितं कलितं सुबोधैः ।
शावाडगं जिनपतिं प्रणमामि भक्त्या,
बोधैकदानबिबुधं विबुधोपसेव्यम् ॥ १४ ॥
जिनं सुपार्श्वनाथं च, पार्श्वं तु शामलाह्वयम् ।
भव्याब्जप्रकरे लोके, बांधवं लोकबांधवम् ॥ १५ ॥
वंदे शांतिं जिनपतिमथो शस्तभेंसातवाडे,
भक्त्या युक्तः कविशिशुरहं शांतिनाथं सनाथम् ।
नाथेन श्रीवरगणभृतां चात्र चंद्रप्रभेण,
प्रासादे वै सुरनरगणैः सेवितं गौतमीये ॥ १६ ॥
श्रीशांतिनाथं नरनाथसेव्यं, सनाथतां प्राणिगणे भजंतम् ।
स्थितं च वंदे तरभेडवाडे, संसाररोगव्यथनैकवैद्यम् ॥१७॥
वंदे जिनं श्रीपतिमादिदेवं, भक्त्या युतः खेजडपाडसंस्थम् ।
यस्योपरि प्राज्यतरातपत्रं, रौप्यं च मुक्त्यस्तकटाक्षतुल्यम् ।१८।
कर्पूरमेताभिधशस्यपाडे, स्तुवे जिनेशं वृषभध्वजं च ।
कर्माग्निदाहैकजलाभिषेकं, कषायवृक्षेषु दवाग्नितुल्यम् ॥१९॥
तंबोलिवाडे प्रभुमानमामि, श्रीवर्द्धमानं च सुपार्श्वनाथम् ।

कुंभारपाडे प्रभुमादिदेवं, पार्श्वं भटेवाभिधमाप्तमुख्यम् ॥२०॥
शांतिं नौमीह भक्त्या जिनपतिममलं डंकमेताहपाडे,
कर्मारिध्वंसवीरं सकलजनहितं टांकलापार्श्वनाथम् ।
श्रीवीरं वै जिनेशं प्रथमजिनपतिं चात्र मण्यातिपाडे,
कूटं नाम्ना सहस्रं वरतरनगरश्रेष्ठिसंनिर्मितं च ॥ २१ ॥
कर्मारामप्रहारप्रवरगजपतिं मोक्षरामाभिलाषं,
संसारापारवारांनिधिगलनविधौ कुंभजातं जिनेशम् ।
उच्चैः पोले नमामि त्रिदशगणनतं स्वर्णकारस्य पाडे,
श्रीवीरं शांतिनाथं स्तुतमवनितले नाकिनाथैश्च वन्द्यम् ॥२२॥
शांतीशं चाद्यवीथ्यां जनगणभृतफोफलियाह्वे हि वाडे,
वीथ्यां वै चोधरीणां यदुकुलतिलकं नेमिनाथं नमामि ।
पार्श्वं मनमोहनाख्यं तदभिधवरवीथ्यां गतं शंखपार्श्वं,
वीथींगं संभवं वखतजित इतः सुव्रतस्वामिनं च ॥ २३ ॥
श्रीयोगीवाडेऽद्भुतकांतिमूर्त्तिं,नमामि वै श्यामलपार्श्वनाथम् ।
श्रीमल्लीपाडे किल मल्लिनाथं कषायमल्लं प्रतिमल्लनाथम् ॥२४॥
नमामि भक्त्या लखीआरवाडे, पार्श्वं जिनेंद्रं मनमोहनाख्यम् ।
जिनाधिराजं मुनिसुव्रतं च, सीमंधरस्वामिनमाप्तमुख्यम्॥२५॥
तमजितमभिवंदे केसुनामेभ्यपाडे,प्रथमजिनपतिं वै चोखवट्टीयपाडे
सुरगणनतपादं शांतिनाथं जिनेंद्रं,जिनमतकजसूर्यं धर्मनाथं च नौमि
सुमतिजिनपमीडे पाठशालाख्यपाडे,

वृषभविभुमपीह स्वर्णवर्णाढ्यदेहम् ।
स्थितमभिनतलोकं पाटके बल्लियाले,
भविककमलबोधे लोकबंधुं जिनेशम् ॥ २७ ॥
सद्भक्त्या प्रणमामि शीतलमहं पाडेऽङ्जिमेताभिधे,
तीर्थेशं च कसुंबियागमभितो वंदे सदा शीतलम् ।
गोडीपार्श्वमथो नमामि किल संघेशाख्यपाडे स्थितौ,
मन्मोहाभिधपार्श्वनाथ–विमलौ नैर्मल्यदानक्षमौ ॥ २८ ॥
भक्त्याहं वासुपूज्यं जितमदनमथो वासुपूज्याख्यवीथ्यां,
खजूरीपाटके चामरगणमहितं मोहनं पार्श्वनाथम् ।
भाभापाडे नमामि त्रिजगदधिपतिं पूज्यभाभाख्यपार्श्वं,
शांतं श्रीशांतिनाथं शमसुखसहितं लींबडीपाटके च ॥ २९ ॥
प्रासादे निर्जरेशालयनिभकलकांतौ कनाशाह्वपाडे,
नानाचित्रैर्विचित्रैर्हृतजनहृदये कल्पसौंदर्यकल्पे ।
तीर्थेशं शांतिनाथं स्फटिकमणिमयं दिव्यकांत्या सनाथं,
वंदे श्रीशीतलाख्यं त्वहमहमिकयाहं जिनं देवसेव्यम् ॥३०॥
तत्रैवाहमथ प्रणौमि जिनपं श्रीशांतिनाथाभिधं,
प्रौढे जैननिकेतने स्थितमरं देवेशसंपूजितम् ।
पार्श्वे तस्य नमामि नाभितनयं संसारसंतारकं,
श्रीवीरं च नमामि भक्तिभरतः कर्माग्निधाराधरम् ॥ ३१ ॥
नाम्ना श्रीशांतिनाथं समुदमहमथो वापनाख्ये हि वाडे,

तीर्थेशं प्रौढभक्त्या सकलसुरनराधीशसेव्यं जिनेन्द्रम् ।
कर्मारामाग्नितुल्यं जितमदनभरं सर्वलोकैकबंधुं,
संसारापारवारांनिधिगतजनतातारणे यानपात्रम् ॥ ३२ ॥
भक्त्याहं क्षेत्रवस्यां जिनपतिमभितः श्रीमहादेवपार्श्वं,
शांतिं संघेशचैत्यं प्रथमजिनवरं श्यामलाख्यं च पार्श्वम् ।
संसारांभोधियानं त्वजितजिनपतिं नौमि योगींद्रनाथं,
क्रोधादिप्रौढवैरिप्रकरविदलने शूरवीरावतंसम् ॥ ३३ ॥
नौमीह शांतिं त्वदुवस्सिपाडे, नाभेय–शांती च वसाख्यवाडे ।
पंचोटीपाडे जिनमादिदेवं, वागोलपाडे वृषभं जिनं च ॥३४॥
कंबोइपार्श्वं किल घीयपाडे, शांतिं च तत्रैव जिनं नमामि ।
आदीश्वरं वै कटकीयपाडे, मोक्षप्रदं मोक्षगतं जिनेशम् ॥३५॥
महालक्ष्मीपाडे मुनिसुव्रततीर्थेशमधुना,
तथा कोटावालिप्रवरधनिकामार्गमिलितम् ।
जिनं शांतिं वंदे सकलसुरसंघातमहितं,
तथैवं वामेयं शठकमठसंतापहरणम् ॥ ३६ ॥
आदीश्वरं गोदडपाटकेऽहं, गणाधिनाथं किल पुंडरीकम् ।
भक्त्या नमामीह च नेमिनाथं, चतुर्मुखं तीर्थकरेंद्रबिंबम् ॥३७॥
वखारपाडे प्रभुशांतिनाथं, चंद्रप्रभं तीर्थकरं नमामि ।
दृष्ट्वा प्रभां तज्जिनमंदिरस्य, चित्रं जनौघोऽनिमिषत्वमाप॥३८॥
वंदे श्रीनेमिनाथं यदुकुलतिलकं शांति–धर्मौ च मल्लिं,

वाडेऽहं शालवीनां जिनपतिवरशांतिं च कल्लारवाडे ।
वाडे नारायणे वै प्रथमजिनपतिं धांधले संभवं च,
गोलावाडे च पार्श्वं सुरनरमहितं चंपकाख्यं च पार्श्वम् ॥३९॥
आदीश्वरं च किल टांगडियाख्यवाडे,
शांतिं नमामि विदिताखिललोकबोधम् ।
वंदे सहस्रफणिमंडितपार्श्वनाथं,संसारतापपरिखेदसुवारिवाहम् ४०
शांतिं च चारुगिरिनारपटं नमामि, शत्रुंजयस्य पटमत्र सहस्रकूटं।
बिम्बं चतुर्मुखजिनस्य गिरिं च मेरुं,रत्नेषु धर्ममितपादगणं गणिनाम्
एवं नमंति जगतीह च ये मनुष्या,जैनालयांश्च वरपट्टनसंस्थितांश्च
नानागृहस्थगृहगांश्च तथा ह्यनेकान्
जैनालयानिह हि ते किल मुक्तिभाजः ॥ ४२ ॥
प्रौढं प्रवर्तकपदं परितो गतानां,
प्राप्याशु कांतिविजयाख्यमहामुनीनाम् ।
आनंदसूरिपरिवारकजार्कभानामादेशमत्र किल हंससुतेन भव्यम्॥
जिनेशानामेवं स्तुतिरिह मया पट्टनपुरे,
गतानां चैत्येषु स्वहितकृतये संविरचिता ।
हिरालालाह्वेन ग्रह–विशिख–निध्यब्जमिलिते,
शुभे वर्षे ह्यस्मिन् सपदि वसता जामनगरे ॥ ४४ ॥
[इति श्रीपत्तनजिनालय–स्तुतिः]

॥ तीर्थराज चैत्यपरिपाटी स्तवनं ॥

कर्ता. साधुचंद्र मुनि.



प्रणमिय रिसह जिणंद पुंडरिक गणहर सहिय ॥
विरचिसु चैत्र प्रवाडि, संघह सरसी जिम विहिय ॥ १ ॥

भास

पहिलउ विक्कमपुर नयर, जिह सिरि नाभि मल्हार ॥
बीजइ जिणहरि वंदियइ ए, तिळसासुय सुविचार ॥ २ ॥
सिरि ऊपशाह मंडणउ ए, सामिय वीर जिणंदा ॥
तिमरियपुरवर सुहकरण, पासनाह जगि चंद ॥ ३ ॥

भास

ओधनयर सिरि कुंथुनाथ, विहिचेइय मंडण ॥
पास संति बे वंदियइ ए, दुह दाह विहंडण ॥ ४ ॥
गूढानयर सिरि कुंथुदेव, भवजलनिहि तारण ॥
बीजइ जिणहरि पूजीयइ ए, सीतल सुहकारण ॥ ५ ॥

वस्तु

पास जिणवर पास जिणवरि, नयरि जालउरि,
आदीसर पहु भेटियए, सयल सुख संपत्ति कारण;
अचिरानंदण संति जिण, भविय लोइ दुहतावचंदण ।
हरिकुल अंबर सहसकर, सामिय नेमिकुमार,
वीर जिणेसर भवणगुरु, तिहुयण तारणहार ॥ ६ ॥

भास

थाणापुर सिरि वद्धमाण, निभइ भयवारण।
मुणिसुव्वय पहु पूजीयइ ए, गइनिज्जियवारण ॥ ७ ॥
नाराद्रइ सिरि वीरनाह, भवतिमिर दिणेसर।
ओढापुर मुखमंडणउए, सिरि वीर जिणेसर ॥ ८ ॥

ढाळ

सीरोही सुरपुर अवतार, गढमढ मंदिर पोलि पगार।
कणयकलस धजदंड विसाल, दीसइ देउल नयण रसाल ॥९॥
खरतरवसहि संतिजिणंद, भविय-कमल पडिबोहदिणंद।
त्रिहु चेइ सिरि आदिजिणंद,अजियनाह किरि पूनिमचंद॥१०॥

भास

नाभिराय-घरि सोहलउ ए, सामिय रिसह जिणंद।
मंकोडइ थिरथी रह्यउ ए, तिहुयण नयणाणंद ॥ ११ ॥
मंडवाडि पहु पासजिण, कज्जल कोमळ काय।
नीतोडइ सिरिआदिपहो, सुरनर वंदिय पाय ॥ १२ ॥
पोसीनइं सिरि पढमजिण, बिहुं चेइ सिरि संति।
पास वीर रंगि पूजीयइ ए, टालइ निज मनि भ्रंति ॥१३॥
मटोडइ महिमानिलउ ए, सोहग सुंदर पास।
महावीरपहु आगियइ ए, तोडइ भवदुह पास ॥ १४ ॥
नयर वडाली संतिजिण, तिहुयण पणमिय सामि।
इडर नयरइ दुन्नि जिण, रिसह पास सिवगांमि ॥ १५ ॥
चंदप्पहपहु भेटियइ ए, ओडा नयर मझारे।
अट्ठ कम्म अरि निज्जणीय, जो पहु गउ भवपारे ॥ १६ ॥

वस्तु

वडहनरइ वडहनरइ आदि पहु वीर,
जीवतसामिय लेपमय, कणयवन्न पादुका रयण,
वालउ वेउल मालतिय, पमुह फुलतोडर रयवि।
कुंकुम चंदन मइ नविय, पूज रचावउ भंगि।
भावन भावउ विवहपरि, जगगुरु आगलि रंगि ॥ १७ ॥
वीसलनयरइं आदि वीर, मणवंछिय सुरवर।
महिसाणे पहु पास संति, सिरि आदि सुमतिवर ॥१८॥
जोटाणइ पहु पासनाह, सिरि सुमति जिणेसर ।
सूंआलइ सिरि नेमिदेव, भवभय वणकुंजर ॥ १९ ॥
वीरमगामइ सुमति संति, जांबू मुनिसुव्रत।
टोडरगामइ पासनाह, बहु लोयां सम्मत ॥ २० ॥
भोइकइ सिरिआदिनाह, रंगपुरि पहु पासो ।
धंधुकइ सिरिपंच संति, वंदउ वलि पासो ॥ २१ ॥

वस्तु

वलहनयरि वलहनयरि संति जिणराउ,
चम्मारिपुरि संतिजिण, भवियलोअ लोयण मिसायर,
पालिअताणइ पासपहो, विहिय सेव सुर असुर किन्नर ॥
ललियसरोवर हरखभरि, सामिय वीर नमेसु ।
अंग पखालि विमल जलि, पावपंक टालेसी ॥ २२ ॥
गहगहंत विव गिरि चडिय, पाजइ परमाणंद॥
दह दिसि पसरिय विवह परे, सिदवार मचकुंद ॥२३॥
कोइल करइ टहूकडा ए, विहसिय सुह वणराय ।

परवइ परबइ लइलियए, सीतल वायइ वाय ॥ २४ ॥
मरुदेवा गइवर चडिय, अविरानंदण संति ।
छीपकवसहिय वंदियइ ए, अदबुद सोवन कंति ॥ २५ ॥
अनुपम सरवर पेखियइ ए, सरगारोहिणि चंग।
वाविणि निरखी बारणइ ए, रोमंचिय मह अंगि ॥ २६॥

वस्तु

आदि जिणवर आदि जिणवर नमिय बहु भत्ति,
देवासुर संथुणिय कुमयमोहमहिमा विहंडण;
खरतरवसहिय पढमजिण, नेमिनाह गिरनार मंडण ।
रायणतलि हिव पूजियइ, सामिआदिल-पाइ,
नाग मोर बे ध्याइयइ, जे हूआ सुरकाइ ॥ २७ ॥
इणिपरि यात्रा विमलगिरे, कीधी मन उल्हासि ।
कवडजक्ष-सुपसाउलइ ए, टलइ विघन दुह रासि ॥ २८॥
पाटण पहवइ वरनयर, जिह विससेण मल्हार ।
अवर बिंब बहु वंदियइ ए, तिहां न लाभइ पार ॥ २९ ॥
सिरि संभवपहु वाविपुरे, लोद्राडइ सिरिसंति;
फीवोवनयर सिरिवीरजिण, जसु पसाइ सुह संति ॥३०॥
तेत्रीस वच्छर विगयमच्छर ठामि ठामि जिणेसरा ।
निय भाव सत्तिहि विविह भत्तिइ भविय कमल दिणेसरा ।
बहु संघ साथइ देवराजइ वच्छराजि नमंसिया।
ते देव सुहभर जावडू थिर श्रीसाधुचंद्रि प्रसंसिया ॥३१॥
॥ इति तीर्थराज चैत्यपरिपाटी स्तवनं ॥



॥ नवकार वाली पद ॥

राग भीम पलास.

भला करे फीर मुर्शदमौला, अल्ला पंढरपुरवाला—ए चाल.
भला होयगा भजले माला, टल्ला भवखानेवाला-ए आंकणी
नही लगती कुछ दमडी कवडी, रटनेमें प्रभु गुण ठाला,
माला बनाले गुणको गाले, छोड कर दुनिया चाला
॥ भला० ॥ १ ॥

सूत प्रभुखकी गुंथ के माला, ॐकार जप ले लाला;
ॐकारमें पंच परमेष्टी, हे माला गुणने वाला ॥ भला० ॥२॥
अष्टोत्तर शत हे गुण इनके, उतने मणके कर व्हाला,
हंस कहत है सुण बे प्यारा, घटमें धर ले गुणमाला ॥भला० ३॥

॥ कार्तिक पुनम महिमा गर्भित श्री सिद्धाचल-स्तवन ॥

अबमोहे डांगरियां हे जिनंदजी, ए देशी.

सिद्ध गिरि शणगार, सुगुणनर सिद्धगिरि शणगार;
दशकोटी अणगार, सु० ॥ ए आंकणी ॥
ऋषभदेवना पुत्र पनोता, द्रविड नाम भुपाल. सु०
जेना नामथी द्रविड देश छे, हालमां करलो ख्याल. सु० सि०॥१॥
मुख्य राजधानी छे तेहनी, मिथिला अति मनोहार. सु०

तेहना राजा प्रपुत्र प्रभुना, द्राविडजी सुखकार. सु०॥सि०॥२॥
वारीखील्य लघु बांधव तेहना, लाख गाम सिरदार. सु०
राज्य ऋद्धि छोडी बन्ने भाइ, उतरवा भवपार. सु०॥सि०॥३॥
चारण मुनिवरनी शिक्षाथी, लेइ दीक्षा तत्काळ. सु०
अणसण कर्युं एक मासनुं सुंदर, छोडी सकल जंजाल. सु०सि०४
शरदपुनमथी कार्तक सुदनी, पूनम सुधीनुं सार सु०
आत्मध्यान धरी मोक्ष सधाया, दश कोटी मुनि लार. सु०सि०५॥
ते कारण कार्तक पुनमनो, महिमा अपरंपार. सु०
महितलमां विस्तरीयो छे बहु, मेलो भरे नरनार. सु०सि०॥६॥
वली कार्तकी अट्ठाइ परवरूप, देरी उपर जुवो धार. सु०
पूनमनो दिन कलश स्वरुपे, सोभे मंगलकार. सु०॥सि०॥७॥
ते दिन दादा वृषभ देवनी, यात्रा करीने उदार. सु०
द्राविडने वारिखील्य मुनिनी, प्रतिमा पूजो श्रीकार. सु०सि०॥८॥
शत्रुंजय महातममां सुंदर, ए वृतांत रसाल. सु०
सूरिधनेश्वरनुं फरमाव्युं, वांचो थइ उजमाल. सु०॥सि०॥९॥
तेह धनेश्वर सूरीश्वरनी, मूर्त्ति स्थापन कार. सु०
हंस कहे ते मूर्त्ति पूजो, सिद्धगिरि पर सार. सु०॥सि०॥१०॥
आदि जिन मंडल पूर्णा विधिए, पूर्ण करवा संसार. सु०
प्रति पूनम दिन पूजा भणावे, जिनभुवने जयकार. सु०सि०११॥



पाटणमां वर्तमान जिनमन्दिरो.

देरासर	पोळ	मूळनायकजी
१	अष्टापदजीनी धर्मशाळा	चंद्रप्रभु, अष्टापदजी, सुपार्श्वनाथ आदीश्वर, पांचमेरु
२	खडा खोटडी	ऋषभदेव, शांतिनाथ
२	टांगडीआवाडो	आदीश्वर, पद्मप्रभु, गणधर-पगलां, सिद्धाचलजी, सहस्र-कूट, चोमुखजी शांतिनाथ, मेरु, शिखरजी
२	झवेरीवाडो	नारंगापार्श्वनाथ, आदीश्वर, पार्श्वनाथ, वासुपूज्यजी, वाडीपार्श्वनाथ
२	शाहपाडो	आदीश्वर, शांतिनाथ
२	शाहवाडो	सुपार्श्वनाथ, शामळा पार्श्वनाथ
१	भेंसातपाडो	शांतिनाथ, चंद्रप्रभु, गौतमस्वामी
१	तरभेडावाडो	शांतिनाथ
१	खीजडानो पाडो	आदीश्वर
१	कपूरमहेतानो पाडो	आदीश्वर
२	तंबोळीवाडो	महावीरस्वामी, सुपार्श्वनाथ
२	कुंभारीआपाडो	ऋषभदेव, भटेवा पार्श्वनाथ
२	ढंढेरमहेतानो पाडो	टांकलापार्श्वनाथ, शांतिनाथ
३	मणीआती पाडो	महावीरस्वामी, आदीश्वर, सहस्रकूट
२	सोनीवाडो	महावीरस्वामी, शांतिनाथ

६	फोफळीआवाडो	शांतिनाथ, संखेश्वरजी, मनमोहनजीपार्श्वनाथ, संभवनाथ, मुनिसुव्रतस्वामी, नेमीनाथ
१	जोगीवाडो	शामळा पार्श्वनाथ
१	मलातनो पाडो	मल्लीनाथ
२	लखीआरवाडो	सीमंधरस्वामी, मुनिसुव्रतस्वामी मनमोहन पार्श्वनाथ
१	निशाळ पाडो	सुमतिनाथ
१	केसुशेठनोपाडो	अजितनाथ
३	चोखावटीआनो पाडो	आदीश्वर, धर्मनाथ, शांतिनाथ
१	वळीआ पाडो	आदीश्वर
१	अबजीमेतानो पाडो	शीतलनाथ
२	कसुंबीआवाडो	शीतलनाथ, गोडीपार्श्वनाथ
२	संघवीनो पाडो	विमलनाथ, मनमोहनपार्श्वनाथ
१	वासुपूज्यजीनी खडकी	वासुपूज्यस्वामी
१	खजुरीपाडो	मनमोहनपार्श्वनाथ
१	भाभानो पाडो	भाभापार्श्वनाथ
१	लींबडीपाडो	शांतिनाथ
१	कणासानो पाडो	शीतलनाथ, शांतिनाथ
१	बामणवाडो	शांतिनाथ
५	खेतरवसी	शांतिनाथ, विमलनाथ, आदीश्वर, अजितनाथ, शामला पार्श्वनाथ

१	अदुबसानो पाडो	शांतिनाथ
२	कसावाडो	शांतिनाथ, आदिनाथ
१	पंचोटीपाडो	ऋषभदेव
१	वागोळवाडो	ऋषभदेव
२	घीआ पाडो	शांतिनाथ, कंबोइ पार्श्वनाथ
१	कटकीआवाडो	आदिनाथ
४	तरशेरीओ	शांतिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, महावीरस्वामी,
१	कलारवाडो	शांतिनाथ
१	धांधल	संभवनाथ
१	नारणजीनो पाडो	ऋषभदेव
२	शालीवाडो गोलवाड	गोडीपार्श्वनाथ, वाडीपार्श्वनाथ
२	महालक्ष्मीनो पाडो	मुनिसुव्रतस्वामी, सुमतिनाथ
४	गोदडनो पाडो	आदीश्वर, चंद्रप्रभु, नेमिनाथ चोमुखजी,
२	वखारनो पाडो	चंद्रप्रभु, शांतिनाथ
२	मारफतीआ मेतानो पाडो	मुनिसुव्रतस्वामी, भीडभंजन-पार्श्वनाथ
३	ढंढेरवाडो	कलिकुंड पार्श्वनाथ, शामळा, पार्श्वनाथ, महावीरस्वामी
१	पडीगुंदी	शीतलनाथ
१	खेतरपाळनो पाडो	शीतलनाथ
२	कोकानो पाडो	कोकापार्श्वनाथ, अभिनंदन-स्वामी,

१	कोटावाळानी धर्मशाळा	स्तंभन पार्श्वनाथ
१	पंचासरो	पंचासरा पार्श्वनाथ, नवखंडा-पार्श्वनाथ, धर्मनाथ, महावीर-स्वामी, बे सुपार्श्वनाथ, चिंतामणिजी, अजितनाथ, शांतिनाथ, चोमुखजी, गोडीपार्श्वनाथ, सुमतिनाथ, श्री हेमचंद्राचार्यजी, विजयदानसूरीजी, विजयहीरसूरीजी, विजयसेनसूरीजी विगेरे पूर्वाचार्योनी मूर्त्तिओ.

---

१०० मोटां देरासर

घर देरासर जुदां.

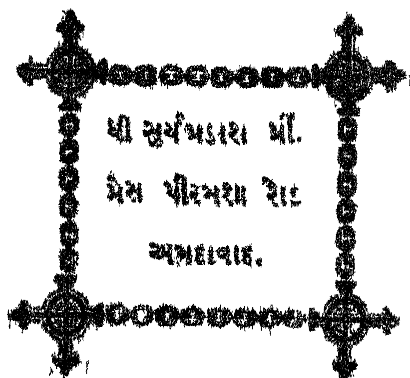


शुद्धिपत्रक.

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	९	पैकोना	पैकीनो
४	१३	आछो	ओछो
५	१	ता	तो
”	७	वैत्र-	चैत्र-
१०	८	७ सात	८ आठ
१२	२०	मलाधरी	मलधारी
१७	१९	घखतथी	वखतथी
२१	१२	जन	जैन
२४	१९	चैत्योनी	चैत्योनां
”	२२	९+९८	९५९८
४१	१५	पाडे	पाडे
४४	८	=	=३५२
४५	५	६ ठा	६ ठो
४८	१२	मालावाडे	मालीवाडे
५८	५	गालहवाडमां	गोलहवाडमां
६३	१८	शखेश्वरनुं	शंखेश्वरनुं
६४	४	भुवनपम-	भुवनप्रभ-
”	६, ९	श्रीविद्यापम-	श्रीविद्याप्रभ-
”	९	ललितपम-	ललितप्रभ-

७९	१८	बिब	बिंब
८०	१	चद्रप्रभा	चंद्रप्रभ
,,	३	चौंद	चौद
८७	१२	विर	वीर
९६	४	जीनवरुए	जिनवरु ए
९७	८	भसात–	भंसात–
९७	२	बिब	बिंब
,,	१३	वदूं	वंदू
९८	१५	शीतलबिंब	शीतळ बिंब
१०१	७	पीतलमे	पीतलमय
,,	९	माहे	मोहे
१०४	१७	साहब सुआ–	साह वसुआ–
१०५	३	चत्य–	चैत्य–
१०६	१३	–णनगुणा–	–जनगणा–
१०७	११	ससार–	संसार–
,,	,,	–निधि–	–निधि–
१०९	१२	–पाश्व	–पार्श्व
१११	६	जिनपति	–जिनपति

आ सिवाय मात्रा रेफ विगेरे खण्डित थवा संबंधी या ऊडी जवा संबंधी अने केटलीक पदच्छेद संबंधा रही गयेली स्खलनाओ सुज्ञ पाठकोए सुधारी वांचवुं.


ધી સુર્યપ્રકાશ પ્રીં.
પ્રેસ પીરમશા રોડ
અમદાવાદ.